कषायों का
उपशम कैसे?

प्रगति के
सोपान

लोकतंत्र के
आदर्शों की सुरक्षा

www.sukhiparivar.com

₹25

समृद्ध सुखी परिवार

नवंबर 2013

अध्यात्म के दीपक से जीवन में उजाला लाएं

घर-परिवार | ज्ञान-विज्ञान | जीवन-दर्शन | अध्यात्म | योग | दिशाबोध | पर्यटन

TANISHK CREATIONS

B-4/1626, RAI BAHADUR ROAD, LUDHIANA - 141 008

Phone No. 0161-2740154, 98142-62392

Mfrs. of PREMIUM RANGE OF GIRLS, LADIES & GENTS NIGHT WEARS

—: SPECIALISTS IN :—

LONG KURTA ❖ 3PC SET ❖ MATERNITY WEAR ❖ JIM WEAR ❖ CAPRI SET & SLEX SUIT

समृद्ध सुखी परिवार

सुखी और समृद्ध परिवार का मुखपत्र

वर्ष : 4 अंक : 10

नवंबर 2013, मूल्य : 25 रु.

व्यक्त से अव्यक्त की ओर

ईश्वर की खोज का मार्ग

तुलसी में दियना जलाए हो माय

5	भगवान को भोग क्यों लगाते हैं?	नरेन्द्र देवांगन
5	अंतरात्मा के खिलाफ काम करना है पाप	थॉमस इक्वेनस
6	कैसी हवा चल रही है	कविता विकास
7	व्यक्त से अव्यक्त की ओर	ब्रह्मा कुमार सुशांत
7	ज्ञानियों की मुलाकात	संत मुरारी बापू
8	प्रेम ही परमेश्वर है	डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी
8	गीत-अगीत	उमा पाठक
9	दौलत दिमाग में होती है तिजोरी में नहीं	डॉ. अमरेश मुनि निराला
10	लोकतंत्र के आदर्शों की सुरक्षा	आचार्य तुलसी
11	ब्रज वृंदावन माधुर्य	ब्रह्मचारी कौशिक चैतन्य
12	सभी मजहबों का भगवान एक ही है	पीठाधीश्वर बैजनाथजी
13	दीपावली पर जुए की परंपरा	शशिभूषण शलभ
14	तिजोरी पर चर्चा	यशवंत कोठारी
15	रूहानी परंपराओं का तालमेल	डॉ. एम. डी. थॉमस
16	क्रोध का सदुपयोग करें	रूपनारायण काबरा
17	प्रगति के सोपान	श्री आनंदमूर्ति
17	सफलता के लिए वास्तु उपाय	डॉ. प्रेम गुप्ता
18	जो सच्चा गुरु है वह उपदेश नहीं देता	श्रीराम शर्मा आचार्य
19	शून्य का अनुभव करना परमानंद को पाने जैसा	प्रेम रावत 'महाराजी'
20	अध्यात्म के दीपक से जीवन में उजाला लाएं	रमेश भाई ओझा
21	वैज्ञानिक ऋषि दयानंद	डॉ. तारा सिंह
21	चंचला से अचला	डॉ. श्याम मनोहर व्यास
22	अंग्रेज लेखक की दृष्टि में निष्काम सेवक हनुमान	बद्री नारायण तिवारी
23	जीवन में अर्थ की महत्ता	आरती जैन-खुशबू जैन
26	दल से राष्ट्र बड़ा है	आचार्य महाश्रमण
27	दीपोत्सव: भगवती लक्ष्मी का समराधन पर्व	अन्नपूर्णा वाजपेयी
28	ईश्वर की खोज का मार्ग	मंजुला जैन
29	हरिहरक्षेत्र मेला सोनपुर: आस्था एवं संस्कृति का केन्द्र	बरुण कुमार सिंह
31	दान से शुद्ध होता है धन	आचार्य विजय नित्यानंद सूरि
33	आंतरिक साज-सज्जा संबंधी वास्तु टिप्स	डिम्पल
34	वैदिक चिंतन में समग्र चेतना के भाव	स्वामी चक्रपाणि
35	ब्लैक-टी से सेहत	अशोक जैन 'पोरवाल'
36	कर्म करने का सबसे श्रेष्ठ माध्यम क्या है	आचार्य शिवेन्द्र नागर
37	'सहजो' सब कुछ ब्रह्म है	डॉ. हरिकृष्ण देवसरे
37	बुद्धि है वरदान	लाजपत राय सभरवाल
38	परमात्मा से मिलन के लिए आत्मिक सुधार जरूरी	आचार्य सुदर्शन
39	तुलसी में दियना जलाए हो माय	प्रो. अश्विनी केशरवानी
40	Delicious Food for the Soul	Sri Sri Ravishankar
40	A Philosophy of Non-duality	Swami Rangnathananda
41	Good Planet, Good Life	Sadhguru Jaggi Vasudev
42	प्रभु की देन को बांटना सीखो	सुधांशुजी महाराज
45	पचमढ़ी: सतपुड़ा पहाड़ियों के बीच प्रकृति का सौंदर्य	पुखराज सेठिया
46	कषायों का उपशम कैसे?	गणि राजेन्द्र विजय

मार्गदर्शक: **गणि राजेन्द्र विजय** संपादक: **ललित गर्ग** (9811051133)

डिजाइन: **कल्पना प्रिंटोग्राफिक्स** (9910406059) वितरण व्यवस्थापक: **बरुण कुमार सिंह** +91-9968126797, 011-29847741, **कार्यालय:** ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25 आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज दिल्ली-110092

फोन: 011-22727486, **E-mail: lalitgarg11@gmail.com**

शुल्क: वार्षिक: 300 रु., दस वर्षीय: 2100 रु., पंद्रह वर्षीय: 3100 रु.

Published, Printed, Edited and owned by Lalit Garg from E-253, Saraswati Kunj Appartment, 25 I.P. Extn. Patparganj, Delhi-110092. Printed at : Bookman Printers, A-121, Vikas Marg, Shakarpur, Delhi-110092. Editor : Lalit Garg

संपादकीय

आदर्श राजनीति का संकल्प हो

दीपावली की अगवानी को तत्पर होकर जब मैं देश की वर्तमान स्थितियों पर चिंतन करने लगा तो सामने आई भुखमरी, महंगाई और लालू की चारा लुटाई। खुद को उभरती हुई आर्थिक एवं लोकतांत्रिक शक्ति मानकर गर्व करने वाले भारत के लिए ये तीनों शब्द शर्मनाक है, अंधत्व के प्रतीक हैं। ऐसा अंधत्व हमें अंधेरे का वह शाप देता है जो हमें एक बर्बर युग के उदाहरण की तरह प्रस्तुत करता है। गलत काम करना एक अपराध है पर उतना ही बड़ा अपराध गलत को गलत न मानना है।

'दीये तले अंधेरा' की कहावत वर्तमान सरकारों के दोहरेपन पर एक करारा व्यंग्य है। देखने, सुनने, कहने और करने में आज हम विकास की ओर अग्रसर देश हैं। जबकि भुखमरी और महंगाई वर्तमान की ऐसी त्रासदियां हैं जो हमारे विकास का मजाक उड़ाती हुई प्रतीत हो रही हैं, भुखमरी का खिताब और महंगाई का ताज सरकारें स्वीकार नहीं कर पा रही है। क्योंकि इनकी स्वीकृति सरकारों के नाकामी एवं नक्कारेपन की प्रतीक है। मामला स्वीकृति और अस्वीकृति का नहीं है, मामला उस खतरनाक और संक्रामक रोग से ग्रस्त परम्परा का है, जो हमारी राजनीति और हमारे समाज को घुन की तरह खाये जा रही है। राजनीति को ऐसे तत्वों से बचाने का कोई रास्ता खोजना ही होगा।

हाल ही में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में भुखमरी के शिकार जितने लोग हैं उनमें से एक चौथाई सिर्फ भारत में हैं। भुखमरी के मामले में हमारे हालात पाकिस्तान और बांग्लादेश जैसे मुल्कों से भी ज्यादा खराब है। हमारे देश को अलार्मिंग कैटिगरी में रखा है। आपको अवगत हो इस सूची में भयानक गरीबी झेलने वाले इथोपिया, सूडान, कांगों, नाइजर, चाड और दूसरे अफ्रीकी देश शामिल हैं। हैरतअंगेज तथ्य यह है कि देश में 5 साल से कम उम्र के 40 प्रतिशत बच्चे अब भी कुपोषित हैं।

भुखमरी के बाद जिस बड़ी समस्या से देश की अधिसंख्य जनसंख्या रू-ब-रू हो रही है वह है बढ़ती महंगाई। महंगाई सात माह के रिकार्ड स्तर पर पहुंचकर रुकने का नाम नहीं ले रही है। पिछले पांच साल से लगातार कहा जा रहा है कि महंगाई पर नियंत्रण के लिए व्यापक प्रयास किये जा रहे हैं। महंगाई के बड़ी वजह सरकारी घाटे का ऊंचा रहना है। इसका अर्थ यह है कि सरकार की जितनी आय है उससे ज्यादा खर्च वह कर्ज लेकर कर रही है। चाहे सरकार की फिजूलखर्ची हो या निजी क्षेत्र की मुनाफाखोरी, उससे अर्थव्यवस्था में अनुत्पादक पैसा बढ़ता है और उससे महंगाई लगातार ऊंची बनी रहती है। इन वर्षों में सरकारों ने आम आदमी पर तरह-तरह के टैक्स लगाकर उसकी कमर वैसे ही तोड़ रखी है ऊपर से महंगाई का भूत उसे डराता रहता है। यह सरकार की नाकामी का ही उदाहरण है।

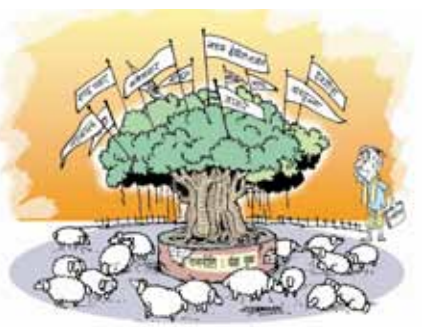

इधर लालू यादव को चारा घोटाले के मामले में जेल भेज दिया गया है। भारत के राजनीतिक इतिहास की यह संभवत: पहली और बड़ी घटना है जब किसी राज्य के दो मुख्यमंत्रियों को एक साथ भ्रष्टाचार के आरोप में सजा मिली है। चारा घोटाला एवं लालू यादव को सजा भारतीय राजनीति के विडम्बनाओं का प्रतीक है। सामाजिक न्याय का पुरोधा कहे जाने वाले बिहार के शीर्ष राजनीतिक पुरुष का यह हश्र उन्हें क्षरित मूल्यों का पुरोधा बना गया। लालू के उत्थान से पतन की यह गाथा भारतीय राजनीति की ऐसी त्रासदी है कि जिसके वर्णन के लिए शब्द मुश्किल से मिलेंगे। फिर भी यह राष्ट्रीय लज्जा का ऊंचा कुतुबमीनार है। लालू की राजनीति चारे की चतुराई नहीं काजल की कोठरी साबित हुई है। यह सब मात्र भ्रष्टाचार ही नहीं, यह राजनीति की पूरी प्रक्रिया का अपराधीकरण है।

कितना जमाना बदल गया। कितने बदल गये जिंदगी के अच्छे-बुरे चरित्र के मानक! अंधेरों में पाप पलते हैं, उजालों में सच्चरित्रता के खिताब लिये हुए घूमते हैं। आखिर इस 'दीये तले अंधेरे' को कौन, कैसे मिटा पाए? कथनी और करनी की समानता कैसे आ पाए?

आज भी प्रश्न ज्यों का त्यों खड़ा है हमारे सामने की राजमहलों से झोपड़ी तक दीपों की कतारें जगमगा रही हैं फिर भी अंधियारों का यह शोर कैसा? क्या दीया हमसे यह नहीं पूछ रहा है कि आकांक्षा छत पर चढ़ने की है तो हम सीढ़ियों के निचले पायदान पर क्यों खड़े हैं?

निकट भविष्य में पांच राज्यों में चुनाव होना सुनिश्चित हुआ है और उसकी तैयारियां व्यापक स्तर पर की जा रही हैं। इन चुनावों के संदर्भ में लालू को सुनायी गई सजा के परिप्रेक्ष्य में राजनीति में उम्मीदवारी के लिए पात्रता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। यह अपने आप में कोई कम अजूबा नहीं है या वर्तमान की राजनीति की विडम्बना है कि भले ही आपके खिलाफ कितने ही गंभीर आरोप क्यों न हो, भले ही आपके खिलाफ बीसों मुकदमें क्यों न चल रहे हों आपका चुनाव लड़ने का और मंत्री बनने का अधिकार सुरक्षित है। मजे की बात यह है कि अपने दागियों को दूसरे के दागियों से कम दागदार समझने वाली हमारी राजनीतिक संस्कृति में चेहरों की कालिख राजनीतिक स्वार्थों के संदर्भ में समझी-समझायी जाती है।

राजनीति के अपराधीकरण और अपराध के राजनीतिकरण से उत्पन्न स्थितियों के खतरों से उबरने के लिए जिस संकल्प की आवश्यकता है, वह दुर्भाग्य से आज हमारे पास नहीं है। लेकिन जरूरी है ऐसा संकल्प। राजनेताओं और राजनीतिक दलों को उनके स्वार्थ राजनीति को संवारने और मानवीय चेहरा देने का यह काम नहीं करने देंगे। इसके लिए सामाजिक जागरूकता की एक आंधी उठाने की आवश्यकता है। राजनीति भले ही विवश हो दागी तत्वों का सहयोग लेने के लिए, पर मतदाता किसी भी रूप में ऐसे तत्वों को सहयोग देने के लिए विवश नहीं है। लेकिन मतदाता को उसकी शक्ति और कर्तव्य का अहसास दिलाना जरूरी है। संसद में दूसरों के दागियों के खिलाफ हल्ला मचाने से किसी का राजनीतिक स्वार्थ भले ही सधता हो, पर देश का हित दागी राजनीति के खिलाफ आंदोलन छेड़ने में है। इस आंदोलन में उस हर नागरिक की हिस्सेदारी जरूरी है, जो स्वयं को जागरूक, विवेकशील और देश तथा समाज के प्रति निष्ठावान मानता है। आप मानते हैं स्वयं को ऐसा नागरिक? यदि हां, तो अपने स्तर पर ऐसी सोच को पैदा करें जिससे लोकतंत्र को शुद्ध सांसे मिले।

भगवान को भोग क्यों लगाते हैं ?

नरेन्द्र देवांगन

भारतीय संस्कृति की प्राचीन परंपरा है भोजन से पहले भगवान को भोग लगाने की। भोग लगाने के भाव में जाएं, तो यह कहा जा सकता है कि यह एक प्रकार से ईश्वर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं जो तुम्हारे पास है, उसे तुम भक्तिपूर्वक समर्पित करो, मैं तुम्हारे द्वारा समर्पित वस्तु को स्वीकार करूंगा।

मनुष्य के लिए जीवन चलाने वाली यह वस्तु किसी चमत्कार से कम नहीं। भोजन जिस तरह मनुष्य के पास पहुंचता है, उसमें भी भगवान की अनुकंपा होती है। कम से कम ईश्वर पर विश्वास करने वाला व्यक्ति तो इस बात को अच्छी तरह समझता ही है। लोग यह जानते हैं कि भगवान कभी भोग ग्रहण करने नहीं आते, न प्रत्यक्ष और न अप्रत्यक्ष, फिर भी उनका विश्वास है कि वे भगवान को खिला रहे हैं। भगवान अन्न का भूखा नहीं, भाव का भूखा है।

मनुष्य सुख-शांति प्राप्ति तथा अपने विकास के लिए सदा प्रयासरत रहा है। इसके लिए जो प्रयास उसकी सामर्थ्य के अनुकूल हैं, वह तो करता ही है, किंतु कुछ ऐसे भी उपाय हैं, जो उसकी सामर्थ्य से बाहर हैं। इनके लिए वह अदृश्य सामर्थ्यवान शक्ति से सहयोग लेने का प्रयास करता है।

यज्ञ, हवन, पूजा और अन्न ग्रहण करने से पहले भगवान को नैवेद्य एवं भोग अर्पण की शुरुआत यहीं से है। 'शतपत ब्राह्मण' ग्रंथ में यज्ञ को साक्षात भगवान का स्वरूप कहा गया है। यज्ञ में यजमान सर्वश्रेष्ठ वस्तुएं हविरूप से अर्पण कर देव का आशीर्वाद प्राप्त करना चाहता है कि जीवन रूपी अन्न उसे मिलता रहे। शास्त्रों में विधान है कि यज्ञ में भोजन पहले दूसरों को खिलाकर यजमान करेंगे। वेदों के अनुसार यज्ञ में हविष्यान्न और नैवेद्य समर्पित करने से व्यक्ति देव ऋण से मुक्त होता है। प्राचीन समय में यह नैवेद्य (भोग) अग्नि में आहुति रूप में ही दिया जाता था। आज यह प्रक्रिया सरल हो गई और व्यक्ति नैवेद्य पर जल छिड़क कर आंखें बंद कर नैवेद्य अर्पण करता है। हालांकि आज भी विशेष पर्वोत्सव पर आने वाले शास्त्रज्ञ, पंडित अग्नि पर मंत्रोपचार के साथ नैवेद्य अर्पण करने के बाद ही भोजन करते हैं।

भोग लगाने के लिए भोजन एवं जल पहले अग्नि के समक्ष रखें। फिर देवों का आह्वान करने के लिए जल छिड़कें। तैयार सभी व्यंजनों से थोड़ा-थोड़ा हिस्सा अग्नि देव को मंत्रोच्चार के साथ स्मरण कर समर्पित करें। अंत में देव आचमन के लिए मंत्रोच्चार से पुन: जल छिड़कें और हाथ जोड़ कर नमन करें। दैनिक भोजनचर्या में भोग लगाने के लिए अग्नि देव की व्यवस्था संभव नहीं हो पाती। इसमें देव आह्वान, स्मरण मंत्र तथा आचमन क्रिया के साथ भोग थाली में ही रख दिया जाता है। भोजन के अंत में भोग का यह अंश गाय को दिया जाना चाहिए।

–नरेन्द्र फोटो कॉपी
पो. खरोरा-493225,
जिला-रायपुर(छत्तीसगढ़)

अंतरात्मा के खिलाफ काम करना है पाप

थॉमस इक्वेनस

संट थॉमस इक्वेनस 13वीं सदी के महान आध्यात्मिक विचारकों में से थे। कैथलिक चर्च के पादरी थॉमस का ईसाई धर्म पर जबर्दस्त असर रहा है। उनका जन्म 1225 में हुआ। उनके नाम के साथ लगा इक्वेनस उनका उपनाम नहीं है, बल्कि उस जगह का संकेत है जहां उनका जन्म हुआ। नेचुरल थिऑलजी का विचार उन्हीं की देन माना जाता है। 1274 में उन्होंने देह त्याग दी।

- आस्था का संबंध उन चीजों से है, जिन्हें हम देख नहीं पाते और आशा का संबंध उन चीजों से है, जो हमारे हाथ में नहीं हैं।
- मिल-जुलकर रहने के लिए सबसे पहले हमें यह जानने की जरूरत है कि हम सभी एक ही ईश्वर से प्रेम करते हैं।
- हम जिन चीजों को प्यार करते हैं, उनसे ही तय होता है कि हम क्या हैं? मुक्ति पाने के लिए इंसान के पास तीन चीजों का होना जरूरी है। उसे जानना चाहिए कि उसे किन चीजों में भरोसा करना है, उसे यह भी जानना जरूरी है कि उसे किन चीजों की इच्छा करनी चाहिए और यह भी कि उसे क्या करना चाहिए।
- जो आस्थावान हैं, उन्हें किसी व्याख्या की जरूरत नहीं हैं और जो आस्थावान नहीं है, उनके लिए कोई व्याख्या मुमकिन नहीं।
- हर इंसान अलग-अलग हालात में जीता है। इसी के चलते कुछ काम जो किसी एक के लिए अच्छे और पुण्य के हो सकते हैं, वही काम दूसरे शख्स के लिए अनैतिक और गलत हो सकते हैं।
- अंतरात्मा का कोई भी फैसला चाहे सही हो या गलत, जरूरत मानना चाहिए। अंतरात्मा के खिलाफ जो भी काम किया जाता है, वह पाप है।

कैसी हवा चल रही है

कविता विकास

सीएनएन पर प्रसारित मिशेला के भारत भ्रमण की जुबानी दिल को छू जाने वाली घटना है। वही मिशेला जो स्टडी टूर में तीन महीने के लिए भारत आयी और उसे यौन हिंसा का शिकार होना पड़ा जिसके फलस्वरूप उसे मानसिक आघात भी सहना पड़ा, आश्चर्य है, उस देश की धरती जिसने 'अतिथि देवो भव' का नारा बुलंद किया, उसके लिए यह काला धब्बा क्या कभी मिट सकेगा? इव टीजिंग और गन्दी फब्तियां कसना और उसके बाहर निकलने पर ऊपर से नीचे स्कैन करती हुई कई जोड़ी आंखें भारतीय संस्कृति की उस पृष्ठ का पुरजोर विरोध करती हैं जिसमे औरतों को देवी का दर्जा दिया गया है। दिल्ली की दामिनी एपिसोड के बाद का कानून संशोधन अगर अब तक लागू हो गया होता तो अखबार की सुर्खियों में बलात्कार छाया नहीं रहता।

ऐसे अत्याचारों में उम्र की कोई सीमा नहीं होती है। भला सोचिये ढाई-तीन साल की फूल सी बच्चियों के साथ बलात्कार करने वाले शख्स क्या इंसान की श्रेणी में आते हैं? वह तो वही सिरफिरा होगा जिसके लिए कामवासना पेट की आग बुझाने वाला साधन होगा। पिछले दिनों सत्तर साल की एक महिला के साथ भी रेप हुआ जो पहले से ही कैंसर पीड़ित थी और इस घटना ने तो उसे मानसिक रूप से विक्षिप्त बना दिया। डॉक्टर, पुलिस और कुछ संस्थान जिनके कार्यों में सेवा-भाव का विशेष स्थान है उनके पास जाने से लोग कतराते हैं। ऋषियों और संतों के पास लोग अपनी परेशानी का हल ढूंढने जाते हैं, पर अब वो भी सवालों के घेरे में हैं। अजीब-सी हवा चल गयी है। इन दुष्कर्मों के तह में जाएं तो पायेंगे कि समाज में व्याप्त गहरी असमानता और भेदभाव ही इसके कारण है। वैदिक काल से ही महिलाओं का कार्यक्षेत्र घर की चारदीवारी रही है और पुरुषों का कार्य बाहर जाकर पैसे कमाना। स्वछन्द पुरुषों की मानसिकता भी स्वछन्द होती गयी जबकि स्त्रियों के पर तो उसी समय काट दिए जाते हैं जब वह उड़ने का ख्वाब देखना शुरू करती हैं। भारतीय सामाजिक संरचना में पुरुषों का श्रेष्ठ होना कतई ही महिलाओं का सशक्तिकरण बर्दाश्त नहीं कर सकता है। पारिवारिक-सामुदायिक स्तर पर महिलाओं की निर्णय लेने की शक्ति मजबूत होगी तो पुरुषों की भूमिका कम हो जायेगी, ऐसी विचारधारा उन्हें हिंसा का रास्ता अख्तियार करने पर मजबूर करती है। एक समग्र कानून बनाने के साथ उसका अनुपालन भी जरूरी है। न्यायपालिका को व्यक्ति विशेष और उनके स्टेटस से कोई वास्ता नहीं होना चाहिए। अपराधियों को अविलम्ब गिरफ्तार कर कड़ी सजा देनी होगी। साथ ही महिला-पुरुष पुलिस को भी इन बदलावों और उनके अनुरूप ट्रेनिंग देनी होगी जिसमे संवेदनशील बनने का भी पाठ हो। उच्चतम न्यायालय के हालिया निर्णय में यौन उत्पीड़ित को आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव है। खासकर अगर वो निर्धन परिवार से हैं तो यह राशि भी अधिकतम होती है, पर अपने हर निर्णय के लिए पुरुष पर आश्रित इन महिलाओं को क्या मुआवजे की राशि अपने ऊपर खर्च करने की आजादी होगी? प्रशासन को इसमें कड़ा रवैया अपनाना होगा और अपराधी चाहे किसी वर्ग का हो, रियायत नहीं देनी होगी।

नैतिक मूल्यों का निरंतर पतन हो रहा है। पाठ्यक्रम में ऐसे पाठों का अभाव हो रहा है जिनमे माता-पिता, बहन-भाई आदि के रिश्तों की प्रमुखता रहे। पिछले दिनों अखबार में ही एक माँ ने लिखा था कि उसकी छह साल की बच्ची स्कूल में स्कर्ट के नीचे शार्ट्स पहनना चाहती है क्योंकि उसके क्लास में बच्चे उसे नीचे से ऊपर घूरते हैं। भला बताएं छह साल की बच्ची को घूरने वाली नजर की मानसिकता पता है और वो हम उम्र लड़के क्या उन्हें पता है कि घूरा कब और क्यों जाता है? टीवी सीरियल, सिनेमा एवं विज्ञापन के चित्र और इंटरनेट की पहुंच ने हमारी जीवनशैली को खूब प्रभावित किया है। बच्चे बिना बचपन को भोगे व्यस्क हो गए हैं। इसलिए किशोर बच्चों के माता-पिता की नींद उड़ गयी है।

नितांत आवश्यक है कि दुष्कर्म की शिकार महिलाओं को समाज प्यार से अपनाएं। टीसिंग और कमेंट्स पर बने नवनिर्मित कानून की शुरुआत जल्द हो। इनमे देरी होने का मतलब है अपराधियों का स्थान कानून से ऊपर होना। कुछ समय पहले कन्या भ्रूण को बचाने की देश भर में एक मुहिम फैली थी। पर बच्चियों के पेरेंट्स से पूछ कर देखें कि वो उनकी सुरक्षा लेकर कितने तनावग्रस्त रहते हैं। कहीं ऐसा न हो कि बेटी के जन्म को लेकर फिर से सवाल उठने लगे और कन्या भ्रूण फिर कचरे के ढेरे में पड़ा मिलने लगे।

–डी-15, सेक्टर-9, पो. कोयलानगर
जिला-धनबाद- 826005 (झारखण्ड)

व्यक्त से अव्यक्त की ओर

ब्रह्मा कुमार सुशांत

व्यक्ति जब जन्म लेता है तब वह अव्यक्त से व्यक्त में आता है। जब वह मृत्यु को प्राप्त करता है तो पुनः व्यक्त से अव्यक्त बन जाता है। जाग्रत अवस्था में मनुष्य व्यक्त में रहता है, जबकि निद्रा व स्वप्न अवस्था में वह स्थूल कर्मेन्द्रियों से परे चला जाता है। यह भी लगभग अव्यक्त वाली ही स्थिति है।

पश्चिम के कुछ वैज्ञानिक दावा करते हैं कि उन्होंने मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में कई खोज की हैं। कुछ लोग मृत्यु के बाद अपने शरीर में पुनः प्रवेश करने का और प्रवेश करने से पहले अपने छायारूपी सूक्ष्म शरीर को देखने का अनोखा अनुभव वर्णन करते हैं।

हमारे देश में भी प्राचीन ऋषि-मुनि और योगीजन शरीर से मुक्त होकर चेतना जगत में प्रवेश करने की बात करते रहे हैं। उस अलौकिक जगत में उनका स्थूल शरीर नहीं जाता था- सिर्फ मन, आत्मा, चेतना या सूक्ष्म व्यक्तित्व ही वहां तक पहुंच सकता था। यह अवस्था वे विभिन्न योग क्रियाओं या तंत्र-मंत्र द्वारा प्राप्त करते थे।

अब प्रश्न उठता है कि मृत्यु के बाद या स्वप्न की अवस्था में या यौगिक साधना द्वारा मनुष्य को जिस छायारूपी काया का अर्थात अव्यक्त अवस्था का एहसास होता है, क्या अन्यथा जीवित एवं जागृत स्थिति में भी उसका अनुभव किया जा सकता है? अगर ऐसा संभव हो तो उसका सहज और सरल उपाय क्या है? और मनुष्यों को अपने व्यावहारिक जीवन में उस अवस्था से क्या लाभ है?

मूल रूप में व्यक्ति का अस्तित्व अथवा व्यक्तित्व तीन स्तरों पर कार्यशील रहता है। एक स्थूल शरीर है, जो मांस-मज्जा और अस्थियों से निर्मित है। दूसरा व्यक्तित्व उसके मन-मस्तिष्क और विवेक वाला है, जो स्थूल शरीर पर ही आधारित है। जो हमारे जाग्रत होने पर, सक्रिय रहने पर ही हमारे साथ होता है।

व्यक्तित्व के तीसरा स्तर सूक्ष्मातिसूक्ष्म किसी चेतन ज्योति बिंदु की तरह विद्यमान रहता है, जिसको आत्मा, रूह या स्पिरिट कहा जाता है। जब तक अपनी सूक्ष्म काया के साथ यह हमारे स्थूल शरीर में निवास करता है, तब तक हमारा स्थूल शरीर जीवित रहता है, जब यह ज्योति बिंदु अपने सूक्ष्म शरीर के साथ हमारे स्थूल शरीर से बाहर निकल आता है, स्थूल शरीर मृत हो जाता है।

यह सूक्ष्म शरीर और आत्मा अव्यक्त है। हम उसके अस्तित्व को अपनी इंद्रियों के माध्यम से नहीं जान सकते, लेकिन वही चेतन ज्योतिर्बिंदु आत्मा मनुष्य के व्यक्तित्व और जीवन का केंद्रबिन्दु है। वही व्यक्ति की समस्त चेतना, आचार-विचार-व्यवहार, मन, बुद्धि एवं संस्कारों का प्रेरक और चालक है। आत्मा में अंतर्निहित ज्ञान, गुण एवं शक्तियों की अभिवृद्धि से व्यक्ति ज्ञानी, शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बनता है।

निराकारी चेतन ज्योतिर्बिंदु आत्मा का मूल गण व धर्म ही शांति, प्रेम, पवित्रता, आनंद और ज्ञान है। इस निराकारी आत्मा का नियमित मनन-चिंतन एवं अनुभूति ही व्यक्ति के मन, बुद्धि और संस्कार आदि को संतुलित एवं सुखदायी बनाती है। ●

ज्ञानियों की मुलाकात

संत मुरारी बापू

इस दुनिया में मुलाकातें तीन ही मानी जाती हैं या तो दो ज्ञानियों का मिलन, या तो दो अज्ञानियों का मिलन या फिर एक अज्ञानी और एक ज्ञानी का मिलन। और इनमें भी दो ज्ञानियों का मिलन महत्व का नहीं है, जरा भी महत्व का नहीं है। आपको जरा विचित्र-सा लगेगा। और दो अज्ञानियों का मिलन तो महत्व का है ही नहीं। मिलन तो वह है एक जिज्ञासा करे और दूसरा बोले।

फरीद और कबीर मिले थे तो क्या हुआ? फरीद और उनके पास पचास शिष्य काशी के पास से निकले। तो शिष्यों ने जिद की फरीद के सामने कि कबीर से मिलें। आप दोनों इतने बड़े संत मिल जायेंगे तो हमको कितना मिलेगा। तो फरीद ने कहा कि मिलने में मुझे कोई तकलीफ नहीं है लेकिन चर्चा हो कि न हो मैं कुछ कह नहीं सकता हूं। यहां कबीर को सबने कहा कि फरीद निकल रहे हैं, हम उनको बुलाएं? कबीर ने पूछा-''क्यूं?'' शिष्य बोले- ''आप दोनों महात्मा बैठेंगे तो कैसी चर्चा होगी।'' कबीर बोले-''बुलाओ जरूर, हम आदर करेंगे लेकिन चर्चा हो कि न हो मैं कह नहीं सकता।''

दोनों के शिष्यों ने दोनों को मिलवा दिया। तीन दिन दोनों बैठे रहे। आमने-सामने। देखते रहे। शिष्य हैरान हो गए कि न खाना, न चाय-पानी, न सोना, यह कैसा सत्संग। तीन दिन ऐसे ही बैठे रहे। कभी फरीद कबीर के सामने देखते, कभी कबीर फरीद के सामने। कभी कबीर की आंख में आंसू आएं, कभी फरीद की आंख में। कभी फरीद मुस्कराएं तो कभी कबीर मुस्कराएं।

शिष्य कहते हैं कि कमाल है। हमने क्यूं ये मुलाकात करवाई? और तीन दिन के बाद जब चलते हैं तो शिष्य मंडल बड़े नाराज। कबीर के शिष्यों ने कहा कि बाबा, इसलिए मुलाकात करवाई थी कि तीन दिन का अनशन करवा दो? न कोई चर्चा, न कोई सत्संग। कबीर ने कहा- ''मैंने पहले ही कहा था कि कोई अवकाश नहीं है चर्चा का।'' तो पूछा कि क्यों नहीं है? बोले- ''जो मैं जानता था वही फरीद जानता था, फिर क्या बोलें?'' फरीद के शिष्यों ने फरीद से पूछा तो उन्होंने भी यही जवाब दिया। ●

प्रेम ही परमेश्वर है

डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी

प्रेम आत्मा की सच्ची अभिव्यक्ति है। नारद भक्ति सूत्र में 'स: हि अनिर्वचनीयो प्रेम रूप:' कहकर परमेश्वर को प्रेम रूप घोषित किया है। यही परम तत्व है। इसी का बोध होने में ज्ञान की सार्थकता है। प्रेम आत्मा की विशेषता है। कबीर कहते हैं 'ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होय।' अर्थात ढाई अक्षरों में ही निहित प्रेम के इस तत्व को प्राप्त कर लेने में ही पाण्डित्य की सार्थकता है। इसमें ऐसा कौन सा तत्व निहित है, जिसे जानने से सब कुछ जान लिया जाता है? सामान्य तौर पर सभी यह कहते हैं कि अमुक को बच्चों से प्रेम है, मां से या पत्नी से प्रेम है। इस सबसे कोई और श्रेष्ठ दूसरा प्रेम है क्या? इस विषय पर चिंतन करने से ज्ञात होता है कि पत्नी-बच्चों से किया जानेवाला प्रेम, प्रेम नहीं मोह होता है। इस प्रेम और मोह में विरोधाभास जैसी स्थिति है। यदि प्रेम को काया कहा जाए, तो मोह को छाया कहा जाना उचित होगा। दोनों में अंतर भी वही होता है, जो काया और छाया में है। एक सजीव है तो दूसरी निष्प्राण। छाया को देखकर सजीवता का भ्रम होना संभव है, पर उससे काया का प्रयोजन पूरा नहीं हो पाता। प्रेम चेतन से होता है और मोह जड़ से। पत्नी आदि से किया जाने वाला तथाकथित 'प्रेम' उसके रूप लावण्यमय जड़ शरीर से होता है न कि चेतन स्वरूप आत्मा से, अतएव यह मोह ही है। इसकी जड़ की ओर उन्मुखता मात्र हाड़-मांस वाले शरीरधारियों तक ही सीमित नहीं

रहती, वरन लकड़ी, पत्थर व चूने के बने भवन से लेकर विभिन्न प्रकार के सामानों तक बढ़ जाती है, पर इसके विस्तार का क्षेत्र जड़ ही है। महर्षि याज्ञवल्क्य स्पष्ट करते हैं कि पत्नी-पत्नी होने के कारण नहीं, अपितु आत्मा के कारण प्रिय हो, यही प्रेम की सच्ची परिभाषा है। गीता के अनुसार 'यो मयि पश्यति सर्वत्र सर्व च मयि पश्यति' के कारण है। सर्वत्र व्याप्त चेतन तत्व के कारण वह 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की स्थिति में रहता है। मोह जहां विभेद उत्पन्न करता है, प्रेम वहीं अभेद की स्थिति पैदा करता है, प्रेम व्यापक तत्व है, जबकि मोह सीमित-परिमित। प्रेम का प्रारंभ संभव है किसी एक व्यक्ति से हो, पर उस तक सीमित नहीं रह सकता। यदि यह सीमित रह जाता है, कुछ पाने की कामना रखता है, तो समझना चाहिए कि यह मोह है। प्रेम में तो पाने की नहीं, देने की उमंग रहती है, जबकि मोह में लेने की स्वार्थपरता-संकीर्णता ही पनपती है। इसमें अनुदान की नहीं, प्रतिदान की अपेक्षा रहती है। प्रेम वस्तुओं से जुड़कर सदुपयोग की, मनुष्यों से जुड़कर उनके कल्याण की और विश्व से जुड़कर परमार्थ की बात सोचता है। मोह में मनुष्य, पदार्थ, विश्व से किसी न किसी प्रकार के स्वार्थ सिद्धि की अभिलाषा रहती है। जिसके प्रति मोह रहता है, मात्र उसे ही अपनी इच्छानुसार चलाने उठाने की आगे बढ़ाने की वह बात सोचता है।

प्रेम तो गंगा जल की भांति पवित्र व निश्चल है, जिसे जहां भी डाला जाए पवित्रता ही उत्पन्न करता है। उसमें आदर्शों की अविच्छिन्नता जुड़ी रहती है। विवेकशीलता, सहृदयता, पवित्रता, सदाशयता जैसे गुण इसमें समाए रहते हैं। प्रेमी जिससे भी प्रेम करता है, उसमें इन गुणों के अभिवर्धन के लिए सतत प्रयत्नशील रहता है। प्रेम की ज्योति सामान्य दीपक की ज्योति नहीं, जिसमें अनुताप हो, अपितु यह दिव्य चिंतामणि की शीतल स्निग्ध ज्योति है, जिससे शरीर, मन, बुद्धि, अंत:करण प्रकाशित होते व समस्त संताप शांत होते हैं।

–86/323, देवनगर, कानपुर-208003

गीत-अगीत

उमा पाठक

गीत-अगीत कौन सुंदर है- दिनकर की इस छोटी-सी कविता में गहरा प्रश्न छिपा है। अभिव्यक्ति दो प्रकार की होती है-मुखर और मौन, इनमें कौन-सी अधिक प्रभावशाली माननी चाहिए? संगीत में बहुत क्षमता होती है। छोटे से बच्चे की खीझ, रोना सब गीत की लय से काबू में आ जाते हैं। डॉक्टरों का कहना है कि धीमे, मधुर संगीत से हमारा रक्तचाप संतुलित रहता है, दर्द, चिंता और तनाव से मुक्ति मिलती है।

प्रकृति के कण-कण में संगीत और लय भरी हुई है। कल-कल बहती नदी हो या पत्तों में से सरसराती गुजरती हवा सभी कुछ गाते हुए से लगते हैं। पक्षियों का कलरव अपने भावों को व्यक्त करता है। कोयल की कूक विरहिणी को आकुल करती है तो कौए की कांव-कांव प्रिय के आने का आश्वासन देती है। सामाजिक, सांस्कृतिक पर्व और त्योहार गीतों के बिना फीके लगते हैं। वही संगीत जब उस परमशक्ति को समर्पित होता है, तो आत्मा की आवाज बन कर परमात्मा को भी भक्त के सामने विवश कर देता है। शायद इसीलिए प्रत्येक धर्म प्रभु तक पहुंचने के लिए भजनों का सहारा लेता है।

अगीत गीत का विपरीत शब्द है। गीत मुखर अभिव्यक्ति है तो अगीत मौन। गरजती हुई बिजली का दु:ख क्या मृत्यु की भयावहता से ग्रस्त फूल के दर्द से ज्यादा है, जो मौन भाव से अंत की प्रतीक्षा करता है? बसंत के आने की सूचना देने वाले तोते का गीत क्या उस तोती की खुशी से बढ़कर है, जो अंडे को सेने के कारण घोंसले से बहार आकर उसके साथ तान नहीं मिलाती? क्या प्रेम जताने के लिए ऊंचे स्वर में गीत गाना जरूरी है? कई बार मुखर अभिव्यक्ति से मौन अभिव्यक्ति ज्यादा भावपूर्ण और समर्थ होती है। धर्म में मौन साधना का गहरा महत्व माना गया है। अब मूल प्रश्न पर वापिस आने से

जवाब यही होगा कि अभिव्यक्ति के दोनों रूप पूर्णत: भिन्न होते हुए भी सुंदर हैं। ●

दौलत दिमाग में होती है तिजोरी में नहीं

इतिहास साक्षी है कि इंसान ने जब–जब भी कुछ कर लेने की ठानी है उसे वांछित सफलताएं मिली हैं।

डॉ. अमरेश मुनि निराला

मजदूर से ज्यादा खून-पसीना तो कोई एक कर नहीं सकता मगर मैंने कभी किसी मजदूर को दौलतमंद बनते नहीं देखा बल्कि उन्हें दो जून रोटी के लिए दौलतमंदों के तलवे चाटते ही पाया। ऐसे में दौलत कमाने के लिए मेहनत को प्रमुखता देने की बात नहीं मान पाया। किसी ने कहा कि पैसा बुद्धि से कमाया जाता है तो मैंने आस-पास सबसे बुद्धिमान लोगों को परखा। मुझे प्रबुद्ध लोगों में सर्वाधिक ज्ञानी और बुद्धिमान लोग अध्यापक और प्राध्यापक लगे। डॉक्टर, इंजीनियर लगे लेकिन उनमें से भी मैंने किसी को टाटा, बिड़ला, मित्तल या अंबानी जैसा सफल उद्योगपति नहीं पाया। साफ हो गया कि दौलत कमाने में मेहनत और बुद्धि से ज्यादा और भी प्रयुक्त होता है।

यहां मैं आपको एक कल्पना के माध्यम से जोड़ना चाहूंगा। मान लें आप जंगल में हैं और आपको प्यास लग रही है। क्या करें आप? पानी की तलाश में इधर-उधर खोज करेंगे या खामोश होकर जंगल पार करते रहेंगे। निश्चित रूप से आप पानी तलाशेंगे। आपका पूरा विवेक, चातुर्य, क्षमता, योग्यता पानी तलाशने में जुट जायेंगे। आप तय कर लेंगे कि पानी तो ढूंढना ही होगा। दावा है कि आप पानी ढूंढ ही निकालेंगे। दूसरी ओर यदि आप अकर्मण्यता धारण कर लेंगे तो आपको पानी के लिए प्यासा ही मरना पड़ेगा। जो स्थितियों को तोड़ने की अकुलाहट रखते हैं। जिनमें अकुलाहट होगी वे स्थितियों को तोड़ने की ताकत तो खुद-ब-खुद बटोर ही लेंगे।

आप यदि मजदूर से मालिक होना चाहते हैं तो आपको यह तो तय करना ही पड़ेगा कि मजदूरी करना आपकी विवशता है और इस विवशता को तोड़ने के लिए आपको पूरी ताकत झोंक देनी पड़ेगी। मजदूर मानसिकता के खिलाफ मुट्ठी तानने की पहल तो आपको करनी ही होगी। काया को कष्ट पहुंचाने वाली चेतना बुद्धि से मुक्ति पाकर भीतर कहीं अवस्थित अवचेतन मन की शक्ति को समझाने और फिर उसे लागू करने की सोच यदि जागृत होती तो निश्चित ही मजदूर मालिक बन जाएगा।

एक बार यदि आप तय कर लेते हैं कि वर्तमान स्थितियों के विरुद्ध आपको हमलावर होना है तो आप स्वयं पायेंगे कि स्थितियां बर्फ की तरह स्वयं ही पिघल रही हैं। इतिहास साक्षी है कि इंसान ने जब-जब भी कुछ कर लेने की ठानी है उसे वांछित सफलताएं मिली हैं। यदि आप वास्तव में दौलतमंद होना चाहते हैं तो यह बात अपने जेहन ने निकाल दीजिए कि आप अमीर नहीं हो सकते। टाटा, बिड़ला, अंबानी, बांगड़, मित्तल या अन्य अमीर खानदान के उदयकर्ताओं ने अमीर बनने की ठान कर ही अपने कदम बढ़ाए और कामयाब हुए। जीत के

झण्डे गाड़ दिए और विजय रथ अपने मुकाम पर पहुंच गया।

जब आप अपने मन से कह रहे हैं कि आप अमीर होकर ही दम लेंगे तो आपके मन में अपनी गरीबी से तंग आने का रुदन नहीं होना चाहिए। दावे के साथ, पूरे संकल्पों के साथ, पूरी शिद्दत के साथ कहो कि आपका अटल फैसला है कि आप अमीर होकर ही चैन लेंगे। आप पायेंगे कि आपका अवचेतन मन अब आपकी रुचियों, व्यवहार और निर्णय लेने की योग्यताओं में सकारात्म्क बदलाव ला रहा है। आपका सोच जल्द ही लोगों को बदलता नजर आयेगा। आपका जिंदगी के प्रति चिंतन ही बदल जायेगा। आपको अपनी गरीबी से नफरत होने लगेगी। अमीर लोगों के बारे में सोचकर आपको उनसे नफरत नहीं होगी बल्कि प्रेरणा मिलेगी।

मैंने अक्सर ऐसे कई लोगों को नजदीक से देखा है जो बेहद अमीर होना चाहते हैं लेकिन अमीरों को गालियां बकने में कोई कसर नहीं छोड़ते। अमीर होने वालों के बारे में उनका नजरिया पूरी तरह नकारात्मक होता है। अमीर चोरियां करते हैं, गरीबों का शोषण करते हैं। वे दूसरों के हकों को छीनकर अपने खजाने भरते हैं। बिना अन्याय किए अमीर नहीं हुआ जा सकता। अमीर बनने के लिए लोगों की लाशों पर से गुजरना पड़ता हैं। इस तरह की बात करने वाले लोग यदि हर रोज अपने अवेचतन मन को कहें कि वे अमीर बनाना चाहते हैं तो मैं यह कहूंगा कि वे कभी अपने संकल्प पूरा नहीं कर सकते। मैं मानता हूं कि व्यापार में हर तरह का ऊंचा-नीचा करना पड़ता है लेकिन आत्मा को मारकर व्यापार किया जाता है या कामयाब हुआ जाता है, मैं नहीं मानता। मेरा स्पष्ट रूप से कहना है कि इस तरह के नकारात्मक विचारों वाले व्यक्तियों को अमीर बनने के सपने नहीं पालने चाहिए। जो लोग अमीर होना चाहते हैं व अमीर लोगों से कोफ्त नहीं रखते बल्कि उनके सकारात्मक सोच के करीब होने के लिए प्रयासरत रहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि घाटा खाने के बाद भी किस तरह उभर कर मैदान मारा जाता हैं। दस रुपये जेब से गिर जाएं तो रोटी नहीं खायें, ऐसे लोग क्या अमीर बनेंगे। जो लोग लाखों का घाटा खाकर, अपनी गलतियां ढूंढ कर नए सिरे से धन अर्जित करने में जुट जाते हैं वे ही उद्योग की दुनिया में रेखांकित हो पाते हैं। बुझदिल कभी इतिहास नहीं रच पाये और जिंदादिलों ने कीर्तिमान पर कीर्तिमान रच डाले। हार में भी अवचेतन मन में जीत का जज़्बा जिंदा रहता है और यह जादू ही जीत का कारण बनता है।

याद रखिए धनोपार्जन का ही क्षेत्र नहीं, हर उस क्षेत्र में ऐसे ही सोच की जरूरत होती है जिसमें आप ऊंचाइयां छूना चाहते हैं। अपने क्षेत्र के लोगों की निंदा मत कीजिए। मत कहिए कि अमुक कामयाब व्यक्ति दोगला है, बदमाश है, लम्पट है, धूर्त है, क्रूर है, ये सब खींसे निपोरने वाली बातें हैं। जो जैसा है उसे वैसा रहने दीजिए। आप ख्याल रखिए कि आप वैसे ना हो जाएं। आप समृद्धि चाहते हैं तो समृद्ध लोगों से प्यार कीजिए। आप पाना चाहते हैं वे तो पा चुके हैं। वे आपसे ज्यादा अनुभवी और पराक्रमी हैं। आप अपने अवचेतन मन से कहिये कि देखो अमुक आदमी कितना समृद्ध है। एक दिन मैं भी उसकी तरह ही समृद्ध होकर बताऊंगा। ईश्वर करे वह व्यक्ति और समृद्ध हो ताकि उसकी तुलना करते हुए मैं भी अधिक समृद्ध हो सकूं। इस तरह का सोच आपको सफल बनायेगा।

दौलत आपके दिमाग में है, इसे दिमाग से निकालकर खजानों तक पहुंचाइए। इसके लिए एक कारगर फार्मूला यह देना चाहता हूं कि आपके पास यदि साइकिल है, किसी की बाइक को देखकर स्वयं को दीन-हीन मत समझिए बल्कि ऐसा संकल्प हो कि मैं अपनी मेहनत से वो स्टेटस खड़ा करूंगा कि कल की साइकिलधारी आज लाखों की कार में बैठकर आता जाता है। ●

लोकतंत्र के आदर्शों की सुरक्षा

आचार्य तुलसी

चुनाव को त्योहार का रूप दिया जाए तो उसके कानून–कायदों को भी ध्यान में रखना जरूरी है। किन्तु सिद्धांतों की नाव पर सवार होकर चुनाव का समंदर पार करने का जमाना शायद बीत गया है। इसलिए सत्ता के गलियारे में घुसपैठ करने के लिए नये–नये तरीके खोजे जा रहे हैं।

भारतीय राजनीति में तीन प्रकार की शासन-प्रणालियां प्रचिलित रही हैं-एकतंत्र, गणतंत्र और लोकतंत्र। तीनों प्रणालिों में अपने गुण-दोष हैं। किसी भी प्रणाली को पूर्ण रूप से सही या गलत प्रमाणित करने वाले ठोस आधार अभी उपलब्ध नहीं हैं। वर्तमान में भारतीय शासन-व्यवस्था का संचालन किसी एक ही व्यक्ति के हाथ में नहीं है। एकतंत्रीय शासन-प्रणाली से पनपी विसंगतियों ने उसको धराशायी बना दिया। भगवान महावीर के युग में यहां गणराज्य व्यवस्था चल रही थी। समय की धूल ने उस व्यवस्था का भी लोप कर दिया। एक समय ऐसा आया, जब भारत की बागडोर विदेशी हाथों में चली गई।

कठिन संघर्ष और बलिदान के बाद देश आजाद हुआ। उसके साथ ही यहां लोकतंत्र की बुनियाद रखी गई। लोकतंत्र में किसी व्यक्ति, दल या समूह को परम्परा से सत्ता के शिखर तक पहुंचने का अवसर नहीं मिलता। इस पद्धति के अनुसार सत्ता में जाने वाले व्यक्तियों का चयन होता है। चयन की पूरी प्रक्रिया जनता से जुड़ी हुई है। इस दृष्टि से कहा जाता है कि चुनाव लोकतंत्र का आधार है और चुनाव का आधार है जनता।

कुछ लोग चुनाव को लोकतंत्र का त्योहार मानते हैं। भारतीय संस्कृति में त्योहार मनाने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है। यहां त्योहारों की सूची बहुत लंबी है। हर त्योहार के अपने कानून-कायदे होते हैं। कानून कायदे न हों तो किसी भी त्योहार की परम्परा आगे चल ही नहीं सकती।

चुनाव को त्योहार का रूप दिया जाए तो उसके कानून-कायदों को भी ध्यान में रखना जरूरी है। किन्तु सिद्धांतों की नाव पर सवार होकर चुनाव का समंदर पार करने का जमाना शायद बीत गया है। इसलिए सत्ता के गलियारे में घुसपैठ करने के लिए नये-नये तरीके खोजे जा रहे हैं।

राष्ट्र-हित और जन-हित की महात्वाकांक्षा व्यक्ति हित और पार्टी हित के दबाव से नीचे बैठती जा रही है। सेवा के स्थान पर स्वार्थ आसीन हो रहा है। जनता के दु:ख-दर्द को दूर करने के वादे चुनाव घोषणापत्र की स्याही सूखने से पहले ही विस्मृति के गले में टंग जाते हैं। जनता और जननेता के बीच आत्मीय रिश्ते स्थापित हों, उससे पहले ही उनमें गहरी दरारें पड़ जाती हैं। ऐसी स्थिति में चुनाव की संस्कृति अपना अर्थ खोती जा रही है।

लोकतंत्रीय शासन-प्रणाली में जनता की सबसे बड़ी संपत्ति है उसका मत (वोट)। मत का अर्थ है देश के भविष्य को उजालने के लिए किया गया स्वतंत्र चिंतन। पर जिस समय मत के साथ प्रलोभन और भय जुड़ जाए, वह खरीद-फरोख्ती की वस्तु बन जाए, उसके साथ मार-पीट, लूट-खसोट और छीना-झपटी के किस्से बन जाएं, इससे भी बड़े हादसे घटित हो जाएं। यह सब क्या है? क्या आजादी की सुरक्षा ऐसे कारनामों से होगी? क्या ये सब देश की जनता के लिए निश्चिंत भविष्य के आश्वासन बन पायेंगे? ऐसे घिनौने तरीकों से विजय पाना और फिर विजय की दुन्दुभि बजाना, क्या यह लोकतंत्र की विजय है? ऐसी विजय से तो हार भी क्या बुरी है?

लोकतंत्र के कानून-कायदों के आधार पर सत्ता के संघर्ष में उतरा हुआ व्यक्ति स्वयं को राजनीति में स्थापित न कर पाए तो उसका विस्थापित रहना भी अच्छा है। बजाय इसके कि वह अपनी मान-मर्यादा को ताक पर रखकर अनैतिक तरीकों से विजयश्री का वरण करे। इस संदर्भ में एडीसन का अभिमत मननीय है। उन्होंने लिखा है- 'इज्जत को चोट पहुंचाने की अपेक्षा दस हजार बार मृत्यु होना उत्तम है।' गंभीरता से विचार किया जाए तो मौत का सही अर्थ है–अपने सिद्धांतों और नीतियों की पटरी से नीचे उतरना। नीतिविहीन विजय के बाद किस खुशी में जश्न मनाया जाता है, जबकि लोकतंत्र का जनाजा निकल रहा होता है।

संसद देश की सर्वोच्च संस्था होती है। राज्यों में विधान सभाओं की भूमिका अहम होती है। इनमे आने वाले व्यक्ति भी नैतिक मूल्यों की फसल को उखाड़ देंगे तो उनकी सुरक्षा कौन करेंगे? बाड़ द्वारा फल खाने की जनश्रुति ऐसे प्रसंगों पर ही सत्य प्रमाणित होती है। सत्ता की परिक्रमा में खड़े व्यक्ति, सत्तासीन हों या विपक्ष के दावेदार, आखिर वे चाहते क्या हैं? वोटों के गलियारों से सत्ता के शिखर पर पहुंचना या लोकतंत्र के आदर्शों की सुरक्षा करना। चुनावों में बरती जा रही धांधली को देखकर तो ऐसा लगता है कि वे घर-घर को मरघट में बदलने की प्रक्रिया अपना रहे हैं।

एक प्रत्याशी किसी गांव में वोट मांगने गया। एक व्यक्ति बोला-'आपको क्या वोट दें। पिछले चुनाव में कहा गया था कि गांव में मरघट बनवाने का आश्वासन दिया। उस आश्वासन को पांच साल हो गए हैं। अभी तक कहीं मरघट नहीं बना। यह बात सुन प्रत्याशी ने कहा- 'आप मुझे एक मौका और दें। इस बार मैं घर-घर में मरघट बनवा दूंगा।' ऐसे व्यक्ति और कुछ नहीं तो लोकतंत्र के लिए मरघट का निर्माण अवश्य कर रहे हैं। लोकतंत्र को बचाना है तो उसे ऐसे लोगों के हाथ में जाने से बचाना होगा।

चुनाव चाहे संसद के हों, विधानसभाओं के हों, महाविद्यालयों के हों या अन्य सभा-संस्थाओं के, जहां नीति की बात पीछे छूट जाती है, महासमर मच जाता है। उसमें जन, धन, समय और शक्ति की जो हानि होती है, उसकी क्षतिपूर्ति कठिन ही नहीं, असंभव है। ऐसे नाजुक मसले पर जनमत जागृत करने का काम अणुव्रत कर रहा है। अणुव्रत द्वारा निर्धारित 'चुनाव आचार संहिता' मील का पत्थर बन सकती है, बशर्ते कि नैतिकता से उखड़ती हुई आस्था को बहाल किया जाए। ●

ब्रज वृंदावन माधुर्य

ब्रह्मचारी कौशिक चैतन्य

अखिल विश्व में रहने वाले हर एक जीव की नैसर्गिक इच्छा महान से महानतर एवं महानतर से महानतम बनने तक की यात्रा को पूर्ण कर 'स्व' से 'विराटतम' अस्तित्व को प्राप्त कर जीवन की उस परम चरम शान्त आनंदपूर्ण अवस्था को प्राप्त करना है किन्तु इतनी बड़ी उपलब्धि सहज न मिल सकेगी इसके लिए तो कुछ प्रार्थना की आवश्यकता होगी और इसी प्रार्थना के बल पर एक भक्त, साधक उस परम चैतन्य सत्ता जो कि अखिल ब्रह्माण्ड का आदिकारण, जगत नियंता, व्यापक तत्व को अपने इन्द्रियों से उस को नेत्र गोचर बना लेता है। यद्यपि चैतन्य तत्व कभी भी अपने स्वभाव अर्थात ''सत चित आनन्द (रसो वै सः)'' (तैत्तिरीय उपनिषद) से किंचिंत् मात्र भी स्खलित नहीं होता किन्तु वही तत्व जब जिज्ञासा, प्रार्थना की उपाधि को धारण कर भावात्मक स्तुति करता है तो वही चेतन सत्ता एक उपाधि को और धारण करता है और अपने प्रार्थनोपाधिक साधकों की जिज्ञासा को शान्त करने हेतु वही सत्ता कभी राम की उपाधि, कभी कृष्ण की उपाधि को धारण करता हुआ सा इस धराधाम पर प्रकट होता है।

ब्रज की अपनी एक महिमा है। संस्कृत शब्दकोशानुसार ब्रज शब्द 'ब्रज' धातु से बना है जिसका अर्थ गतिशीलता से है। जहां गाय चरती हैं, विचरण करती हैं वह स्थान भी ब्रज कहलाता है। ब्रज का अर्थ अमरकोश के अनुसार 'गोष्ठ' (गायों का बाड़ा) मार्ग और वृंद (झुण्ड) होता है, इसी से ब्रज शब्द बनता है। ब्रज शब्द का उल्लेख वेदों में भी पाया जाता है जहां अथर्ववेद में तो पूरा सूक्त ही गायों के लिए प्रस्तुत होता है।

ब्रज के अन्तर्गत कई पुर, ग्राम आदि पाये जाते हैं, उसी श्रृंखला में मधुपुरी अर्थात् मथुरा नगर में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म जेल के अन्तर्गत वसुदेव और देवकी के मध्य होता है। अध्यात्म में वसुदेवजी शुद्ध मन के प्रतीक हैं और माता देवकी सात्विक बुद्धि की तो नारायण! परमात्मा का अवतरण सम्भव है किन्तु वो शुद्ध मन और सात्विक बुद्धि की अपेक्षा रखता है। श्रीकृष्ण के जन्म का तात्पर्य यही है कि उस परम चेतन ब्रह्म सत्ता का अनुग्रह विग्रह रूप धारण कर लेना ही अवतार है। नारायण! परमात्मा का निवास तो धर्म में ही होता है और जहां धर्म है, धर्मात्मा है, परमात्मा है, वहीं विजय है।

वासुदेव श्रीकृष्ण अधर्म रूपी कारागार को त्याग कर गोकुल पहुंचते हैं और वहां विभिन्न लीला सम्पन्न करते हैं। अब वो बाल कृष्ण लाल ब्रज के हृदय वृन्दावन जहां प्रिया-प्रियतम ने अपनी दिव्य लीलायें की हैं, जहां इस दिव्य पावन धरा पर बड़े-बड़े तपस्वी तपस्या कर भी इसकी महिमा को नहीं समझ पाते, जहां ब्रह्माजी का ज्ञान भी नहीं चलता, मोहित हो जाते हैं, इस धरा पर प्रेम के आगे उद्धव जैसे ज्ञानी भी अपना ज्ञान भूलकर गोपी प्रेम में पड़ जाते हैं, जहां रसिक जन अपने प्रिया-प्रियतम के दिव्य लीलाओं का दर्शन कर प्रेम रस में निमज्जित होते रहते हैं और उन्हीं अपने प्रेमास्पद के चरणों में लगे हुए सुगन्धित केसर चन्दन के लेप का स्मरण कर उस दिव्य गन्ध का आनन्द लेते हुए पूरा जीवन व्यतीत कर देते हैं और मोक्ष तक की भी कामना नहीं करते, ऐसे रसिकों की राजधानी श्याम सुन्दर और महारानी श्रीराधिका रानीजी का दिव्य स्थल जो युगल सरकार का निज धाम है जहां भक्ति नृत्य कर अपने ठाकुर को रिझाने का काम किया करती है।

वृंदावन शब्द का उच्चारण करने मात्र से ही मन के अन्दर एक शान्त आनन्दपूर्ण, आह्लाद की अनुभूति को देता है और मन श्रीश्यामाश्याम के युगल चरणों की ओर चुम्बक की भांति खिंचा चला जाता है। वृन्दावन की उस यमुना पुलिन के सौन्दर्य का स्मरण हो आता है, जहां सूर्यतनया यमुनाजी नित्य नवरस केलि से आच्छादित, नित्य नव कुंज, पुष्प लताओं से घिरी रहती हैं, वृन्दावन प्रभु के गोलोक धाम का प्रतिबिम्ब है और शास्त्रों के अनुसार वृन्दावन नित्य शाश्वत है जहां प्रियाप्रियतम विराजते हैं।

अखिल विश्व को प्रेम, भक्ति की शिक्षा-दीक्षा तो ब्रज से ही प्राप्त होती है, जहां प्रवेश करने बाद केवल और केवल यदि कुछ बचता है तो वह है प्रेम, प्रेम और प्रेमपूर्ण भक्ति, जहां व्यक्ति नहीं बचता, उसकी बुद्धि की बुद्धिमत्ता भी शेष नहीं रह जाती, मन की मननशीलता भी प्रेम रस में प्रवाहित हो जाती है, उस ब्रज की रज में लोटते हुए एक अलौलिक आनन्द की अनुभूति होती है। जहां यमुना के तीर पर कदम्ब, तमाल, चमेली के वृक्ष अपनी शीतलता प्रदान करते हुए राधा माधव के दिव्य प्रेम की शिक्षा देते हैं। कहते हैं कि वृन्दावन के सामने तो स्वर्ग भी हल्का रह जाता है- एक बार जब वरुण देव नंद बाबा को प्रातः जल्दी स्नान करने के कारण अपने लोक लेकर चले जाते हैं तो भगवान श्रीकृष्ण उन्हें लेने वरुण लोक जाते हैं। वापस आने पर गोप ग्वाल सखाओं को लगा कि कृष्ण, नंदबाबा को किसी दिव्य स्थान का दर्शन कराकर ला रहे हैं तो गोप ग्वाल भी हठ करने लगे हमें भी जाना है, प्रभु ने समझाया की वृन्दावनवासी को गोलोक अच्छा नहीं लगेगा, ना मानने पर श्रीठाकुर ने आंख बन्द करने को कहा और वो सब एक दिव्य लोक में पहुंच गये जहां बड़े-बड़े भक्तों की सवारी निकल रही थी, स्वागत सम्मान हो रहा था, सारे गोप भगवान को ढूंढते हुए मुख्य द्वार से अंदर प्रवेश किये तभी पीछे से आवाज आयी कि ग्वालों सावधान यह बैकुंठ है यहां पर नाचते हुए चलने का नियम है, तभी एक ग्वाल ने कहा ठीक है हम नाचते हुए चलेंगे किन्तु यह बताओ कि हमारा कन्हैया कहां है, तभी आवाज आयी कि यहां पर गाते हुए बोलने का नियम है तभी थोड़ी देर में वो सब आंख बन्द कर जब पुनः खोलते हैं तो देखा कि कन्हैया सामने खड़ा है तब सभी ग्वालों ने कहा कि सबसे सुन्दर तो हमारा वृन्दावन ही है जहां मात्र और मात्र प्रेम ही प्रेम है।

–चिन्मय निकेत
213 कसमाण्डा रिजेंट अपार्टमेंट
लखनऊ-226001 (उत्तर प्रदेश)

पीठाधीश्वर बैजनाथजी

सभी मजहबों का भगवान एक ही है

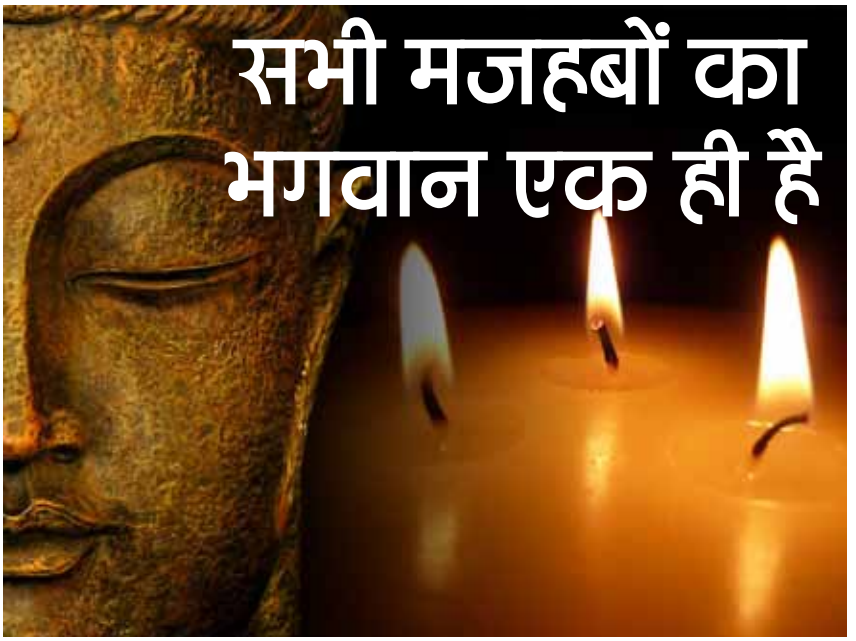

वैदिक उपासना-पद्धति में पंचदेव- विष्णु, शिव, शक्ति, गणपति और सूर्य को माना है। इन सबको माहेश्वर अंश ही बताकर एक ही परमात्मा की संप्रभुता स्वीकार की गई है। आद्य शंकराचार्य ने वेदांत दर्शन के स्तर पर केवलाद्वैत का पक्ष लेते हुए अपनी 'अपरोक्षानुभूति' रचना में कहा है कि सारे प्राणी परमात्मा से उत्पन्न हैं। अत: सब आत्मस्वरूप परब्रह्म हैं। 'ब्रह्मण: सर्व भूतानि जायन्ते परमात्मन:।' विशिष्टाद्वैत सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक आचार्य श्री रामानुज स्वामी ने कहा 'भगवत्शरणागत होना जीव मात्र का परम धर्म है।' द्वैत सम्प्रदाय के आचार्य मध्वाचार्य ने कहा 'जीव ईश्वर से भिन्न है, जीव मात्र को विभु ईश्वर की उपासना करनी चाहिए।' वैष्णवाचार्य स्वामी रामानन्द ने 'हरि को भजै सो हरि को होई।' सिद्धांत का पोषण कर समान रूप से निर्गुण पंथी कबीर, रैदास तथा सगुणवादी तुलसीदास आदि को भगवत्प्रेम का मर्म समझाया। महाप्रभु बल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैत वाद के परिप्रेक्ष्य में पुष्टिमार्ग की स्थापना कर जीव मात्र के लिए 'श्रीकृष्ण: शरणं मम।' मंत्र का उपदेश दिया। चैतन्य सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक चैतन्य महाप्रभु ने सभी प्राणियों के लिए हरिनाम संकीर्तन को श्रेयस्कर कहा। उन्होंने भी जीवमात्र में ईश्वर के दर्शन किए। दक्षिण भारत के वैष्णवमार्गी आलवन्दार संत, विष्णुचित्त आदि ने भी सभी के लिए वैष्णव धर्म को दरवाजा खोल दिया। आसाम के महापुरुषीय धर्म के संस्थापक महात्मा शंकरदेव ने कहा कि 'परम धर्म हरिनाम कीर्तन समस्त प्राणीर अधिकार।' गुजरात के स्वामी नारायण ने जाति-पांति का भेद भाव मिटाकर भगवन्नाम की मुक्ति का मार्ग कहा। महाराष्ट्र में संत ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम, नामदेव, मुक्ताबाई आदि सभी ने एक स्वर में कहा है- सब जीव ईश्वर के अंश हैं। परमात्मा विभु है। उसी का स्मरण मनुष्य का धर्म हैं। मुक्ताबाई का ज्ञानेश्वर के प्रति उद्बोधन के प्रति उद्बोधन पूरे संत-समाज के लिए उद्बोधन है-

योगी पावन मनाचा।
साहे अपराध जनाचा।
विश्व रागें झाले बह्नि।
संती सुखी बहावे पाणी।

भारत के शैव-धर्म के सभी सम्प्रदायों ने यथा- दक्षिण के शैव संत अय्यार, संबन्धार, कर्नाटक के वीर शैव- धर्म के संस्थापक संत व सर्वेश्वर और काश्मीरीय प्रत्यभिज्ञा शैव-दर्शन के आचार्य कल्लर इन सभी आचार्यों ने शिव की सर्वव्याप्ति को स्वीकार करते हुए 'शिव सर्व इदं जगत्' का प्रचार किया।

भगवान बुद्ध ने धम्मपद में उपदेश दिया 'हे मनुष्यों बिना बाधा के वैर एवं शत्रुता के इस संसार में ऊपर-नीचे, इधर-उधर सबके प्रति असीम प्रेम बढ़ाओ।'

भगवान महावीर तो करुणा के अवतार ही हैं। वे तो अहिंसा का साकार विग्रह है। उनका उपदेश है हिंसा से अशुभ कर्म तथा अहिंसा से शुभ कर्म की उत्पत्ति होती है। राग-द्वेष से शून्य व्यक्ति ही पूज्य है। संत परम्परा के संत गोरख, कबीर, रविदास, नानक, दादू, पल्टू आदि सभी ने एक स्वर से योग-साधना एवं भक्ति भावना का सामंजस्य बैठाते हुए निर्गुण एवं सगुण दोनों में एकता का शंखनाद किया है। रामस्नेही सम्प्रदाय के प्रवर्तक परमाचार्य श्रीरामनिवासजी महाराज ने राम की महिमा गाते हुए प्रतिपादित किया है कि 'मेरा राम घट-घट वासी राम हैं जो सृष्टि का उत्पत्तिकर्ता तथा पालक है। उस राम से स्नेह करना मानव धर्म है।' दादू दयाल का राम निर्गुण निराकार है, सभी का उपास्य है, पर उसे प्राप्त करने के लिए वियोगजन्य विरह-पुकार की आवश्यकता है। अकबर ने दादू से पूछा- अल्लाह की जाति, उसका रूप व रंग कैसा है?

दादू ने उत्तर दिया-

इश्क अल्लाह की जाति है
इश्क अल्लाह का अंग।
इश्क अलह, इश्क अल्लाह का रंग॥

दादू दयाल की साधना जहां निर्गुण निराकार में विश्वास व्यक्त करती है वहीं उनके विरह-पद उनकी साधना शैली का भाव निमज्जन सगुण भक्ति का सा आह्लाद प्रदान करते हैं। कबीर तो घोषणा ही कर देते हैं- 'ढाई आखर प्रेम का'

निर्गुण हमारा पिता कहीजै
सगुण हमारी महतारी।
किसको छोड़ूं किसको त्यागूं
दोनों पलड़े भारी॥

गोरख कहते हैं-

घटि-घटि गोरख घट-घट मीन।
आपा परचै गुरु मुखी चीन्ह॥

सूफी-संत परम्परा भी इश्क पर जोर देती है तथा अहंकार को प्रभु मार्ग की बाधा मानती है।

सफा से मिला तो सफा हो गया मैं।
खुदाई मिटी तो खुद खुदा हो गया मैं॥

सूफी संत जायसी, मुयुनूदीन चिश्ती, निजामुद्दीन, कुतुबन, मंझन, दाराशिकोह आदि सभी ने 'अनलहक्' 'मैं ही ब्रह्म हूं' इसी सत्य को उजागर किया। उनका उद्घोष- 'ऊपर वही नीचे वही, दाएं वही बाएं वही। है वही, सब कुछ वही।' देशी ही नहीं विदेशी सूफी संत राबिया का स्वर भी इसी सप्तक में गूंज रहा है।

सभी मजहबों का भगवान एक है। मजहब अलग-अलग इंसान एक हैं। इस अवसर पर एक विहंगम दृष्टि सनातन धर्मेतर धर्मों पर भी डालनी समीचीन होगी। ईसाई धर्म की मूल धार्मिक पुस्तक बाइबिल में ईसा का कथन है- Love is god, god is truth - truth is beauty ईसा की घोषणा- I am the imuisible one is the all.

'अहं शिव: शिवश्चायं त्वं चापि शिव एक हि।' का स्मरण कराता है। मुस्लिम धर्म की पुस्तक कुरान में कहा गया है- ''अल्लाह ने सबके दिलों में मोहब्बत भर दी है, सबके दिल एक कर दिए हैं। तुम सारी दुनिया की दौलत खर्च कर देते तो भी सबके दिलों को एक नहीं कर पाते।' अल्लाह एक है। यह दुनिया उसी के नूर का पसारा है।''

ताओ धर्म के प्रवर्तक लाओत्से कहते हैं जो लोग मुझ से प्रेम करते हैं, मैं उनसे प्रेम करता हूं जो मुझसे प्रेम नहीं करते, मैं उनसे भी प्रेम करता हूं। प्रेमबल ही सर्वोपरि बल है।

पारसी धर्म के प्रवर्तक जरथुष्ट अपनी धर्म पुस्तक 'जेन्दावास्ता' में कहते हैं- सबसे उत्तम आदमी वह होता है जो सबसे प्रेम करता है। मज्दा ही सत्कर्मों का पिता है।' संक्षेप में यही कहना है कि धर्म एक मत है पर फिर भी यह क्या हो रहा है? ●

दीपावली पर जुए की परम्परा

शशिभूषण शलभ

दीपावली अंधकार पर प्रकाश की विजय का त्योहार है। दीप जलाकर अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का संकेत देते हैं लेकिन कुछ लोग इस ज्योतिपर्व पर जुए खेलकर, अपने जीवन में फिर से अंधेरा कर लेते हैं।

प्राचीनकाल में जुआ मनोरंजन के लिए खेला जाता रहा हो लेकिन आधुनिक परिवेश में दुर्व्यसन के रूप में परिवर्तित हो चुका है। बड़े-बड़े होटालों व फार्म हाउसों में जुआ खेला जाता है। जुए के साथ दूसरे अनेक दुर्व्यसन भी जुड़ते जा रहे हैं। जुए में स्त्रियों को भी दांव पर लगाया जाता है। ताश के जुए के साथ स्त्रियों को जुए में हारा-जीता जाता है।

दीपावली पर जुआ खेलना आधुनिक परिवेश में एक शुभ कार्य माना जाता है। दीपावली पर सभी निर्धन व धनी वर्ग के लोग जुआ खेलते हैं। धनी वर्ग की स्त्रियां भी होटलों में बढ़-चढ़ कर जुआ खेलती हैं। होटलों व फार्म हाउसों में लाखों रुपए की हार-जीत होती है। जुए के साथ दूसरी अनेक कुरीतियां जुड़ती जा रही हैं।

दीपावली पर जुए जैसी हानिकारक परम्परा कैसे प्रारंभ हुई? यह जानने के लिए प्राचीनकाल के ग्रंथ-पुराणों का अध्ययन करना होगा। उत्तरवैदिक काल के ग्रंथ-पुराणों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि द्यूत क्रीड़ा (जुए) का खेल बहुत प्रचलित था। उस समय अक्ष, पेण, दुरोदर, शलाका आदि शब्द जुए के खेल में प्रयुक्त किए जाते थे। पण जुए में इस्तेमाल की जाने वाली राशि (धन) का प्रतीक था तो अक्ष का उपयोग पासों के लिए किया जाता था।

तैत्तिरीय संहिता में त्रेता, द्वापर में आस्कंद, कृत शब्द अक्ष के लिए उपयोग किए जाते थे। ऋग्वेद में अक्ष के साथ पण शब्द का भी वर्णन मिलता है। उस समय अक्ष का अर्थ पासा और पण का अर्थ जुए में जीते हुए धन के लिए उपयोग किया जाता था।

ऋग्वेद में पासे के खेल (जुए) का अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है। आपानक और द्यूत क्रीड़ा आर्य संस्कृति के विशेष अंग रहे हैं। ऋग्वेद 10-34 के अनुसार उस समय के पराजित जुआरी की मनोवृत्ति का वर्णन मिलता है-

प्रादेपा मां वृहतो मादपति,
प्रवातजा इरिणे वर्वृताना:।
सोमम्येवे भौजातस्यं भक्षो
विभीद को जागृविमेहमगच्छाना।

अर्थात पर्वतों के वृक्षों की तरह गतिशील पट्टी पर घूमते हुए पासे मुझे बहुत आनंदित करते हैं जैसे मैंने सोमरस का पान किया हो। एक अन्य श्लोक में जुआरी की दुर्दशा का इस प्रकार वर्णन किया गया है- मेरी सुंदर, सुशील पत्नी मेरे जुआ खेलने के कारण मुझसे नाराज रहती है। जुए के इन पासों ने मुझे पत्नी से अलग कर दिया है। मेरी पत्नी की मां भी मुझे बहुत भला-बुरा कहती है। कोई मित्र मुझे एक कौड़ी भी उधार नहीं देता। माता-पिता भी मुझे जुआ खेलते समय पकड़वा देते हैं।

किसी जुआरी की जुआ खेलने की विवश मनस्थिति का वर्णन एक अन्य श्लोक में मिलता है। मैं बहुत चाहता हूं कि जुआ कभी नहीं खेलूं, लेकिन चौसर पर बिखरे पासों को देखते ही मेरा मन उत्तेजित हो उठता है और मैं विवश होकर जुआ खेलने बैठ जाता हूं।

जुआ प्राचीनकाल में कोई दुर्व्यसन नहीं था। उस समय जुआ मनोरंजन के लिए खेला जाता था। फिर भी ग्रंथ-पुराणों में जुए में पराजित व्यक्ति की आलोचना की गई है। जुए को दुर्व्यसन बताया गया है। राजा नल जुए में सब राज-पाट हार कर जंगल-जंगल भटकते फिरे थे। महाभारत का भीषण युद्ध जुए के कारण हुआ था। युधिष्ठिर जुए में राजपाट के साथ द्रौपदी को भी हार गए थे। फिर राज-पाट के लिए उन्हें दुर्योधन से युद्ध लड़ना पड़ा। महाभारत के युद्ध में असंख्य सैनिक मारे गए।

जुए के दुर्व्यसन के संबंध में महाभारत में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं कहते हैं। यदि मैं उस समय युधिष्ठिर के पास होता तो उन्हें कभी जुआ नहीं खेलने देता। उन्हें जुए के अवगुणों से अवगत करा देता। स्त्री में आसक्ति, द्यूतक्रीड़ा (जुआ), मृगया एवं आपानक से मनुष्य की सुख-समृद्धि व सम्मान नष्ट होता है।

महाभारत के उस जुए में युधिष्ठिर सहस्त्रों मुद्राओं से भरी मंजूषा, चौसठ कलाओं में प्रवीण एक लाख नवयुवतियां (दासी), एक लाख नवयुवक (दास), एक सहस्त्र उन्मुक्त हाथी, एक सहस्त्र गंधर्व देश के अश्व, रत्नों से भरी अनगिणत पेटियां और सहस्त्रों सैनिक और द्रौपदी को जुए की भेंट चढ़ा दिया था।

एक अन्य स्थान पर कौशल्या के सामने भरतजी श्रीराम के वन जाने पर कहते हैं जिसके कहने से श्रीराम को वन जाना पड़ा है, वह सदैव काम, क्रोध के वशीभूत होकर मद्यपान, स्त्री संबंधों और जुआ खेलने में संलग्न रहे।

दीपावली पर जुआ खेलने की परम्परा का प्रारंभ ऋग्वैदिक काल से पहले हो चुका था। दीपावली को आर्य संस्कृति से पहले का त्योहार माना जाता है। मोहनजोदड़ों और हड़प्पा के अवशेषों में ऐसी मूर्तियां मिली हैं जिनमें दीपकों की पंक्तियां बनी हुई है। पुरातत्व विशेषज्ञों के अनुसार आर्यों के आगमन से पहले देश के आदिवासी द्रविड़, कोल, भील आदि जातियों के लोग दीपों का त्योहार मनाते थे। संभव है जुए की परम्परा उन जातियों से आर्यों में आई हो। आर्यों द्वारा अनार्य जाति की स्त्रियों से विवाह करने पर जुए की परम्परा भी सीख ली हो।

जुए में भारी धन हार कर लोग ज्योति पर्व दीपावली पर अपने घर में ही नहीं, जीवन में भी अंधेरा कर लेते हैं। जुए में अधिक धन हार जाने पर जीवनयापन के लिए धन उधार लेते हैं और आजीवन उधार के चक्कर में फंसे रह जाते हैं। दीपावली अंधकार से निकलकर प्रकाश में आगे बढ़ने का त्योहार है तो फिर जुआ खेलकर अपने जीवन में अंधकार क्यों करें?

-भारतीय चिकित्सा भवन
ए-3/14, एम.आई.जी. फ्लैट
चंद्रप्रिय अपार्टमेंट,
सैक्टर-8, रोहिणी
दिल्ली-110085

तिजोरी पर चर्चा

यशवंत कोठारी

तिजोरी रखने की सबसे सुरक्षित जगह तहखाना या स्टोर माना गया हैं। कुछ व्यापारियों ने बातचीत में तिजोरी के महत्व को स्वीकारते हुए कहा कि यह एक परम्परा है, बैंकों या लाकरों के बावजूद तिजोरी होती है और घर में लक्ष्मी बनी रहती है। ऋद्धि–सिद्धि तो तिजोरी होने पर ही आती है। अत: तिजोरी का महत्व निर्विवाद है।

दीपावली के अवसर पर सभी चर्चाएं बिना तिजोरी की चर्चा के अधूरी है तथा धन के देवता कुबेर ने भी धन को तिजोरी में ही रखा होगा। सरकारी खजाना हो या व्यक्तिगत धन तिजोरी में ही रखा जाता है तथा रखा जाना चाहिए।

पुराने समय में भी धन को लोहे या लकड़ी की तिजोरी में ही रखा जाता या घर के अन्दर तहखाने में या एक विशेष कमरे में एक लोहे या लकड़ी की मजबूत पेटी रखी रहती है, जिसमे नकदी, सोना, चांदी तथा अन्य मूल्यवान वस्तुओं को सुरक्षित रखा जाता है। इसी प्रकार व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, दुकानों आदि में धन को तिजोरी या गल्ले में रखने की परम्परा है। तिजोरी मजबूत लोहे की बनी होती है, गुल्लक या गल्ला लकड़ी या चदर की बनी पेटी होती है। आजकल लोहे की अलमारियों में ही एक खण्ड को तिजोरी का रूप दिया जाता है।

व्यापारिक वर्ग इसी गल्ला तिजोरी पर गणेश तथा लक्ष्मी के चित्र बनाकर पूजा करते है। सिंदूर से लाभ-शुभ तथा स्वास्तिक अंकन किया जाता है। दीपावली के शुभ अवसर पर खातों-बहियों को बदला जाता है तथा तिजोरी की साफ-सफाई करके पुन: पूजा-अर्चना के बाद उसमें धन रखा जाता है। आज भी मकान बनाते समय किसी एक विशेष स्थान पर स्टोर में या गृहस्वामी के कक्ष में एक अलमारी के सबसे नीचे वाले खण्ड में एक तहखाना बनाया जाता है ताकि तिजोरी के अभाव में मूल्यवान वस्तुएं सुरक्षित रह सकें। यह तिजोरी का ही परिष्कृत व सुरक्षित रुप है। बैंक के लाकर्स जिसमें चोरी, आग आदि का बीमा होता है तथा समस्त जिम्मेदारी बैंक की होती है।

कुछ विशेष तिजोरियों को खोलने के विशेष तरीके होते हैं, उनके ताले तथा चाबियां भी विशेष होते हैं। किसी जमाने में सोने-चांदी को मिट्टी के बर्तन में रखकर किसी जमीन में गाड़कर तिजोरी का रूप दिया जाता था। सर्प तिजोरी व धन की रक्षा करता है, ऐसी भी मान्यता है। तिजोरी बनाना किसी जमाने में एक पुश्तैनी काम होता था। लौहार इस काम को करते थे। स्वर्णकार, सेठ साहूकार, बड़े व्यापारी तथा ब्याज का व्यवसाय करने वालों के घरों, दुकानों, प्रतिष्ठानों पर ऐसी मजबूत तिजोरियां होती हैं कि कई लोग मिलकर भी हिला नहीं सकें। तोड़ना या खोलना या उठा कर ले जाना लगभग असंभव होता था। मगर जहां मजबूत तिजोरी होती है वहीं पर शातिर बदमाश भी होते हैं, जो तिजोरी को तोड़कर या ताला खेलकर माल ले जाते हैं। फिल्मों में अक्सर तिजोरी दिखाई जाती है। कभी खाली तो कभी भरी या कभी तिजोरी से चोरी करता हुआ चोर।

व्यापारी वर्ग आज भी दिवाली पर तिजोरी की पूजा अर्चना करता है अपने कीमती आभूषण, रत्न, रुपया पैसा तथा शगुन के रूप में सुपारी, हल्दी, पान, कुमकुम, तथा कुछ विशेष प्रकार के पुराने चांदी, सोने के सिक्के इसमें रखे जाते हैं। पुराने जीतल के कलम दवात आदि भी तिजोरी में रखे जाते हैं। बैंकिग व्यवसाय के बावजूद तिजोरी व्यवस्था महत्वपूर्ण है। बैंकों में भी तिजोरी, लाकर्स तथा कैश रूम होते हैं। सभी सरकारी-गैर सरकारी कार्यालयों में भी तिजोरी होती है और कैश बाक्स होता है। तिजोरी को कभी खाली नहीं रखा जाता तथा नई तिजोरी की स्थापना विधि-विधान से पूजा अर्चना के साथ की जाती है। घरों में तिजोरी पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आती है और घर के स्वामी या मालकिन के पास इसकी चाबी व जानकारी रहती हैं।

तिजोरी रखने की सबसे सुरक्षित जगह तहखाना या स्टोर माना गया हैं। कुछ व्यापारियों ने बातचीत में तिजोरी के महत्व को स्वीकारते हुए कहा कि यह एक परम्परा है, बैंकों या लाकरों के बावजूद तिजोरी होती है और घर में लक्ष्मी बनी रहती है। ऋद्धि-सिद्धि तो तिजोरी होने पर ही आती है। अत: तिजोरी का महत्व निर्विवाद है।

नवीन आर्थिक उदारता तथा आर्थिक सम्पन्नता के आ जाने पर भी तिजोरी का महत्व कम नहीं हुआ है।

कुछ व्यापारियों की मान्यता है कि लक्ष्मी चंचला होती है, उसे ताले में, तिजोरी में बंद रखना पड़ता है। सेठों, साहूकारों के यहां लक्ष्मी पैर तोड़कर तभी बैठती है जब उसे सम्मान मिले और सम्मान तो तिजोरी में ही मिलता है। पर्स को भी तिजोरी का एक लघु रूप माना जा सकता है। जो रोज काम आता है लेडीज पर्स और जेन्ट्स पर्स और स्कूली बच्चे के पर्स सब जानते हैं कि लक्ष्मी को दबाकर रखा, खुली नहीं की फुर्र...। कुबेर जो धन का देवता है वह धन के वितरण, संग्रहण के काम करता है, अर्थात कुबेर पौराणिक वित्त मंत्री है। आजकल चलने वाले क्रेडिट कार्ड, चैक, हुण्डी आदि भी धन के स्थानान्तरण के काम आते हैं।

गणेश, लक्ष्मी और तिजोरी का महत्व सदैव रहेगा क्योंकि धन का महत्व सदैव रहेगा। इस दीपावली पर एक तिजोरी खरीद कर ले जाये, पूजा अर्चना के बाद उस पर गणेश, लक्ष्मी का अंकन करें, लाभ शुभ लिखें, स्वास्तिक बनायें ताकि सभी प्रकार की ऋद्धियां-सिद्धियां तथा निधियां आपके घर परिवार में लक्ष्मीजी सहित सदैव विराजमान रहें।

–86, लक्ष्मी नगर, ब्रह्मपुरी बाहर
जयपुर-2 (राजस्थान)

रूहानी परम्पराओं में तालमेल

डॉ. एम. डी. थॉमस

नर्सरी के विद्यालय की कक्षा के बगल से होकर गुजरना एक अनूठी खुशकिस्मती होती है। कक्षा के बच्चों को शिक्षिका के पीछे-पीछे 'एक तितली, अनेक तितलियां' का पाठ जोर से दुहराते हुए सुनना एक बेहद खुशनुमा एहसास होता है। 'एक और अनेक' के बीच मेल-जोल की बुनियाद पर ही जिंदगी की इमारत खड़ी होती है। इस नजर से देखा जाए, इन दो शब्दों की मिली-जुली हकीकत में इस कायानात का राज पाया जाता है। दूसरे लफ्जों में कहा जाए, एक और अनेक खुदाई रचना की दो दिशाएं हैं या वे दो पटरियां हैं, जिन पर इंसानी जिंदगी की गाड़ी सुचारू रूप से चलती है।

'एक और अनेक' जिंदगी की दो नजरिए होते हैं। भाषा, जाति, प्रजाति, मजहब, तहजीब, विचारधारा आदि को लेकर सामाजिक जीवन में बेशुमार विविधताएं पायी जाती हैं। 'एक' की तरफ से देखा जाए, इनमें एक बुनियादी एकता है। 'अनेक' की तरफ से देखा जाए, ये सब अलग-अलग हैं। दोनों नजरिए अपनी-अपनी जगह एक जैसे सही हैं। अगर दोनों पहलुओं पर कुछ और करीब से गौर किया जाए तो पता चलेगा कि सहज तौर पर एक का रुझान अनेक की ओर है और अनेक का, एक की ओर। एक और अनेक एक-दूसरे के खिलाफ कतई न होकर सिक्के के दो पहलुओं की तरह एक-दूसरे के पूरक हैं। आपस में जुड़े रहने में दोनों पहलुओं की सार्थकता है। उनके आपसी तालमेल में ही इंसानी जिंदगी की कामयाबी और खुशी भी है।

'अनेक' का मतलब महज एक से ज्यादा होना नहीं है। अनेक के हर पहलू की अपनी-अपनी अहमियत होती है। हर पहलू में आपस में 'फर्क' है। फर्क के बारे में किसी-किसी को गलतफहमी होती है। लेकिन, फर्क गलत या बुरा न होकर सही और अच्छा है। फर्क का होना जरूरी भी है। मसलन नर और मादा में जो कुदरती फर्क है वह खुदा की अहम योजना है, जिसके बगैर जीने-बढ़ने की कल्पना तक कदापि मुनासिब नहीं होती। दोनों में जो फर्क है, वह उनकी खासियत है, खूबी भी है। सामाजिक जीवन की विविधताओं के दरमियान पाये जानेवाले भांति-भांति के फर्क किंचित भी नकारात्मक नहीं है। फर्क शाश्वत रूप से सकारात्मक गुण है। फर्क में ही जिंदगी की मलाई है और उसके रस से ही जीने की रूहानी राज उजागर होता है।

रूहानी जज्बात इंसानी जिंदगी की रीढ़ है। उसी के बलबूते और इर्द-गिर्द जीवन का खेल चलता है। इसमें भी एक और अनेक की आंखमिचौली चलती रहती है। रूहानी सोच मजहबी और गैर-मजहबी दोनों हो सकती है। दोनों रूह की साधना की दो राहे हैं। पहली राह मजहब के तौर-तरीकों को अपनाते हुए निजी भावनाओं के सहारे रूह को तलाशती है। दूसरी राह बाहरी हकीकतों की खोजबीन से भीतरी तत्व को टटोलती है। दोनों को पद्धति कुछ अलग होने पर भी सच में वे बराबर महत्व के हैं। रूहानी जज्बात दोनों में एक जैसी सक्रिय रहती है।

रूहानियत की दो दिशाएं होती हैं। एक लंबवत है और दूसरी समांतर। पहली व्यक्तिगत और दूसरी सामाजिक है। पहली निजी एहसासों को लिए चलती है और दूसरी औरों से जुड़ी हुई चलती है। एक अकेले और सीधे खुदा की तरफ चलने का रास्ता खोजती है और दूसरी साथी-सहेलियों के साथ उनके जरिये खुदा के पास पहुंचने का रास्ता ढूंढती है। पहली अपना बेड़ा पार करवाने के चक्कर में फंसी रहती है और दूसरी औरों की भलाई करने में मशगूल है। पहली दिशा खुद को खुदा के चरणों पर पेश करने को जीवन की मंजिल समझती है जबकि दूसरी दिशा अपने भाई-बहनों की मदद करने को जीवन का फर्ज मानती हैं। पहली दिशा अकेले चलने की है और दूसरी दिशा साथ चलने की। जिंदगी में कुछ समय के लिए और कुछ दूर चलने के लिए अकेले चलना ठीक माना जा सकता है। लेकिन पूरी जिंदगी और बहुत दूर चलने के लिए साथ-साथ चलना ही जायज है। रूहानियत की इन दोनों दिशाओं में संतुलन का होना जरूरी है।

रूाहानियत सिर्फ एक है। अलग-अलग रूहानियत नहीं होती है। यह इसलिए है कि रूह एक है उसे बांटी नहीं जा सकती है। यह बात जरूर है कि रूहानी जज्बात के अलग-अलग पहलू होते हैं। अलग-अलग मजहबी परम्पराओं में और गैर-मजहबी विचारधाराओं में भांति-भांति के जज्बातों के माने जाने की पूरी गुंजाइश रहती है। लेकिन, उन्हें एक-दूसरे की खासियत को समेटते हुए 'इंद्रधनुष' सरीखे एक इकाई के रूप में बनी रहनी होगी। उन्हें इस तरह एक-दूसरे से मिले हुए चलना होगा, जिस तरह सरिताएं मिलकर नदी बनकर सागर की ओर बहती है। जज्बातों के दरमियान आपसी सम्मान, बराबरी की भावना और साथ-साथ की भावना के होने से रूहानियत की सच्चाई परखी जाती है। विविध रूहानी परम्पराओं के आपस में तालमेल से ही असली रूहानियत का रूप उभरता है।

सारे कायनात में और खास तौर पर इंसान के भीतर प्राण के रूप में खुदा मौजूद है। उपनिषद की आत 'अहम ब्रह्मास्मि' इस हकीकत की ओर इशारा करती है। जब बाइबिल कहती है कि इंसान में 'ईश्वर की छाया' है तब यही बात कही जा रही है। ईंट-पत्थरों के मंदिर की जगह 'इंसान को ईश्वर की असली मंदिर' माना जाना चाहिए, जैसे बाइबिल का मानना है। अल्लाह या अलख की नूर से सब कुछ उपजा है, यही मान्यता है गुरुग्रंथ और कुरान की भी। निचोड़ यह है कि इंसान खुदा की औलाद है और हर इंसान एक दूसरे के लिए भाई-बहन के समान है। साथ ही खुदा का एहसास इंसानी जिंदगी का मर्म है। मिल-जुलकर रहना, एक दूसरे से प्यार-मुहब्बत से रहना एक-दूसरे की मदद करना, कमजोरों की तरजीही तौर पर थामना, साथ-साथ चलना आदि रूहानी जज्बात और एहसास की साफ निशानी है। ऐसी जीवनशैली ही रूहानी परम्पराओं में आपसी तालमेल मौजूद रहने का अमिट सबूत है।

–समन्वय सदन, बी-501
संघ मित्र अपार्टमेंट्स, प्लॉट-20
सैक्टर-4, द्वारका, नई दिल्ली-110078

क्रोध का सदुपयोग करें

रूपनारायण काबरा

क्रोध को संचित मत होने दो। कई लोग क्रोधित होकर बोलना बन्द कर देते हैं। क्रोध का शब्दों में प्रस्फुटन अर्थात् अभिव्यक्ति मन के आवेग को कुछ राहत अवश्य देती है और कई बार पूरा गुबार निकल जाता है और व्यक्ति पूरी तरह शान्त हो जाता है।

क्रोध जीवन का सत्य है क्योंकि सब कुछ हमारे मन-मुताबिक नहीं होता है और अवांछित, आकस्मिक व्यावसायिक हानि, अपमान अथवा किसी की अस्वीकृति या बेवफाई हमें क्रोधित कर देते हैं। और क्रोध में हम विवेक भूलकर भयंकर अपराध कर बैठते हैं अथवा हृदयाघात तक को आमंत्रित कर लेते हैं, रक्तचाप बढ़ जाता है। क्रोध तो भावनाओं की एक प्रतिक्रिया है और यदि इसे स्वीकार कर स्वस्थ अभिव्यक्ति नहीं देते हैं तो परिणाम दुर्भाग्यपूर्ण हो जाते हैं।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार क्रोध तो सभी को आता है पर हम क्रोध से कैसे निबटते हैं इसी पर निर्भर करता है हमारा स्वास्थ्य अथवा रोग, विवेकहीन विनाश अथवा रचनात्मक गतिविधि, सुख अथवा दुख एवं निराशा। महत्वपूर्ण बात है यह जानना स्वीकारना कि हम क्रोधित हैं। क्रोध जो अंदर ही अव्यक्त रह जाता है उसमें घुट-घुट कर हम स्वयं एवं हमारे प्रियजनों को दु:ख उठाना पड़ता है। सही बात यह है कि हमारे अन्तर में व्याप्त क्रोध को स्वस्थ अभिव्यक्ति देना अधिकांश लोग नहीं जानते। कभी-कभी हमारा अंदर दबा क्रोध दूसरों की सुख-शान्ति छीन लेता है। एक क्रोधित कामकाजी महिला घर और कार्यालय दोनों ही जगह अशान्ति पैदा कर देती है अपने क्रोधजनित व्यवहार से क्रोधित व्यक्ति ड्राइविंग में दुर्घटना का शिकार हो सकता है। चिकित्सकों की शोध के अनुसार क्रोध को अभिव्यक्त नहीं करने से पेट में अल्सर हो जाते हैं, रक्तचाप भी बढ़ जाता है, अनिद्रा एवं भूख नहीं लगने की शिकायत पैदा हो जाती है, व्यक्ति चिड़चिड़ा हो जाता है, माइग्रेन (सिरदर्द) हो जाता है। अनेकों बीमारियां प्राय: इसलिए नहीं होती हैं कि हम क्या खा रहे हैं बल्कि हमको क्या 'चीज' अन्दर ही अन्दर खाये जा रही है, इससे होती हैं। हताशा और उससे उत्पन्न क्रोध को टाला नहीं जा सकता। आपके शारीरिक एवं संवेगात्मक स्वास्थ्य के लिये भी क्रोध की महान शक्ति का उपयोग किया जा सकता है।

इस तथ्य को लोग सहज में स्वीकार नहीं करते पर यह सच है कि हम कई बार अपनी प्रिय पत्नी और अपने प्यारे बच्चों पर भी भयंकर रूप से क्रोधित हो उठते हैं। एक मां थी जिसके वर्षों की प्रतीक्षा के पश्चात एक पुत्र हुआ, स्वस्थ और सुन्दर। उसके बड़ा होने पर उस पर बार-बार क्रोध करके वह विषादग्रस्त हो गई एवं एक अपराधबोध से घिर गई और मनोचिकित्सक के पास परामर्श हेतु गई। चिकित्सक ने बताया कि यह क्रोध उतना ही स्वाभाविक है जितना उसका प्रेम। संतान के खातिर उसे अपनी नौकरी

छोड़नी पड़ी थी और कहीं भीतर इसका भी अफसोस था क्योंकि कार्य के बिना भी एक ऊब आती है। सारी बात समझने पर उसका क्रोध और दुख दूर हो गया।

यह मालूम करें कि आपके क्रोध का वास्तविक कारण क्या है। कई बार हम गलत समय, गलत व्यक्ति और गलत कारण पर क्रोध करते हैं और बलि का बकरा किसी और को बनाते हैं। घर में पत्नी से झगड़ने पर अध्यापक कक्षा में बच्चों पर क्रोध करता है अथवा कार्यालय में बॉस से अपमानित होकर, डांट खाकर पति किसी भी सामान्य कारण पर पत्नी पर बरस पड़ता है। क्रोध के वास्तविक कारण का विवेचन-विश्लेषण करना उचित होगा।

क्रोध को संचित मत होने दो। कई लोग क्रोधित होकर बोलना बन्द कर देते हैं। क्रोध का शब्दों में प्रस्फुटन अर्थात् अभिव्यक्ति मन के आवेग को कुछ राहत अवश्य देती है और कई बार पूरा गुबार निकल जाता है और व्यक्ति पूरी तरह शान्त हो जाता है। कई समझदार माता-पिता अपने स्वयं के आचरण द्वारा अपने बच्चों को यह सिखा देते हैं कि अपनी खीझ या क्रोध को मन में रखने के बजाय सीधे कह डालो पर संयम के साथ, अहिंसक तरीके से। वे सीख जाते है कि जिस प्रकार ग्रीष्मकालीन तूफान एवं वर्षा के बाद वातावरण में एक ताजगी आ जाती है और इसके बाद स्नेहिल वार्तालाप भी हो सकता है।

एक प्रौढ़ कर्मचारी को उसके युवा बॉस की कुटिल मुस्कान, चुटीले व्यंग्य एवं आलोचना ने परेशान कर रखा था। वह बोलना चाहकर भी कुछ नहीं बोल पाता था और अन्दर ही अन्दर घुटता रहा। उसका व्यवहार और भी नकारात्मक होता चला गया। अत्यन्त दुखी होकर वह मनोचिकित्सक के पास गया। उसने सलाह दी कि संयम के साथ, बिना उत्तेजित हुये, पूरे सम्मान सहित बॉस से बिना कटुता के अपनी बात, अपना दर्द कह डालो, घुटते रहोगे तो तुम स्वयं ही अपने आपको खाते रहोगे। युवा बॉस को सारी बात, सारी स्थिति समझ में आ गई और उसने प्रौढ़ कर्मचारी की आहत भावना को समझा और उसके साथ सम्मानजनक व्यवहार करने लगा। समस्या हल हो गई। इस संदर्भ में प्रसिद्ध अंग्रेज कवि विलियम ब्लैक की कविता की पक्तियां कुछ इस प्रकार हैं- ''मैं कुपित था मित्र से मैंने अपना क्रोध जताया और क्रोध समाप्त हो गया, मैं अपने शत्रु से कुपित था मैं अन्दर सुलगता रहा, क्रोध बढ़ता रहा।''

अन्तर व्याप्त सुलगता क्रोध एक प्रकार का टाइम-बम है। यदि इसे निरस्त, निष्क्रिय नहीं किया गया तो यह रिश्तों को, एक जीवन को या समग्र परिवार को समाप्त कर सकता है।

क्रोध कार्य निष्पादन भी करता है। छोटी बड़ी सभी समस्याओं को क्रोध की अग्नि ने समाप्त भी किया है। बिना क्रोध के अन्याय को चुनौती कौन दे सकता है? जब क्रोध को सीधी अभिव्यक्ति नहीं दी जा सकती तो अन्य (आउटलेट्स) मार्ग या निकास आवश्यक हो सकता है। लकड़ी काटना, बागवानी, कमरे की पेन्टिंग, किसी भी प्रकार की शारीरिक गतिविधि अत्यन्त प्रभावी सिद्ध होती है। इससे क्रोध का तनाव दूर होकर चित शान्त और संयत हो जाता है। क्रोध की अवस्था में किसी पार्क या अन्य प्राकृतिक स्थल में तेज गति से टहलना एवं थोड़ा प्राणायाम भी उचित समाधान है। प्राणायाम के साथ ओम की ध्वनि भी क्रोध का शमन करती है।

अत: क्रोध को अपना शोषण मत करने दो। इस ऊर्जा के सदुपयोग का रास्ता तलाशो। यह स्वयं को सुधारने का एवं रचनात्मक गतिविधियों का एक स्वस्थ साधन भी हो सकता है। क्रोध एक ऊर्जा स्रोत है इसे विनाश की ओर मत जाने दो, इसका सदुपयोग करो।

-ए-438, किशोर कुटीर
वैशाली नगर, जयपुर-302021

प्रगति के सोपान

श्री आनंदमूर्ति

आध्यात्मिक प्रगति तीन तत्वों के ऊपर निर्भर है- 'प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया', प्रणिपात, परिप्रश्न तथा सेवा। प्रणिपात के मायने हैं एक अद्वितीय शाश्वत सत्ता परम पुरुष के प्रति पूर्ण आत्मसमर्पण। इस दिशा में साधक का मनोभाव होता है कि विश्व का जो कुछ है, सभी परम पुरुष का है। हमारा कुछ नहीं है। यही है प्रणिपात। जिसे अहंकार है, जो सोचता है, विद्या-बुद्धि, धन-संपत्ति या अन्याय वस्तुएं उसकी संपत्ति है, वह सबसे बड़ा मूर्ख है। सबसे खराब मानसिक बंधन है मिथ्या अहंकार, क्योंकि इस विश्व का सब कुछ परम पुरुष के पास मनुष्य को सोलह आना आत्मसमर्पण करना उचित है। मानसिक अग्रगति के लिए यह है कि एक अपरिहार्य शर्त।

जीवित सांड को देखोगे कि बीच में वह गर्जन कर बोलता है 'हमा' अर्थात मैं...मैं... किन्तु उसकी मृत्यु के बाद उसके ही चमड़े से सूक्ष्म तांत से तैयार धनुषी से आवाज निकलती है केवल तूं...तूं...तूं... (तुम, तुम, तुम)। किसी की क्षमता, संपत्ति, पद-मर्यादा, सौन्दर्य, सम्मान, वित्त, अर्जित ज्ञान, किसी चीज को लेकर अहंकार करना उचित नहीं है। सर्वदा याद रखना

होगा हम सब के मालिक हैं परम पुरुष, हमारा कुछ नहीं है। परिप्रश्न कहने से उन सभी प्रश्नों को समझा जाता है, जिनका उत्तर मनुष्य जानकर आध्यात्मिक उन्नति लाभ करता है। पाण्डित्य प्रकट करना या प्रश्न के लिए प्रश्न करने से मनुष्य का समय और शक्ति का बेकार अपव्यय होता है। ये सब एकदम बेकार की चीजें हैं। परिप्रश्न को छोड़कर अन्य किसी प्रश्न का रहना भी उचित नहीं है।

सेवा यानी नि:स्वार्थ सेवा। यथार्थ सेवा वहीं संभव है, जहां प्रतिदान में कुछ भी पाने की अभिलाषा न रहे। जहां कुछ देने पर कुछ पाने की वासना रहे, उसे सेवा नहीं कहेंगे, उसे व्यवसाय कहेंगे। बहुत समय अनेक समाचार पत्र के स्तंभ में व्यवसाय प्रतिष्ठान का विज्ञापन दृष्टिगोचर होता है- 'इतने साल से आप लोगों की सेवा में।' नहीं, यह सेवा नहीं है, यह व्यवसाय है, क्योंकि इस क्षेत्र में विक्रेता बिना कुछ लिए कुछ देता नहीं है। एक शब्द है, जो प्राय: भक्त लोग बोलते हैं, वह है प्रपत्ति। प्रपत्ति माने संपूर्ण आत्मसमर्पण। अर्थात भाव यह है कि वही चरम दैवी सत्ता परमात्मा ही सब कुछ करते हैं, मनुष्य कुछ करता नहीं है, परम पुरुष की इच्छा से ही सब कुछ होता है।

प्रणिपात, परिप्रश्न, सेवा तीन तत्व को मनुष्य मानकर चले तो मनुष्य की अग्रगति होगी ही। इसके अलावा अन्य कुछ भी तुम्हारा उपकार नहीं करेगा। याद रखो, अति अल्प काल के लिए तुम इस पृथ्वी पर आए हो, इसलिए समय और सुयोग का पूर्ण रूप से सद्व्यवहार करो, जगत की सेवा करते जाओ, जागतिक, मानसिक और आध्यात्मिक जीवन के सभी स्तरों में सेवा कार्य चलाते जाओ। ●

सफलता के लिए वास्तु उपाय

डॉ. प्रेम गुप्ता

आज अर्थयुग है और महंगाई का राज भी। हर व्यक्ति कम इनकम तथा ज्यादा खर्च से परेशान है। सुरसा के मुंह की तरह फैलती महंगाई से यदि आपके घर का भी बजट गड़बड़ा गया हो या आप से ज्यादा खर्च होता है अथवा परिवार में अशांति रहती है और धन कमाने के आपके सारे प्रयास भी व्यर्थ साबित हो रहे हों, तो भगवान की कृपा प्राप्ति हेतु भगवान को प्रसन्न करने के लिए पूजा कक्ष में लाल रंग का प्रयोग ज्यादा से ज्यादा करें। क्योंकि लाल रंग सौभाग्य का सूचक माना जाता है।

जहां आप बटुआ रखते हों, उस स्थान को भी लाल व पीले कलर से रंग दें। कुछ ही दिनों में फर्क महसूस होगा। यदि आपको लगता है कि आपसे कोई ईर्ष्या करता है, आपके कई दुश्मन हो गए हैं। हमेशा असुरक्षा व भय के माहौल में जी रहे हों, तो मकान की दक्षिण दिशा में से जल के स्थान को हटा दें। इसके साथ ही एक लाल रंग की मोमबत्ती आग्नेय कोण में तथा एक लाल व पीली मोमबत्ती दक्षिण दिशा में नित्यप्रति जलाना शुरू कर दें। घर में बेटी जवान है, उसकी शादी नहीं हो पा रही है, तो एक उपाय करें- कन्या के पलंग पर पीले रंग की चादर बिछाएं, उस पर कन्या को सोने के लिए कहें। इसके साथ ही बेडरूम की दीवारों पर हल्का रंग करें। ध्यान रहे कि कन्या का शयन कक्ष 'वायव्य कोण' में स्थित होना चाहिए।

कभी-कभी ऐसा होता है कि व्यक्ति सर्वगुण संपन्न होते हुए भी बेरोजगार रह जाता है। वह नौकरी के लिए जितना अधिक प्रयास करता है, उसकी कोशिश विफल होती जाती है। इसके लिए व्यक्ति भाग्य को जिम्मेदार ठहराता है। लेकिन अपने भाग्य को कोसने के बजाय एक उपाय करें।

नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाएं तो जेब में लाल रूमाल या कोई लाल कपड़ा रखें। संभव हो तो, शर्ट भी लाल पहनें। आप जितना अधिक लाल रंग का प्रयोग कर सकते हैं, करें। लेकिन यह याद रखें कि लाल रंग भड़कीला ना लगे सौम्य लगे, रात में सोते समय शयन कक्ष में पीले रंग का प्रयोग करें। ध्यान रखें, लाल, पीला व सुनहरा रंग आपके भाग्य में वृद्धि लाता है। अत: हमेशा इन्हें अपने साथ रखें व इन रंगों का व्यवहार ज्यादा से ज्यादा करें, सफलता मिलेगी।

जीवन में पीले रंग को सफलता का सूचक कहा जाता है। पीला रंग भाग्य में वृद्धि लाता है। कन्या की शादी में पीले रंग का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग किया जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि कन्या ससुराल में सुखी रहेगी। विवाह निर्विघ्न होने की शुभ सूचना वस्तुत: हल्दी से संपन्न होती है, क्योंकि हल्दी में गणेशजी की उपस्थिति माना जाता है और जिस कार्य में गणेशजी स्वयं उपस्थित हों, उस कार्य को पूरा करने में विघ्न कैसे आ सकता है।

-315, कमला स्पेस,
खीरा नगर के समीप, एस.वी.रोड,
सांताक्रुज (वेस्ट) मुम्बई-400054

जो सच्चा गुरु है, वह कोई भी उपदेश नहीं देता

श्रीराम शर्मा आचार्य

एक बार मैं कांगो गया। जिस इलाके में गया था, वहां आदमियों की लंबाई कोई ऐसी ही होती है- तीन और चार फुट के बीच। प्राय: वे नंगे रहते हैं। औरतें पत्तों से अपना तन ढक लेती हैं। वे खेतीबाड़ी नहीं करते, छोटे-छोटे भाले और छोटी-छोटी लाठियां लिए फिरते हैं। उन्हीं से मेंढक, चूहे, चिड़ियां आदि का शिकार करते हैं।

जब मैं गया था, उनके बीच स्विट्जरलैंड के एक पादरी काम कर रहे थे। कहते थे, ईसा एक भेड़ को, जो भटक गई थी, कंधे पर रखकर वापस लाए थे। ये लोग भी उन्हीं भटकी हुई भेड़ों की तरह हैं। इन्हें प्यार से अपने कंधों पर लेकर सभ्य जगत में लाना होगा। हम इन्हीं की सेवा करेंगे।

वे वहीं रहने लगे। वहां न डाकखाना था, न सड़कें थी, न कोई सवारी, न मनोरंजन का कोई साधन- कुछ भी नहीं था। जंगल में रहते थे। वहां पानी के जहाज कभी-कभी आते थे, वही कुछ सामान छोड़कर चले जाते थे- हजामत बनाने के लिए ब्लेड, चाय के पैकेट आदि ईसाई मिशन उन्हें भेज देते थे। उसी से पादरी का गुजारा चलता था। इसी स्थिति में उन्होंने वहां चालीस साल गुजारे।

उन कांगों वासियों को वे साफ-सुथरा रहना सिखाते। उनमें से कुछ लोगों को पढ़ने-लिखने के लिए भी प्रेरित करते थे। उन्हें खेती करने और बेहतर जीवन जीने का तरीका बताते थे।

वे पादरी सज्जन कौन थे? वे सच्चे साधु थे। मेरे मन में आया कि इनके चरण धोकर ले चलूं और अपने यहां के बाबाजीओं और गुरुजीओं पर छिड़क दूं। कौन से गुरुजी? ये साठ लाख लोग जो हमारे देश में दाढ़ी-बाल बढ़ाएं, जोगिआ पहने घूम रहे हैं। सात लाख गांव और साठ लाख बाबाजी। हर गांव पीछे साढ़े आठ बाबाजी आते हैं। यह तो बहुत ज्यादा है। एक गांव में जो एक भी सच्चे गुरुजी या बाबाजी आ बसें, तो अशिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, गंदगी और पिछड़ेपन आदि की जितनी भी समस्याएं हैं, वे सब ठीक हो जाएं।

लेकिन यहां तो शुरू से आखिर तक ढोंग है। सब बाबाजी लोग इस देवता की पूजा, तो उस देवता की पूजा की आड़ में जो मन में आए, वह करते हुए पाए जाते हैं। तब क्या करना पड़ेगा? वह करना पड़ेगा, जो हमारी संत परम्परा के अनुरूप है। हम घर-घर जाएं और जनजागरण का शंख बजाएं। जलता हुआ दीपक जहां भी जाएगा, वहां प्रकाश पैदा करेगा। पर ऐसा नहीं होता। गुरुजी लोग घर-घर जाते तो हैं, पर कोई सुधार नहीं होता। उपदेश सुनाते हैं पर सुधार नहीं होता। ऐसा क्यों?

एक बार एक घर में चोर घुस गया। घर वाले चिल्ला रहे थे कि घर में चोर आ गया। गांववाले दौड़ कर आए। कहां गया चोर? चोर ने देखा कि यह तो बड़ी भारी भीड़ आ गई। अब क्या करना चाहिए? घर वाले चिल्ला रहे थे कि चोर को पकड़ो। चोर भी चिल्लाने लगा कि चोर को पकड़ो। देखो, वह इधर गया, वह उधर गया।

भीड़ भागती रही और चोर भी उन्हीं के बीच भागता रहा और चिल्लाता रहा। गुरुजी लोग भी उसी तरह चिल्ला रहे हैं। सब चिल्ला रहे हैं, अनैतिकता को भगाओ, पाप को भगाओ। उनके साथ लोग भी चिल्ला रहे हैं। परन्तु भगायेगा कौन? लोक-शिक्षण कैसे होगा? वह होगा गुरु के चरित्र से। गुरु चरित्रवान होगा, तो उपदेश की जरूरत नहीं होगी। पाप को भगाओ, ऐसा कहने की जरूरत नहीं होगा।

वाणी हो, चाहे न हो, गुरु गूंगा हो तो भी कोई हर्ज नहीं। पांडिचेरी के अरविंद घोष गूंगे हो गए थे। उन्होंने बोलना बंद कर दिया था। महर्षि रमण गूंगे हो गए थे। उन्होंने भी बोलना बंद कर दिया था। बिना बोले भी आप माहौल को ठीक र सकते हैं। शिष्यों का चरित्र बदल सकते हैं। लेकिन तभी, जब गुरु का अपना चरित्र अनुकरणीय हो। ●

शून्य का अनुभव करना परमानंद को पाने जैसा

प्रेम रावत 'महाराजी'

क्या है शून्य? यह है उस परमात्मा का अनुभव। यह है उस 'शून्य' का अनुभव जो सारी सृष्टि में व्याप्त है। उस सृष्टि में भी है, जिस सृष्टि का मनुष्य को कुछ पता नहीं है, वहां भी है यह। समय के आखिरी छोर तक है और समय से पहले भी है। वह हर एक जगह है।

अध्यात्म में शून्य की महिमा का बखान सदियों से होता रहा है। अब तो विज्ञान और गणित भी शून्य के महत्व को स्वीकार करता है। जानते हो कि कहां से आया शून्य। किसने दुनिया की पहचान इस शून्य से कराई। शून्य के अस्तित्व को सबसे पहले भारतवर्ष में पहचाना गया। यहीं इसकी अवधारणा विकसित हुई। जब यहां के आचार्य लोग शून्य की परिभाषा को विदेश में ले गए तो वहां के कई धार्मिक लोगों ने नाराजगी जताते हुए कहा, 'ऐसा हो ही नहीं सकता। शून्य जैसी कोई चीज होती ही नहीं है।'

पर यदि शून्य नहीं होता तो जरा सोचिए कि आज इंसान ने जो उन्नति कर ली है, वह संभव हो पाती। आज जो हर दूसरा आदमी अपने हाथों में मोबाइल और कम्प्यूटर लिए नजर आता, क्या वे मोबाइल और कम्प्यूटर होते? ये कम्प्यूटर क्या हैं? इन्हें चलाने का आधार क्या है? यह आधार है 1 और 0 जैसे कि ऑन और ऑफ।

शून्य! उसमें 'सब कुछ' है और 'कुछ भी नहीं' है। कहां है वो 'शून्य' तुम्हारे 'अनुभव' है, अगर तुम उसको समझना चाहते हो, तो अंदर की आंखें खोलनी पड़ेंगी, तब तुम्हें समझ में आएगा कि 'परमानंद' क्या चीज है?

कई लोग कहते हैं कि हमें तो कुछ भी अनुभव नहीं होता है। मैं कहता हूं लोगों से कि तुम्हारे दो हाथ हैं, तुम्हारा सिर भी है, तुम्हारे पैर भी हैं। जब तुम्हारे हाथों में कोई खुजली नहीं होती, मतलब कि हाथ सामान्य अवस्था में होते हैं। तब तुम क्या अनुभव करते हो? कुछ नहीं जैसे हाथ हैं ही नहीं। पर होते हैं- अंग्रेजी में इस दिशा को कहते हैं, 'नल पॉइंट', यानी जीरो।

क्या है जीरो? क्या है शून्य? यह है उस परमात्मा का अनुभव। यह है उस 'शून्य' का अनुभव जो सारी सृष्टि में व्याप्त है। उस सृष्टि में भी है, जिस सृष्टि का मनुष्य को कुछ पता नहीं है, वहां भी है यह। समय के आखिरी छोर तक है और समय से पहले भी है। वह हर एक जगह है।

जब तुम्हें इस शून्य का अनुभव होगा, तो उसके बाद तुम्हारे आस-पास कितना भी दुखी क्यों न हो, उस दुख के बावजूद अपने अंदर परमानंद का अनुभव करोगे। कहोगे कि मैं कितना धनी हूं? कहा है कि इस संसार के अंदर निर्धन कोई नहीं है। सब धनी हैं। सबकी गठरी लाल है। बस, उस गठरी को खोलना नहीं जानते हैं- 'इस विधि भयो कंगाल।' यानी इस वजह से कंगाल के कंगाल रह गए। कुछ नहीं हाथ लगा।

इस संसार के अंदर आए, जो खोजा, वह मिला भी। और फिर क्या हो जाता है मनुष्य के साथ? फिर वह छोटी-छोटी बातों में खो जाता है। कोई भी व्यक्ति खो देने के लिए ज्ञान को नहीं पाता है। ज्ञान को पाने का अर्थ है अपने आपको पाना, अपने आपको समझना, अपने अंदर स्थित उस शांति का अनुभव करना, अपने अंदर स्थित उस परमात्मा का अनुभव करना।

कई लोग कहते हैं 'महाराजी', हम अकेलापन महसूस करते हैं। मैं कहता हूं कि तुम्हें अकेलापन महसूस करने की क्या जरूरत है? तुम जहां भी जाओ, तुम्हारा परमपिता परमेश्वर, तुम्हारा परम मित्र तुम्हारे साथ है। तुम्हें वह कभी अकेला छोड़ देगा, बस, सब गया। वह तो आखिरी समय तक तुम्हारे साथ रहेगा। उससे यारी करो। वह जो अनुभव है, चाहे थोड़ी देर ही रहे, परन्तु आनंददायक होता है। जिस किसी ने परमात्मा के साथ कुछ क्षण बिताए हैं, उसने इस शरीर में रहते हुए खेद के भी अविनाशी होने का अनुभव किया है। जब मनुष्य अविनाशी होने का अनुभव करता है, तो फिर न कल है, न परसों। न ऊपर है, न नीचे है। न आशा है, न निराशा है। सब सम हो जाता है। समय रुक जाता है। यही है असली शांति का अनुभव। ●

-: सूचना :-

'समृद्ध सुखी परिवार' मासिक पत्रिका के आगामी अंकों में स्वयंसेवी संगठनों, सार्वजनिक उपक्रम (पीएसयू), व्यावसायिक घरानों के जनकल्याणकारी उपक्रम पर विशेष सामग्री का प्रकाशन किया जा रहा है। आपसे निवेदन है कि आप अपने संगठन और जनकल्याणकारी उपक्रम की सचित्र जानकारी, आलेख हमें निम्न पतें पर प्रेषित करें-

संपादक

समृद्ध सुखी परिवार

ई-253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट, 25, आई.पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, नई दिल्ली-110092
फोन: 011-26782036, 26782037 मोबाइल: 09811051133

अध्यात्म के दीपक से जीवन में उजाला लाएं

रमेश भाई ओझा

यह बात जीवन में ध्यान रखना कि अगर अंधकार एक समस्या है तो दीपक उसका समाधान है। दीया तुम्हारे रास्ते को रोशन करेगा। तुम चलना तो शुरू करो। लेकिन लोगों का ध्यान समस्या पर ज्यादा जाता है। हर चीज में उन्हें समस्या ही समस्या दिखाई देती है। तुम दीया लेकर आगे तो बढ़ो। तुम जितना आगे बढ़ोगे उसके आगे का मार्ग यह दीपक रोशन कर देगा। तुम्हारा मार्गदर्शन करता जाएगा और तुम्हें लक्ष्य तक पहुंचा देगा। इस दीपक को साधारण मत समझो। यह तो अध्यात्म का दीपक है। अध्यात्म का दीपक अपने जीवन में जलाओगे, तो अपने आप जीवन में उजाला होता चला जाएगा।

अध्यात्म के दीपक रूपी रामायण, गीता और श्रीमद्भागवत व अन्य ग्रंथ व शास्त्र हमारे पथ प्रदर्शक हैं। ये ऐसे दीपक हैं जो हमें जीवन में सही राह दिखाते हैं। सद्गुरुओं ने तुम्हारे हाथ में यह जो दीपक थमा दिया है, बस उसे हाथ में लेकर संकल्प करो और चल पड़ो। मगर कई लोग तो हाथ में दीपक लेकर बस खड़े ही रहते हैं। प्यास अगर वास्तव में लगी है, कहीं पहुंचने की इच्छा है, लगन है, निष्ठा है, दृढ़ संकल्प है, तो फिर अभी से जहां हो, वहीं से इस राह पर चलना आरंभ कर दो।

यदि अंधेरे को कोसते रहोगे, चर्चा ही करते रहोगे तो तुम कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाओगे। बल्कि कहीं भी नहीं पहुंच पाओगे। जीवन में एक बार अध्यात्म का दीया तो जलाओ फिर देखो तुम्हारा जीवन खुशी और आनंद से भर जाएगा।

यदि अंधेरे को कोसते रहोगे, चर्चा ही करते रहोगे तो तुम कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाओगे। बल्कि कहीं भी नहीं पहुंच पाओगे। जीवन में एक बार अध्यात्म का दीया तो जलाओ फिर देखो तुम्हारा जीवन खुशी और आनंद से भर जाएगा।

कहने का तात्पर्य यह है कि अध्यात्म का दीपक जलाकर इसी जीवन में ईश्वर के करीब पहुंच सकते हो। ईश्वर के पास पहुंचने का इरादा पक्का होना चाहिए। दृढ़ निष्ठा होनी चाहिए। उसके लिए तीव्र प्यास होनी चाहिए। इच्छा तो करो, फिर उपाय तैयार मिलेगा। हमें तो केवल प्रभु की शरण में समर्पित हो जाना चाहिए। अपने कदम आगे बढ़ाओगे, तो वह स्वयं दौड़कर आएगा। ध्यान रखना यह जीवन उसी की कृपा से चल रहा है। परमात्मा ने ही तो हमें मानव बनाया है। वही तो है इस दुनिया को चला रहा है। लेकिन इंसान यह गलतफहमी पाल लेता है कि प्रकृति उसके नियंत्रण में है। जैसा वह चाहेगा, कर लेगा। पर प्रकृति अपना रौद्र रूप दिखाकर साबित करती है कि कुछ भी इंसान के नियंत्रण में नहीं है। इसलिए हमें यह जो जीवन मिला है, उसके लिए परमात्मा का आभार व्यक्त करना चाहिए। उसे सिर्फ अपने लिए ही नहीं, प्रकृति और उस समाज के उत्थान के लिए भी कुछ करना चाहिए जिसमें वह रहता है। किसी भी व्यक्ति को कभी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि मुझे समाज की क्या जरूरत?

असल में समाज ही तो है जिससे उसे संस्कार मिलते हैं। जिससे उसके जीवन को कोई उद्देश्य मिलता है। इसलिए हमें अपने समाज के लिए कुछ न कुछ त्याग अवश्य करते रहना चाहिए। अहसहायों की मदद, आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के परिवारों की चिकित्सा, उनके बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था- ऐसे कार्य करने चाहिए। संपन्न लोगों के लिए तो यह और भी जरूरी है कि ऐसे कार्य नियमित करें। समाज और राष्ट्र के प्रति ऐसे कार्य करना उनका कर्तव्य ही नहीं बल्कि उनका धर्म है।

वैसे आज लोगों में अहंकार काफी बढ़ गया है। असल में लोग भूल रहे हैं कि संसार में जो कुछ है वह परमात्मा का है। हमारे ऋषि-मुनि यही बात तो कहते हैं कि यह संपत्ति प्रभु की है। लक्ष्मी के स्वामी भगवान हैं। हमारे पास यदि आज कुछ है तो वह प्रभु का प्रसाद है। इसलिए उसका दुरुपयोग न करें। विनय और आदर से उसका सदुपयोग करें। प्रसाद रूपी संपत्ति का समाज में बराबर स्नेह भरा विभाजन हो, यही विचारधारा है यज्ञ की। कोशिश करनी चाहिए कि कोई भूखा न रह जाए, कोई दीन हीन न रहे, कोई वस्त्रहीन न रहे। कोई विद्यार्थी शिक्षा से वंचित न रह जाए। ●

आवश्यकता है

`समृद्ध सुखी परिवार' मासिक पत्रिका के लिए विज्ञापन प्रतिनिधि की। ग्राहक बनाने वाले इच्छुक व्यक्ति भी संपर्क करें। प्रभावी कमीशन की व्यवस्था है।

संपर्क करें–

संपादक

समृद्ध सुखी परिवार

ई–253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट

25, आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज,

दिल्ली–110092

फाने: 011–22727486

मो. 9811051133

वैज्ञानिक ऋषि दयानंद

डॉ. तारा सिंह

सोलहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में इटालियन खगोलशास्त्री गैलिलियो ने पश्चिमी जगत को बताया कि सूर्य नहीं, पृथ्वी घूमती है। इस पर चर्च बेहद नाराज हुआ और गैलिलियो को सजा दी गई कि वह इस बात को दोहराता रहे कि सूर्य घूमता है पृथ्वी नहीं। कोई धर्म कहता है कि पहाड़ इसलिए बनायें कि पृथ्वी हिले नहीं जबकि यह हर समय घूमती है इसी तरह खगोल विद्या को न जानने वाले कहते हैं आसमान फट जायेगा जबकि आसमान होता ही नहीं, यह अंतरिक्ष अनंत है।

ऋषि दयानंद सरस्वती ने स्पष्ट कहा कि विज्ञान का मूल वेदों में है और वेद ईश्वरीय ज्ञान है। उन्होंने ग्रहों के आकर्षण, सृष्टि उत्पत्ति, गणित, ज्योतिष, यज्ञ से पर्यावरण शुद्धि के समस्त उदाहरण वेदों से दिए-

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः।

–यजुर्वेद के मंत्र 3/6

यह भूगोल (पृथ्वी) जल सहित सूर्य के चारों ओर घूमता जाता है। इसी तरह अथर्ववेद के मंत्र में- दिवि सोमो अधिश्रितः अर्थात यह चन्द्र लोक सूर्य से प्रकाशित होता है।

अंग्रेजी शिक्षा से पूरी तरह अनभिज्ञ ऋषि दयानंद सरस्वती ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में स्पष्ट लिखा है ''परमाणु उसे कहते हैं जिसका विभाग फिर कभी न हो सके परन्तु यह बात केवल एकदेशी है क्योंकि उसका भी ज्ञान से विभाग हो सकता है। जिसकी परिधि व्यास बन सकता है। उसका भी टुकड़ा हो सकता है यहां तक कि जब पर्यन्त वह एक रस न हो जाए तब पर्यन्त ज्ञान से बराबर कटता ही चला जाएगा।''

सन् 1876 में ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखी गई थी। इसके 21 साल बाद सन 1897 में जे. जे. थॉमस ने पहली बार परमाणु के विभाजन में सफलता प्राप्त की इलेक्ट्रॉन की खोज हुई। रदरफोर्ड ने 1918 में परमाणु को पुनः विभाजित करने में संपन्न हुए। उनके पश्चात चैडविक ने सन् 1932 में परमाणु में फिर से विभक्त कर दिया।

परमाणु इस तरह इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और न्यूट्रॉन में विभक्त किया गया। ऋषि दयानंद ने जो लिखा है वह सत्य हुआ ऐसे वैज्ञानिक थे दयानंद।

केसर, अश्वगंध, शिलाजीत, शतावर, सफेल मूसली आदि जड़ी-बूटी के औषधीय गुण लाखों करोड़ों रुपयों से बनी प्रयोगशाला में नहीं ज्ञात हुए बल्कि समाधि व योग से ज्ञात हुए हैं।

कणाद विश्व के प्रथम रसायनशास्त्री कुटिया में रहते थे। प्रथम सर्जन सुश्रुत का जीवन सादगी भरा था। इन लोगों ने स्वर्ण, रजत, मोती, हीरा, पन्ना आदि भस्में मनुष्य के उपचार के लिए बनाई।

सूट टाई बांधे, बड़ी-बड़ी प्रयोगशाला में काम करके अपने ज्ञान के बेचने वालों की खोज संदेहयुक्त होती हैं। चिकित्सा के नाम पर मूक जानवरों पर प्रयोग जबकि मनुष्य व जानवरों की प्रकृति में बड़ा अंतर होता है। इन दवाओं के साइड इफैक्ट मुफ्त में मिलते हैं। आज यही उपचार है कि दवा खाते रहो। प्राचीन आयुर्वेद कहीं लुप्त हो गया है। जर्मनी वाले ने राष्ट्रभक्ति का परिचय देकर होम्योपैथी को विश्व में फैला दिया है।

–हरिनगर, मेरठ-250002 (उ.प्र.)

चंचला से अचला

■ डॉ. श्याम मनोहर व्यास

काफी पुरानी बात है। गुजरात के पाटन नगर में एक सेठ धन्नाशाह रहते थे। उनका व्यापार काफी अच्छा चलता था। घर में सुख-समृद्धि थी। लक्ष्मीजी की कृपा से हर वर्ष घर में धन-वैभव में बढ़ोतरी होती गई। भरा-पूरा परिवार था। एक दिन सेठ को स्वप्न में लक्ष्मीजी ने दर्शन दिए और उससे कहा-''तुम्हारे यहां रहते-रहते मुझे काफी समय हो गया है, अब मैं इस घर से जा रही हूं। मैं तुमसे प्रसन्न हूं, तुम चाहो तो मेरे से कोई वरदान मांग लो।''

सेठ ने कहा-''देवी, आप मुझे एक दिन का समय दीजिए ताकि इस बारे में घर वालों से भी सलाह मशविरा कर सकूं।''

लक्ष्मीजी ने एक दिन की मोहलत दे दी। अगले दिन सेठ ने अपने परिजनों से सलाह ली। सबने अलग-अलग राय दी। जब छोटी बहू का नम्बर आया तो कुछ सोचकर बोली-''पिताजी, मेरी मानें तो आप उनसे यह वर मांगे कि हमारे घर में कलह न हो, सुख-शांति बनी रहे और आपस में प्रेम बना रहे।''

छोटी बहू की बात सेठ को जंच गई। रात्रि को स्वप्न में फिर लक्ष्मीजी ने दर्शन दिए। सेठ ने बहू की कही बात लक्ष्मीजी के सामने दोहरा दी।

लक्ष्मीजी मुस्कराकर बोली-''सेठ, तुम्हारी छोटी बहू वास्तव में चतुर और बुद्धिमान है। उसने मुझे बांध लिया है। जिस घर में प्रेम से सब रहते हैं, कलह नहीं होता है वहां मैं स्थायी रूप से रहने को विवश हूं।''

इस प्रकार छोटी बहू के वाक् चातुर्य ने लक्ष्मी को चंचला स अचला बना दिया।

–15, पंचवटी,
पो. उदयपुर-313004

अंग्रेज लेखक की दृष्टि में निष्काम सेवक हनुमान

बद्री नारायण तिवारी

यह वास्तविकता है कि संसार में हनुमानजी के नायक श्रीराम से अधिक मंदिर उनके परम भक्त हनुमान के स्थापित हैं। श्रीराम को समर्पित विश्वकवि तुलसीदास ने अपनी जन्मभूमि चित्रकूट के निकट यमुना तट पर स्थित राजापुर में भी उन्हीं के द्वारा स्थापित संकट मोचन मंदिर स्थापित है। तुलसी कृत 'हनुमान चालीसा' की करोड़ों प्रतियों का प्रकाशन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। जो उसकी लोकप्रियता को सिद्ध करती है। तुलसी ने वाराणसी प्रवास में वहां गंगा तट पर संकट मोचन मंदिर स्थापित किया। विगत वर्षों में आतंकवादियों द्वारा इसी मंदिर में विस्फोट करने पर अतिचर्चित हुआ। महाराष्ट्र में शिवाजी के गुरु समर्थ रामदास के इष्टदेव भी हनुमानजी ही थे।

अभी कानपुर में आयोजित विशाल पुस्तक मेले में देख रहा था। अचानक अंग्रेजी-हिन्दी पाठकों के मध्य दोनों भाषाओं में लोकप्रिय लेखक रस्किन बाण्ड की 'हनुमान आए बचाने' शीर्षक पुस्तक देखकर आश्चर्य में पड़ा। वस्तुत: रस्किन बाण्ड अंग्रेज होते हुए भी उन्हें भारतीय पृष्ठभूमि और अनुभव के माहौल से प्रेरणा मिली। इंग्लैंड में कई वर्ष रहने के बाद भी उन्हें पश्चिम ने कभी प्रभावित नहीं किया। अपने माता-पिता के साथ स्वदेश (इंग्लैंड) से लौटने पर जो शब्द रस्किन बॉण्ड ने कहे वह कितने हृदय स्पर्शी हैं- ''वहां मैं अंग्रेजी साहित्य में डूबा विक्टोरिया और जोर्जियाई लेखक-कवि मेरे मस्तिष्क में भर गए, किन्तु युद्ध के लंदन की पिकनिक और ड्रोन्स

क्लब की दुनिया में बहुत अलग थी। मेरा यथार्थ भारत था और साहित्यिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए मुझे भारत की ज्यादा और इंग्लैंड की कम जरूरत थी। इसलिए मैं पुन: भारत लौटा।'' भारत में वह महानगरों की चकाचौंध में रहने की अपेक्षा उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र मंसूरी का चयन कर स्थायी निवास बनाकर भारतवासी हो गए। रस्किन बॉण्ड ने अपने अंग्रेजी उपन्यास, कविता, निबंध तथा लघुकथाओं का केन्द्र बिन्दु विशुद्ध भारतीय परिवेश में लिखा है। इसीलिए साहित्य अकादमी अवार्ड (भारत में अंग्रेजी भाषा में लेखन के लिए) सन् 1922 और सन् 1999 में भारत सरकार ने 'पद्मश्री' से सम्मानित किया। संयोगवश इनके साथ ही 'पदमश्री' की उपाधि डॉ. गिरिराज किशोर को भी मिली थी जो इस समय हनुमानजी पर उपन्यास लेखन में व्यस्त हैं।

भारतीय संस्कृति की अमरगाथाएं अयोध्या के श्रीराम और सीता की कथावस्तु इस देश की सीमा लांघकर अन्य देशों में भी जीवित और जनप्रिय हैं। रस्किन बॉण्ड अंग्रेजी की अपनी बहुचर्चित कृति 'हनुमान टू दी रेस्क्यू' का अनुवाद हिन्दी में 'हनुमान आये बचाने' किया। उस कृति में जो वर्णन अंग्रेज लेखक ने किया उसमें राम, लक्ष्मण, सीता और हनुमान को दैवीय चमत्कारिक से अधिक मानवीय वर्णन करके स्वाभाविक स्वरूप प्रदान किया है। रस्किन बॉण्ड के पाठकों में श्रीराम-हनुमान के पाठकों के मन में आस्था से अधिक विश्वास की जीवंतता जागृत होती है। निष्काम सेवा के प्रतीक हनुमान ने कार्य करते हुए भी श्रेय सदैव दूसरों यानी अपने नायक या सहयोगियों की भेंट प्रदान की गई किन्तु हनुमान के लिए राम, सीता और अयोध्यावासियों का प्यार और सम्मान ही सर्वस्व था। तुलसी के इन शब्दों में हनुमान की भावना कि मेरा प्रात: नाम लेने से दिनभर भोजन नहीं मिलेगा वह सारा श्रेय दूसरों का ही यानी अपने नायक श्रीराम को ही देने का मूलमंत्र देते रहे।

–मानस संगम, शिवाला
कानपुर-208001 (उ.प्र.)

AGGARWAL DENTAL & IMPLANTOLOGY CLINIC
ISO 9001:2008 CERTIFIED CLINIC

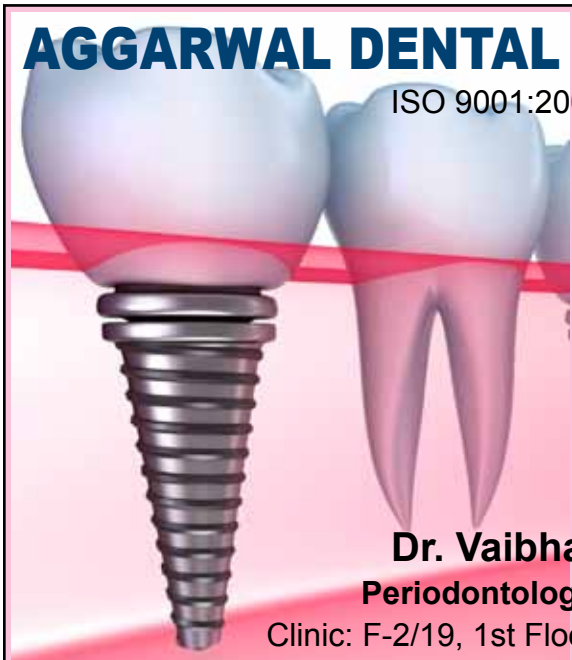

Dr. Vaibhav Aggarwal MDS
Periodontology & Oral Implantology
Clinic: F-2/19, 1st Floor, Krishna Nagar, Delhi-110051
Ph. 011-22095064 M. 09999667190 drvaibhavaggarwal@yahoo.com

जीवन में अर्थ की महत्ता

आरती जैन-खुशबू जैन

अर्थ की निन्दा और अपरिग्रह का बखान चाहे कोई कितना भी करे, लेकिन अर्थ के बिना किसी का जीवन चलता नहीं। अर्थ के अभाव में व्यक्ति आत्म–सम्मान का जीवन नहीं जी पाता। आहार–प्रबंधन, सुविधाजनक घर, बच्चों का पालन–पोषण तथा उनकी शिक्षा का प्रबंध, बीमारी या बुढ़ापे की व्यवस्था भी अर्थ के बिना नहीं हो सकती।

समय को व्यर्थ गंवाने वाले जीवन की अमूल्य पूंजी का अपव्यय करते हैं। समय को देखकर चलने वाले व्यक्ति स्वयं का, समाज और राष्ट्र का हित साध सकते हैं। समय के प्रतिकूल प्रभाव में वे निराश नहीं होते, अनुकूल समय की प्रतीक्षा करते हैं। समय उसी का साथ देता है जो प्रतिकूल हवाओं के बावजूद निराश नहीं होता, मनोबल बनाये रखता है और अपने मजबूत इरादों के सहारे आगे बढ़ता रहता है। समय की सार्थकता इसी में है कि व्यक्ति अल्पदर्शी बने। जीवन के प्रत्येक क्षण का रचनात्मक ढंग से नियोजन कर समय के कुशल-प्रबंधन की विधि अपनाए। अपने लिए भी समय निकाले।

अर्थ की निन्दा और अपरिग्रह का बखान चाहे कोई कितना भी करे, लेकिन अर्थ के बिना किसी का जीवन चलता नहीं। अर्थ के अभाव में व्यक्ति आत्म-सम्मान का जीवन नहीं जी पाता। आहार-प्रबंधन, सुविधाजनक घर, बच्चों का पालन-पोषण तथा उनकी शिक्षा का प्रबंध, बीमारी या बुढ़ापे की व्यवस्था भी अर्थ के बिना नहीं हो सकती। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति और सुखपूर्वक रहने के लिए ही धन की आवश्यकता नहीं रहती बल्कि दूसरों के काम आना हो, तो भी धन की आवश्यकता पड़ती है। धन के बारे में यह वास्तविकता होते हुए भी अधिकांश धर्मवेत्ताओं ने धन को असंतोष और दुर्गुणों का जनक कहा है। भारतीय धर्मवेत्ताओं के अनुसार यदि पूर्ण सुख की प्राप्ति करनी हो, तो वह संपूर्ण परिग्रह-त्याग के बिना नहीं हो सकती। कहा गया है- ''बिना अपरिग्रह के सच्चा स्वावलम्बन सध नहीं सकता।'' इस उपदेश के अनुसार चलनेवालों की गणना एक तरह से अपवाद में ही की जायेगी और उसे विशिष्ट व्यक्तियों की कठोर साधना ही कहा जा सकेगा। क्योंकि वस्तुस्थिति तो यह है कि अधिकांश लोगों का जीवन धन के बिना चल नहीं पाता।

अक्सर होता यह है कि धन के आधिक्य से मनुष्य धन का दास बन जाता है- वह धन पर से अपना स्वामित्व खो बैठता है। उस पर धन-प्राप्ति और संग्रह का ऐसा नशा छा जाता है कि वह न्याय-अन्याय का विचार छोड़कर अनुचित छीना-झपटी शुरू कर देता है। उसके पास सभी प्रकार की सुख-सामग्री रहते हुए भी, चूंकि दूसरों के पास उससे अधिक है, इसलिए ईर्ष्या करने लगता है और धीरे-धीरे वह अर्थ का गुलाम बन जाता है।

जिन्होंने परिग्रह का ख्याल न रखकर देश

या समाज-सेवा में सारी शक्ति लगाकर अपने जीवन का उत्तम समय बिताया। पर जब बुढ़ापा या बीमारी आयी, तब उन्हें समाज के सामने दीनता धारण करनी पड़ी। कई प्रसंगों में हमें यह भी देखने को मिला कि यद्यपि मन से परिग्रह का ममत्व नहीं छूटा था, पर 'त्यागी', 'देशभक्त' या 'धर्मभक्त' के नाम से अहंकार को अधिक पोषण मिलने या स्वार्थ सधने की संभावना थी, अत: कई लोग उस आवरण को ओढ़ना समझकर भी सेवा के क्षेत्र में उतर आए। धन के संबंध में संत तुकाराम का यह कहना उचित है कि ''न्याय और योग्य मार्ग से अर्थोपार्जन करके यदि संग्रह हो जाए, तो उसे केवल अपने लिए ही न मानकर भले कामों में उपयोग करना चाहिए।''

हमारे आदर्श और दैनिक जीवन में बहुत अधिक अंतर दिखाई पड़ता है और 'दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम' वाली कहावत चरितार्थ दीख पड़ती है। यदि हमने मानवोचित व धर्मयुक्त सुख-प्राप्ति को अनुचित न माना होता, तो संभव है, हमारा सामाजिक जीवन आज से कहीं अधिक ऊंचा होता है। हमारे यहां ऊंचे महापुरुष तो हुए हैं, पर सामान्य लोगों का नैतिक स्तर ऊंचा न उठने के कारण त्याग या अपरिग्रह को भी अत्यधिक महत्व मिलता रहा है, जिसने दम्भ को जन्म दिया। अपने-आपको 'धार्मिक' बताने के लिए पुरुषार्थ से धन कमाने को गौण स्थान ही नहीं मिला, बल्कि अनुचित कार्य समझा जाने लगा। नतीजा यह हुआ कि धन के लिए मन में अत्यधिक आकर्षण होने पर भी धन-प्राप्ति को हम धार्मिक दृष्टि से हीन कार्य मानते रहे। और हममें यह मान्यता घर कर गयी कि दूसरे का शोषण, अहित और बेईमानी किये बिना अर्थ का अर्जन किया ही नहीं जा सकता। धार्मिक जीवन तो संपूर्ण अपरिग्रह के बाद ही संभव है। इस भ्रांत धारणा के कारण हमने सहयोग के बदले शोषण को धन-प्राप्ति का साधन माना। हम यह भूल ही गये कि प्रकृति के पास असीम शक्ति और समृद्धि भरी हुई है। मानव उसका बुद्धि, शक्ति और सहयोग से उपयोग करे, तो वह अपने व समाज के लिए और भी सुख-समृद्धि के द्वार खोल सकता है।

सुप्रसिद्ध चिंतक इमर्सन ने कहा है–''धन प्राप्ति है, शक्ति है और उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए उचित प्रणाली या टेकनिक को अपनाना चाहिए।'' धन कमाने की भी एक तकनीक है, एक कला है। उसे अपनाने पर धन मिल सकता है। लेकिन उसके लिए यह जरूरी है कि धन के विषय में जो भ्रांत धारणाएं हमारे मन में बैठी हुई हैं, वे दूर हों। 'शुक्रनीति' में धन को मोक्ष का साधन, धर्म का पोषक और कार्य-सिद्धि का कारण माना है। सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री कौटिल्य ने भी अर्थ को शरीर और ब्रह्म दोनों के मूल का सिंचन कहा है।

यदि अर्थ के विषय में हमारी दृष्टि साफ हो जाती है, तो हम न उसके दास ही बनेंगे और न उसका तिरस्कार ही करेंगे, बल्कि अर्थ का धर्म और न्यायमार्ग से उपार्जन और उसके सदुपयोग का आवश्यक कर्तव्य मानेंगे। उसे धार्मिक दृष्टि से न तो हेय समझेंगे और न तिरस्कार ही करेंगे। उसका यथायोग्य मूल्यांकन कर योग्य रीति से धन-प्राप्ति की कला या टेकनिक अपनायेंगे, जिन्हें अपनाकर हमारे तथा विदेश के धनियों व उद्योगपतियों ने करोड़ों-अरबों की संपत्ति अर्जित की और जन-कल्याण में लगायी। पश्चिमी राष्ट्रों में बिलगेट्स, वॉरने वुफे, बिल क्लिंटन, फोर्ड, राकफेलर, कार्नेगी के ट्रस्ट, नफील्ड, तथा भारत के अजीम प्रेमजी, अंबानी बंधु, नारायण मूर्ति, टाटा, बिड़ला, साहू, लालभाई, दलपतभाई आदि के चैरिटेबल ट्रस्टों से देश व समाज-हित के अनेक कार्य होते हैं। इसलिए मुख से परिग्रह की निंदा कर मन में उसकी आसक्ति रखने की अपेक्षा योग्य मार्ग से धन कमाकर उसका अच्छे कामों में उपयोग किया जाए–यह महत्वाकांक्षा प्रत्येक को अपने जीवन में रखनी चाहिए।

–'सातों सुख' पुस्तक से

आओ फिर से दिया जलाएं

❋ अटल बिहारी वाजपेयी

आओ फिर से दिया जलाएं
भरी दुपहरी में अंधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें-
बुझी हुई बाती सुलगाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

हम पड़ाव को समझे मंजिल
लक्ष्य हुआ आंखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में-
आने वाला कल न भुलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने
नव दधीचि हड्डियां गलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

चार दीप

❋ सुरेश आनंद

(1)
फिर नयी सौंगध खाने को नया दीपक द्वार आया।
फिर नयी अर्चना के लिए नया होकर त्योहार आया।
भूल जाओ जहां-जहां किया था, हमने अंधेरा।
मनुज हैं हम मनुष्य को रोशनी का नया बार आया।
(2)
खेतों में देखो हरियाली, मौसम में मस्ती और लाली।
ऐसे में लोकतंत्र विजयी राम की पुनः सवारी।
तो आओ प्रियवर! धरें दीपक डाली डाली
मनायें आज घर-घर दीवाली।
तोड़ ऊंच-नीच की संकीर्ण दीवाली
सभी करें अभिनंदन बारी-बारी।
(3)
गुलाबों सी खिली-खिली अंधेरों को मुस्कान दे दो।
पायलों की थापों पर खुशियों के गान दे दो।
दिलों की चौखटों पर आस्था के दीप धर दो।
यूं दीपावली त्योहार को ज्योति पर्व सम्मान दे दो।
(4)
आओ! फिर से विश्वासों के दीप जलाएं।
अंधकार जहां-जहां बैठा है ज्योति का शृंगार सजाएं।
त्योहार की डलिया को स्नेह के पकवान बनाएं।
परम्परा अभिनंदन की फिर से यूं आज निभाएं।

—आनंद परिधि, एल-62
पं. प्रेमनाथ डोगरा नगर, रतलाम-(म.प्र.)

आई लगती प्रलय घड़ी है

❋ सुरेन्द्र अंचल

सूरज पर ही बर्फ पड़ी है
जल्दी भागो शीत कड़ी है।
आई लगती प्रलय घड़ी है!

आतंकवाद कथा कह रहा
निर्दोषों का खून बह रहा।
पौरुष-ऊर्जा अब सुप्त हो रही।
लालिमा रक्त की लुप्त हो रही।
हर कदम पर मौत खड़ी है।

हवा में बारूद की है तीव्र गंध।
'नर अंगों' का घृणित अनुबंध
ध्वस्त इमारते - बंजर खेत
बम विस्फोटों के गरजे प्रेत!
हैवानियत के हाथ छड़ी हैं।

मृदा, वायु, ध्वनि, जल प्रदूषण।
महा पंच भूतों का यह क्षरण।
ओजोन परत में हो गया छेद
सूखे सर, पिघले ग्लेशियर अभेद
भाग जिंदगी दूर खड़ी हैं।

रे मूर्ख, जड़, स्वार्थी इंसान,
तू रहा सृष्टि की कृति महान।
अपना ही कर विनाश नादान।
जाग, निज हित अनहित पहचान।
मानव से ममता बिछड़ी है।
आई लगती प्रलय घड़ी है।

—साहित्य लोचन मंच
2/152, साकेत नगर, ब्यावर, अजमेर

फिर कैसी दीवाली है?

❋ कृष्णचंद टवाणी

बढ़ रहा प्रदूषण वसुधा पर मिट रही हरियाली है।
मिलावट हो रही सभी में जीवन हुआ बदहाली है॥
मंहगाई की मार सह रही जनता भोली भाली है।
माथे पर गम की लकीरें ये कैसी दिवाली है?

मयखानों में भीड़ उमड़ती मंदिर सभी खाली है।
डरता नहीं कानूनों से कोई घोटालों की भरमारी है॥
दंगे फसाद कराते नेता जनता फंसती बेचारी है।
चारों ओर भ्रष्टाचार का अंधेरा ये कैसी दिवाली है?

रक्षक ही भक्षक हो गये देश की करते नहीं रखवाली है।
लूट मार होती आये दिन पुलिस भी करती मनमानी है॥
भेंट बिना कार्य नहीं होता कहते अफसर सरकारी है।
परस्पर प्रेम भाव नहीं किसी में फिर कैसी दिवाली है?

राजनैतिक पार्टियां अनेक पर ईमानदारी से खाली है।
सब्जबाग दिखा वोट बंटोरते वादें जाते खाली है॥
अब तो चेतो मतदाता सच्चे नेताओं को विजयी बनाओ।
शासन बना कुशासन फिर कैसी दिवाली है?

—ज्ञानमंदिर, सिटी रोड
मदनगंज-किशनगढ़-305801 (राजस्थान)

यादें

❋ आर. के. भारद्वाज

आंखों के आंसू सूख गये
लेकिन उसकी यादें दिल से नहीं गई
जितना ज्यादा
उसे भुलाने की कोशिश करता हूं
उसके साथ गुजारे
सुनहरे पलों की यादें आकर एहसास
करा देती है कि वह मुझसे दूर नहीं,
मेरे साथ ही है मेरे लिए वह क्या थी?
इसको कोई दूसरा कैसे जान सकता है?
उसकी समय-समय पर दी नसीहतें
अब बताती है, वह कितनी महान थी?
और मेरी जिंदगी में
उसकी क्या अहमियत थी।

—चर्च के पीछे, भरतपुर (राजस्थान)

प्रकृति

❋ सीमा सक्सेना

प्रकृति के अनंत रूप स्मरणीय,
ईश्वरीय सृष्टि का चमत्कार।
समय का पहिया घूमे प्रतिपल,
मौसम परिवर्तित करें शृंगार॥
बाल अरुण के उदय होते ही,
हुआ भारे कलख गुंजार।
उषा का माधुर्य मनोहर,
रश्मियों की उज्ज्वल झंकार॥
यहां सर्दी की ठिठुरन है तो,
वहां गर्म लू का संचार।
श्रतु चक्र संचालित हर क्षण,
सूखा-बरखा करे पुकार॥
मानव-मन की जीवन सरिता में,
प्रकृति के हैं रूप हजार।
कहीं मधुर प्रेमामृत निर्झर,
कहीं घृणा और तिरस्कार॥
सत्य-असत्य, आदर्श-यथार्थ का,
अद्भूत संगम ये संसार।
प्रकृति अध्यात्म की अनुपम शक्ति,
भौतिकता का करे संहार॥
प्रभात ने जागरण आह्वान किया तो,
रात्रि मीठी नींद सुलाएगी।
जब जीवन उत्पन्न हुआ तो,
मृत्यु निश्चित आएगी॥
जन्म-मरण का अजब खेल है,
निर्माण-विध्वंस क्रम बराबर।
कर्म गति से संचालित है,
जीत-हार का ये व्यापार॥
नारी में कोमल ममत्व है,
पुरुष प्रधान अहंकार समाज।
मात-पिता के संरक्षण से,
चलता सृष्टि का संसार॥
पुण्य पाप के बिना अधूरा,
श्वेत-श्याम के बिना अपूर्ण।
दोनों महत्वपूर्ण पूरक हैं,
दोनों से जीवन सम्पूर्ण॥

–ई-196, शास्त्री नगर, अजमेर

बंधु मत करना अभी विश्राम

❋ श्याम श्रीवास्तव

जिंदगी का नाम है संग्राम,
बंधु मत करना अभी विश्राम।

स्वप्न जो देखे अभी भी दूर हैं,
स्वप्न-सुख में हम हुए मगरूर हैं।
दे रही आवाज है इंसानियत
और हम अपने नशे में चूर हैं।
आयु का हर क्षण गिना नापा हुआ
शेष पर कितने अभी भी काम।

तप किया तो धार गंगा की बही,
श्रम किया तब कहीं महकी मही।
लोग तो आते रहे, जाते रहे,
कर्म की अक्षुण्ण पर गाथा रही।
तमस पर हर रोज सूरज की तरह,
जाएं लिखते रोशनी निष्काम।

सरहदों से आ रही ललकार है,
बिलों से भी उठ रही फुफकार है।
जप रहे कब से अहिंसा-पाठ हम,
हो रही पैनी उधर तलवार है।
बाड़ ही काफी नहीं, हरदम रहे-
तीर कर में, हृदय में प्रभु नाम।

–988, सेक्टर-आई, कानपुर रोड
लखनऊ-12 (उ.प्र.)

मन लाग्यो मेरो मन फकीरी में

❋ कबीर

जो सुख पाऊं राम भजन में
सो सुख नाहिं अमीरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में॥

भला बुरा सब का सुन लीजै
कर गुजरान गरीबी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में॥

आखिर यह तन छार मिलेगा
कहां फिरत मग़रूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में॥

प्रेम नगर में रहनी हमारी
साहिब मिले सबूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में॥

कहत कबीर सुनो भयी साधो
साहिब मिले सबूरी में
मन लाग्यो मेरो यार फ़कीरी में॥

दीप जलाएं

❋ कृपाशंकर शर्मा 'अचूक'

दीवाली पर दीप जलाएं
आओ हिल-मिल के
द्वेष ईर्ष्या पास न आएं
अब अपने दिल के।
मन ज्योर्तिमय करें सुखद फिर
जग ज्योर्तिमय हो
प्रेम एकता बढ़े निरन्तर
जन-गण-मन जय हो।
दीपों से आरती उतारें
सब घर-घर चलके
द्वेष ईर्ष्या पास न आएं
अब अपने दिल के।
वर्तमान है अपना इसको
अब साकार करें
लक्ष्य एक सबका विवेक हो
यह बस! ध्यान धरें।
सोचो समझो कहो संदेशा
साथ रहें पल के
द्वेष ईर्ष्या पास न आएं
अब अपने दिल के।
एक दीप से अनेक दीपक
जलते आए हैं
ज्योति रश्मियां खिलें धरा पर
मन-मन भाए हैं।
तेजोमय रजनी का आंचल
ज्योर्तिमय झलके
द्वेष ईर्ष्या पास न आएं
अब अपने दिल के।
दृढ़ विश्वास अटल आशाएं
निर्बल में बल हो
नए राष्ट्र में अनुगुंजन से
सुखद गयी कल हो।
नहीं अचूक सजल आंखों से
अश्रु कोई ढलके
द्वेष ईर्ष्या पास न आएं
अब अपने दिल के।

–38-ए, विजयनगर, करतारपुरा
जयपुर-302006 (राजस्थान)

दल से राष्ट्र बड़ा है

आचार्य महाश्रमण

महर्षि व्यक्ति पराक्रम करते हैं और अपने पराक्रम के द्वारा परीषहरूपी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं। एक साधु के लिए अपेक्षा है कि वह परीषहजयी बने। वह प्रतिकूलताओं को भी सहन करे और अनुकूलताओं को भी सहन करे। अनुकूलता और प्रतिकूलता में समताभाव रह सके, मानसिक संतुलन रह सके, ऐसी साधना साधु में होनी चाहिए। साधु में तो होनी ही चाहिए, पर मैं राजनीति पर ध्यान दूं तो मेरा ऐसा सोचना है कि कुछ अंशों में यह समता की साधना राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों में भी होनी चाहिए, तभी राजनीति स्वच्छ रह सकती है।

हम साधु लोग राजनीति से असंपृक्त हैं और भी बहुत से लोग हैं, जो राजनीति से दूरी बनाए रखते हैं। न किसी राजनीतिक पार्टी का प्रचार करते हैं, न किसी व्यक्ति या पार्टी विशेष को वोट देने का परामर्श देते हैं। हां, इतना जरूर है कि साधु-संन्यासी राजनीतिक क्षेत्र के लोगों को मार्गदर्शन देने वाले हो सकते हैं। ऐसा प्राचीनकाल में भी होता रहा है। मेरा मानना है कि राजनीति पर नैतिकता का अंकुश कहें या धर्म का अंकुश रहता है तो राजनीति सम्यक्तया संचालित हो सकती है। जहां राजनीति पर धर्म का, नैतिकता का अंकुश न हो, केवल सत्ता प्राप्ति का ही लक्ष्य हो तो उसे राजनीति का दुर्भाग्य मानना चाहिए।

मेरा मंतव्य है कि गृहस्थों के लिए राजनीति कोई अस्पृश्य चीज नहीं है। राजनीति सेवा का एक अच्छा माध्यम हो सकती है। अपेक्षा यह है कि राजनीतिक क्षेत्र के लोग नैतिकता के संकल्प से संकल्पित हों। अणुव्रत इसमें बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। एक घटना-प्रसंग मैं अपनी शैली में प्रस्तुत कर रहा हूं। बहुत पहले की बात है, परमपूज्य आचार्य तुलसी के पास एक मंत्रीजी आए। बातचीत के प्रसंग में मंत्रीजी बोले- ''आचार्यश्री! मेरे मन में धर्म के प्रति रुचि है और मैं धर्म करना भी चाहता हूं किन्तु समस्या यह है कि व्यस्तता के कारण मैं इसके लिए समय नहीं निकाल पाता।''

कार्याधिक्य और गुरुतर दायित्व के कारण कुछ लोगों के सामने समय का अभाव हो सकता है। लेकिन मेरा तो चिंतन है कि व्यस्त होना एक बात है और अस्त-व्यस्त होना दूसरी बात है। व्यस्त होना कोई बुरी बात नहीं। ज्यादा काम हो तो व्यक्ति व्यस्त भी हो सकता है, पर उसका मस्तिष्क शांत रहना चाहिए। अशांति की स्थिति आदमी को अस्त-व्यस्त कर देती है।

गुरुदेवश्री ने कहा- ''मंत्रीजी, आप व्यस्त हैं, धर्म के लिए आपको समय नहीं मिल पाता तो मैं ऐसे धर्म में आपको प्रवृत्त नहीं करना चाहता जो आपकी व्यस्तता को और ज्यादा बढ़ा दे। आपकी व्यस्तता को देखते हुए आपको ऐसा धर्म बताता हूं, जिसके लिए आपको अलग से समय निकालने की जरूरत नहीं पड़ेगी।''

मंत्रीजी ने ऐसे धर्म के बारे में आतुर भाव से जिज्ञासा की तो आचार्य ने कहा- ''वह धर्म है नैतिकता। आपके पास अपने विभाग से संबंधित फाइलें तो आती ही होंगी, आप उनके कार्य संपादन में प्रामाणिकता रखें। अपने दैनंदिन जीवन में नैतिक और प्रामाणिक बने रहें, यह नैतिकता का संकल्प ही आपके लिए धर्म हो जाएगा। धर्म करने के लिए आपको किसी धर्मस्थान में जाने की जरूरत नहीं रह जाएगी।

अणुव्रत का संदेश है-आप किसी की भी उपासना करो, आप राम को मानो या महावीर को, बुद्ध, नानक, मुहम्मद, ईसा-किसी को भी मानो या न भी मानो, आपकी इच्छा पर है, अणुव्रत का इससे कोई लेना-देना नहीं है। अणुव्रत का मात्र इतना ही कहना है कि आप जो भी कार्य करें, उसमें नैतिकता और प्रामाणिकता रहे।

मैं तो यहां तक भी कहता हूं कि कोई व्यक्ति नास्तिक विचारधारा का हो, परलोक, पुनर्जन्म-पूर्वजन्म और आत्मा को नहीं मानता हो तो ऐसा नास्तिक आदमी भी अणुव्रतों को स्वीकार कर सकता है। परलोक को भले ही कोई न माने, वर्तमान की दुनिया या इहलोक को तो मानता ही होगा, क्योंकि वह तो आंखों के सामने है। व्यक्ति कम से कम इस जीवन को शांतिपूर्ण बनाने के लिए तो नैतिकता के रास्ते पर चले। राजनीति का क्षेत्र भी सेवा का एक माध्यम है, जिसकी बड़ी आवश्यकता होती है। राजनीति के बिना दुनिया का काम भी कैसे चलेगा? व्यवस्था चलाने के लिए कोई प्रमुख, कोई मार्गदर्शक, कोई नियंता न हो और सामान्य लोग राग-द्वेष से जुड़े हुए हों तो मेरा मानना है कि वह समाज के लिए दुर्भाग्य की बात है। ऐसी स्थिति में समाज और राष्ट्र का संचालन होगा भी तो कैसे? इसलिए राजनीति आवश्यक है। शर्त यही है कि राजनीति में काम करने वाले व्यक्ति योग्य और ईमानदार होने चाहिए।

भारत लोकतांत्रिक शासन प्रणाली वाला राष्ट्र है। लोकतंत्र में भी प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। जनता को भी प्रशिक्षण मिलना चाहिए और देश का संचालन करने वाले कर्णधार भी प्रशिक्षित होने चाहिए। अगर लोकतंत्र में कर्तव्यनिष्ठा न हो, चुनाव में भय, प्रलोभन, प्रभाव से वोट लिए और दिए जाते हों तो मुझे लगता है कि यह लोकतंत्र के लिए शुभ शकुन नहीं होता है, प्रशस्त तरीका नहीं होता है। लोकतंत्र में वोट देने वाले और लेने वाले प्रशिक्षित हों तो यह विशिष्ट बात होती है। सत्ता के आसन पर बैठने वाले लोग योग्यता संपन्न होने चाहिए, राष्ट्र हित को प्रमुखता देने वाले होने चाहिए। भारत में अनेक राजनीतिक दल हैं, उनका अपना महत्व भी है। वास्तव में देखा जाए तो राजनीतिक पार्टियां भी देश की सेवा के लिए हैं। एक ओर राष्ट्र और दूसरी पार्टी हो तो राष्ट्र का पहला स्थान मिलना चाहिए। दल से राष्ट्र बड़ा है। ●

दीपोत्सव
भगवती लक्ष्मी का समराधन पर्व

अन्नपूर्णा बाजपेयी

भारतीय परम्परा के अनुसार व्रत, पर्व एवं उत्सवों को शुभ तिथि वार और शुभ नक्षत्र में मनाने का विधान है। दीपोत्सव का प्रारंभ त्रियोदशी से होता है इसे धनतेरस के नाम से जाना जाता है। यह नाम आयुर्वेद प्रवर्तक धन्वंतरि के जयंती दिवस के आधार पर ही प्रचलित हुआ है, ऐसा अनुमान है। इस दिन नए बर्तन भी खरीद कर लाये जाते है इससे घर में सदैव लक्ष्मी का निवास रहता है। घर के द्वार पर चावल की ढेरी बनाकर उत्तर की ओर की मुख कर दीपक जलाया जाता है इससे लक्ष्मी कभी घर छोड़ कर नहीं जाती ऐसा माना जाता है।

पुरानों के अनुसार कार्तिक मास में यमुना और दीपदान विशेष फलदायी माने जाते हैं। धनतेरस के दिन यमुना स्नान कर, धन्वंतरि और यमराज का पूजन दर्शन, यमराज के निमित्त दीपक दान करना चाहिए। धनतेरस के संबंध में एक कथा है- एक बार यमराज ने अपने दूतों से पूछा कि तुम लोग अनंत काल से जीवों के प्राण हरण का दु:खद कार्य करते हो, क्या कभी यह कार्य करते समय तुम्हारे मन में दया आई या तुमने सोचा कि अमुक के प्राण न लिए जाएं? यदि ऐसी स्थिति कभी आई हो तो बताओ।

यह सुनकर एक दूत ने बताया-प्रभो! हंस नामक एक प्रतापी राजा था। एक बार वह आखेट करने के लिए वन में गया और मार्ग भटक कर दूसरे राज्य हेमराज के राज्य में जा निकला। भूख प्यास से व्याकुल राजा हंस का हेमराज ने बहुत स्वागत किया। उसी दिन राजा को पुत्र की प्राप्ति हुई थी इसलिए राजा हेमराज ने राजा हंस को पुत्र प्राप्ति का निमित्त मानकर उनको आग्रह पूर्वक कुछ दिनों के लिए अपने यहां पर ही रोक लिया। छठी के दिन जब समारोह पूर्वक उत्सव मनाया जा रहा था किसी भविष्यवेत्ता ने बताया कि विवाह के चार दिनों के पश्चात ही बालक की मृत्यु हो जाएगी जिसे सुनकर सारा नगर शोक में डूब गया था।

राजा हंस को जब यह पता चला तो उन्होंने राजा को आश्वस्त करते हुए कहा कि आप निश्चिंत रहें आपके पुत्र की प्राण रक्षा मैं स्वयं करूंगा। अपने वचन की रक्षा के लिए यमुना तट पर एक गिरि गड्ढर में दुर्ग का निर्माण करा दिया और राजकुमार के गूढ़ रूप से रहने के व्यवस्था करा दी। वहां ही रहते हुए राजकुमार तरुण हुआ और फिर राजा हेमराज ने अपने मित्र की सलाह मानकर उसका विवाह एक सुंदर राजकुमारी से कर दिया। राजा हंस अपने मित्र पुत्र की प्राण रक्षा के लिए विविध उपाय कर रहे थे, किन्तु आपके विधान को अन्यथा करने की हिम्मत किसमें है।

विवाह के चौथे दिन ही हमें उसके प्राण

हरण का अप्रिय कार्य करना पड़ा। जब हम उसके प्राण लेकर चले तो उस समय का दृश्य बड़ा ही दु:खद था। उस समय तो हम स्वयं भी रो पड़े थे, परन्तु करते क्या विवश थे उस कार्य से विरत हो नहीं सकते थे। इस घटना को सुनकर यमराज कुछ देर मौन रहे फिर बोले- तुम्हारी करुण कथा सुनकर मैं भी विचलित हो गया हूं पर क्या करूं कुछ नहीं कर सकता। जैसा कि अकाल मृत्यु का क्लेश दूर किया जा सकता है। तभी से धनतेरस के दिन यमराज के निमित्त दीपदान करने की प्रथा चली आ रही है।

दूसरा दिन नरक चतुर्दशी या रूपचतुर्दशी के रूप में मनाया जाता है। इसे छोटी दिवाली भी कहते है। नरक न प्राप्त हो तथा पापों से मुक्ति मिल जाए इसलिए उसके चार बत्तियों वाला दीपक जलाना चाहिए। पुराणों के अनुसार आज ही के दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध कर संसार को भय मुक्त किया था। इसी विजय के उपलक्ष्य में यह त्योहार मनाया जाता है।

दीपोत्सव पर्व का तीसरा दिन दीपावली के नाम से जाना जाता है, इस पर्व का सभी को बड़ी बेसब्री से इंतजार रहता है। भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों में इसका विशेष स्थान है। इस पर्व के साथ हमारा युग-युग का इतिहास जुड़ा हुआ है। कहीं महाराज पृथु द्वारा पृथ्वी को दोहन कर देश को धन संपत्ति से समृद्ध बना देने के उपलक्ष्य में दीपावली मनाए जाने का उल्लेख मिलता है। कहीं समुद्र मंथन से भगवती लक्ष्मीजी के प्राकट्य की प्रसन्नता में दीपावली मनाने का वर्णन आता है। कहीं श्रीराम रावण का वध कर अयोध्या वापस लौटने पर प्रजा जनों के द्वारा दीपमाला की पंक्तियां सजाकर उनका स्वागत कर दीपावली मनाने का उल्लेख है, कहीं नरकासुर का वध कर श्रीकृष्ण द्वारा बंदी गृह में बंद सोलह हजार राजकन्याओं को मुक्त करा कर उनका उद्धार करने पर उनके अभिनंदन के लिए सज्जित दीपमाला के रूप में। महाभारत में पांडवों के सकुशल वनवास से लौटने पर और सम्राट विक्रमादित्य के विजयोपलक्ष्य में दीप प्रज्जवलित कर उनका अभिनंदन करने का उल्लेख है।

इस पर्व का चौथा दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा शुक्ल प्रतिपदा को मनाया जाने वाला गोवर्धन नामक पर्व है जिसे अन्नकूट भी कहते है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने बृज के लोगों को गोवर्धन की पूजा कर अपने नवान्न को उन्हें समर्पित करने की आज्ञा दी थी। सभी लोग छप्पन प्रकार के भोग बनाकर गोवर्धन की पूजा करते हैं।

दीपोत्सव पर्व का समापन दिवस है कार्तिक शुक्ल द्वितीया जिसे भैया दूज या यम द्वितीया भी कहते हैं। शास्त्रों के अनुसार इस दिन बहनें भाइयों को आमंत्रित कर उनका तिलक करती है और भोजन कराती हैं। इस दिन यमुना के घर अचानक ही पहुंचे उनके भाई यम का यमुना द्वारा सत्कार उनके भाल पर तिलक लगाकर किया गया तथा अनेकों भांति उनका सत्कार किया जिससे प्रसन्न होकर यम ने यमुना से कहा कोई वर मांग लो। तब यमुना ने उनसे कहा- भैया आप इसी प्रकार हर वर्ष हमारे यहां आया करें और इस दिन जो भाई अपनी बहन से घर जाकर उनसे तिलक करवाए और आतिथ्य स्वीकारें उसकी सब मनोरथ आप पूर्ण किया करें उन्हें आपका भय न सताए। यमुना की प्रार्थना को यम ने स्वीकार कर लिया तभी से यह भाई बहन का त्योहार मनाया जाने लगा।

-प्रभांजलि, 277-278, विराट नगर जी.टी. रोड, अहिरवां, कानपुर-7

ईश्वर की खोज का मार्ग

मंजुला जैन

मनोविज्ञान ने मस्तिष्क की शक्तियों का वर्णन किया है। उससे हमें यह जानने का अवसर मिला है कि हमारा मस्तिष्क शक्तियों का अक्षय भंडार है। इसकी शक्तियां वास्तव में अद्‌भुत हैं। जैसे–जैसे वे प्रगट होती हैं, सामान्य लोग उससे चमत्कृत हो जाते हैं।

एक सेठ के पास अपार धन-संपत्ति थी, पर उसका मन हमेशा अशांत रहता था। एक बार उसके शहर में एक सिद्ध महात्मा आए। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि परमात्मा को पाने पर ही सच्ची खुशी एवं पूर्ण शांति मिल सकती है। इसलिए ईश्वर की खोज करो और अपने जीवन को सार्थक करो। यह सुनकर सेठ ईश्वर की खोज में लग गया। वह इधर-उधर भटकने लगा। ऐसा करते हुए दो वर्ष बीत गए किन्तु ईश्वर की प्राप्ति नहीं हुई। वह निराश होकर घर की ओर लौट पड़ा। रास्ते में उसे एक चिर-परिचित आवाज सुनाई पड़ी। उसे कोई बुला रहा था।

उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उसके पीछे वही सिद्ध महात्मा खड़े थे, जिन्होंने ईश्वर को ढूंढने की बात कही थी। सेठ उनके पैरों में गिरकर बोला, 'बाबा, मैं अनेक स्थानों पर भटका किन्तु मुझे अभी तक ईश्वर नहीं मिले। आखिर मेरी खोज कहां पूरी होगी? आपने ही कहा था कि सच्ची खुशी ईश्वर के साथ मिल सकती है।'

उसकी बात पर महात्मा मुस्कराए और उन्होंने उसे उठाते हुए कहा, 'पुत्र, मैंने सही कहा था। यदि तुमने ठीक ढंग से ईश्वर की खोज की होती तो अब तक तुम उन्हें पा चुके होते।'

यह सुनकर सेठ हैरान रह गया और बोला, 'कैसे बाबा?' महात्मा बोले, 'पुत्र, ईश्वर किसी दूर-दराज के क्षेत्र में नहीं तुम्हारे अपने भीतर ही है। तुम अच्छे कर्म करोगे और नेक राह पर चलोगे तो वह स्वयं तुम्हें मिल जाएगा। तुम्हें उसे कहीं खोजने नहीं जाना पड़ेगा। हां, उसे पाने के लिए ईश्वर का नेक बंदा अवश्य बनना होगा।' अपने भीतर अच्छाइयों को स्थान देना होगा। परोपकार एवं परमार्थ में अपनी शक्तियों को नियोजित करना होगा। स्वयं से स्वयं का साक्षात्कार करना होगा।

यह सुनकर सेठ महात्मा के प्रति नतमस्तक हो गया और वापस अपने घर चला आया। घर आने के बाद उसने पाठशालाएं खुलवाई, लोगों को पीने का पानी उपलब्ध कराया, गरीब कन्याओं के विवाह कराए और अपने पास आने वाले हर जरूरतमंद की समस्या का समाधान किया। कुछ ही समय बाद उसके भीतर की अशांति जाती रही और उसने अपने भीतर नई स्फूर्ति महसूस की और उसे लगा जैसे उसका नया जन्म हुआ है।

असल में इंसान जब तक ईश्वर के साथ नहीं जुड़ेगा, तब तक उसमें पूर्णता नहीं आ सकती। मन में परमात्मा के नहीं रहने से व्यवहार में दोष आ गए हैं- अहं भाव के कारण, ममता के कारण जो पक्षपात हो गया है, स्पृहा के कारण जो क्रूरता हो गई है, कामना के कारण जो दूसरों का तिरस्कार आ गया है। परमात्मा से जुड़ते ही इन सबकी निवृत्ति हो जाती है और आपका व्यवहार शांतिमय हो जाता है। मन, बुद्धि का भाव दर्पण है। आपके मन में संकल्प उठते हैं कि हमको यह मिले? भविष्य के लिए सपने देखते हैं आप? जरा सपने को बदल दीजिए, रुपया मिले, इज्जत मिले, प्यार मिले- इसकी जगह पर यदि यह संकल्प हो कि ईश्वर मिले, तो क्या होगा?

मन संकल्पात्मक है। जब आपने मन का कार्य ईश्वर से जोड़ दिया तो उसका उनके प्रति अर्पण हो गया। मन को ईश्वर के प्रति समर्पित करने का अर्थ है अपनी भीतर की शक्तियों का जागरण।

मनोविज्ञान ने मस्तिष्क की शक्तियों का वर्णन किया है। उससे हमें यह जानने का अवसर मिला है कि हमारा मस्तिष्क शक्तियों का अक्षय भंडार है। इसकी शक्तियां वास्तव में अद्‌भुत हैं। जैसे-जैसे वे प्रगट होती हैं, सामान्य लोग उससे चमत्कृत हो जाते हैं।

आचार्य श्री तुलसी के एक लोकप्रिय गीत की पंक्तियां हैं-

''भर्‌यो अनंत अखूट खजानो,
गाफिल थारे घर में रे।
क्यूं न निहारै, बारै-बारै,
क्यूं भटके दर दर में रे...।''

शक्तियां अनेक प्रकार की हैं। केवल शारीरिक बल ही नहीं अनेक दिव्य शक्तियां, आध्यात्मिक शक्तियां और उच्च मनो शक्तियां हमारे भीतर छिपी हुई हैं। इन विपुल शक्तियों के होते हुए भी देखा यह जाता है कि व्यक्ति कमजोर, दीन-हीन और शक्तिहीन सा बना हुआ है। अपने को वह असहाय महसूस कर रहा है।

मनुष्य की इस करुणाजनक स्थिति का कारण यह है कि उसने कभी इन शक्तियों को जगाने का अभ्यास और प्रयास नहीं किया। स्वयं से स्वयं का साक्षात्कार ही शक्ति जागरण का अमोघ मार्ग है।

भगवान महावीर ने कहा-''अप्पाणं शरणं गच्छामि'' यह संकल्प करो- मैं अपनी शरण में जा रहा हूं। अपनी शरण ही दुनिया में सबसे बड़ी शरण है। अपनी शरण को जिसने पा लिया, उसने सब कुछ पा लिया। कभी यहां, कभी वहां। इन सहारों की ओर ताकते रहोगे तो स्वयं खाली रह जाओगे। दूसरों से तो आखिर जितना मिलता है उतना ही मिलता है। आखिर अपना-अपना ही होता है। इसलिए दूसरों के भरोसे ज्यादा मत रहो। अपनी शक्ति को जगाओ, उसे ही बढ़ाओ। तुम देखोगे एक दिन कि तुम जो दूसरों से मांग-मांग कर अपनी ऊर्जा खपा रहे थे, आज खुले हाथ सबको देने की स्थिति में आ गए हो।

पहले अपनी शक्तियों पर भरोसा होना चाहिए। फिर उन शक्तियों की पहचान हो कि मेरे भीतर किस प्रकार की प्रतिभा या कौन सी शक्ति थोड़ी अधिक प्रबल या विकसित है और जिसे कुछ प्रयास से अधिक विकसित किया जा सकता है। जो व्यक्ति इस ओर अग्रसर होता है उसे ईश्वर का साक्षात्कार हो ही जाता है। ●

हरिहरक्षेत्र मेला सोनुपर
आस्था एवं संस्कृति का केन्द्र

बरुण कुमार सिंह

विश्व में सोनपुर मेले के नाम से विख्यात यह मेला क्षेत्र में 'छत्तर मेला' के नाम से मशहूर है। सोनपुर मेला एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला है। सोनपुर में प्रसिद्ध ऐतिहासिक हरिहरनाथजी का मंदिर है। इस मेले में उन्नत नस्लों की गाय-भैंस, हाथी-घोड़े, ऊंट और दूसरे जानवरों तथा पशु-पक्षियों का क्रय-विक्रय होता हैं। गंगा और गंडक के मिलाप स्थल पर लगने वाले इस मेले का इतिहास राजा चंद्रगुप्त मौर्य के जमाने से जोड़ा जाता है। कहा जाता है कि चंत्रगुप्त मौर्य अपनी सेना के लिए हाथी और घोड़ों की खरीददारी इसी हरिहर क्षेत्र मेले से करते थे। हालांकि आज भी हाथी और घोड़े खरीद बिक्री के लिए लाये जाते हैं, लेकिन वन्य जीवों की खरीददारी पर कानूनी प्रतिबंध के कारण रफ्ता-रफ्ता इस मेले का आकर्षण कम होता जा रहा है।

कार्तिक पूर्णिमा से शुरू होकर एक माह तक चलने वाले इस मेले में केन्द्र और राज्य सरकार के विभिन्न विभागों की ओर से लगायी जाने वाली प्रदर्शनियां लोगों के आकर्षण का केन्द्र होती हैं। इसके अलावा सोनपुर रेल मंडलीय कार्यालय द्वारा रेलवे की प्रदर्शनी अलग से रेल परिसर में लगायी जाती है एवं मेले के दौरान रेलवे द्वारा विशेष ट्रेनें भी चलाई जाती है।

पौराणिक आख्यानों के अनुसार सोनपुर की इस धरती ने कभी शक्ति पर भक्ति की विजय का संदेश दिया था। ऐसी मान्यता है कि एक बार विष्णुभक्त गज (हाथी) जब गंडक नदी में अपनी प्यास बुझाने गया, तो ग्राह (मगरमच्छ) ने उसका पैर अपने जबड़ों में भींच लिया और गज को पानी के अंदर खींचने लगा। इस संकट की घड़ी में गज ने अपने आराध्य विष्णुजी का स्मरण किया। गज की गुहार पर भगवान विष्णुजी आये और उन्होंने ग्राह को मारकर गज के प्राणों की रक्षा की। शक्ति पर भक्ति की इसी विजय के कारण 'कौनहारा' पड़ा। आज भी लाखों श्रद्धालु कार्तिक पूर्णिमा के दिन कौनहारा घाट पर गंडक नदी में स्नान करते हैं और ईश्वर की कृपा की कामना करते हैं। विष्णु (हरि) और शंकर (हर) के एक साथ होने के कारण इस क्षेत्र को हरिहर क्षेत्र भी कहा जाता है। हरिहरनाथ की पूजा सोनपुर में होती थी, लेकिन बाद में मुगल बादशाह औरंगजेब के आदेश से मेला भी सोनपुर में ही लगने लगा।

विश्व प्रसिद्ध हरिहर क्षेत्र सोनपुर मेले की महत्ता एवं इसकी ख्याति किसी से छिपी नहीं है देश के हर प्रांत के गांवों तक इस मेले की कहानी कही जाती है ठीक ही कहा जाता है कि त्योहार और मेले समाज के सामूहिक जीवन पद्धति, सांस्कृतिक मूल्यों उसके विश्वास

और आस्था को प्रदर्शित करने के सशक्त उल्लासपूर्ण मनोरंजक अवसर है। ये व्यक्ति, उसके समाज और संस्कृति की स्वाभाविक छवि प्रस्तुत करते हैं।

प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर एक माह का जो मेला लगता है उसका तार बाबा हरिहरनाथ मंदिर से जुड़ा हुआ है। इसके बगल में ही महावीर मंदिर, राधाकृष्ण मंदिर, लोकसेवा आश्रम, गौरी शंकर मंदिर, काली मंदिर, मनुष कुटीर आश्रम, उमा माहेश्वरी मंदिर, वालनाथ मंदिर, ठाकुरबारी मंदिर के साथ-साथ गजेन्द्र मोक्ष स्थान (नौलखा) मंदिर विराजमान है जहां भक्तों की भीड़ लगती है। हरिहरनाथ मंदिर के प्रवेश द्वार पर घंटे लगाए गए हैं। हरिहरनाथ का दर्शनार्थी इसे बजाकर अपने आने की सूचना दर्ज करता है आरती के समय घंटे बजाने से लोग मंदिर के आस-पास होते हैं, उन्हें भी यह पता चल जाता है कि घंटा बजाने पर देवता अपनी समाधि में डूबे रहते हैं। ऐसे में भक्तों एवं दर्शनकर्ताओं की पूजा, प्रार्थना प्रभावशाली नहीं हो पाती है। घंटा बजाने के पीछे मान्यता यह भी है कि इनकी ध्वनि से अनिष्ट करनेवाली विपत्तियों से व्यक्ति बच जाता है।

पूरे मेला अवधि में लगभग लाखों भक्तगण आते हैं। हरिहर क्षेत्र के बारे में कहा जाता है कि यह मनीषियों के चिंतन का केन्द्र रहा है। यह एक ऐसा मेला है जो स्थान, जात-पात, भाषा, वर्ण-भेद को मिटाकर अनेकता में एकता का संदेश देता है। विश्व की संस्कृतियों को भी यह खुला निमंत्रण है। मेला देखने और गंगा स्नान करने के लिए आने वाले लोग मेला स्थल और गंगा घाट तक पहुंचने के लिए सात से आठ किलोमीटर की दूरी पैदल तय करते हैं, क्योंकि इस दिन होने वाली भारी जुटान को देखते हुए प्रशासन की ओर से पैदल छोड़कर किसी भी तरह की गाड़ियों को लेकर चलने पर पूरी तरह से प्रतिबंध रहता है।

मेला में और आस-पास के क्षेत्रों में वस्त्र, हथियार, फर्नीचर, खिलौने, बर्तन, कृषि, उपकरण, गहने और हस्तशिल्प जैसे उत्पादों की बिक्री की दुकानें लोगों के लिए आकर्षण का केन्द्र होते हैं। लोक शो, खेल और बाजीगर आगे सोनपुर पशु मेला के आकर्षण को जोड़ने हस्तशिल्प, पेंटिंग और पूरे भारत से मिट्टी के बर्तनों के यहां देखा जा सकता है।

आज यह मेला जानवरों की प्रदर्शनी भर बन कर रह गया है। जानवरों के अलावा मेले में जरूरत की छोटी-बड़ी चीजों की दुकानें सजी हैं। बच्चों के मनोरंजन के लिए मौत का कुआ, इच्छाधारी नाग-नागिन के खेल, झूले और खेल-खिलौने की दुकानें भी हैं तो दूसरी तरफ युवाओं को लुभाते और अश्लीलता बेचते कुछ प्रचारित 'थियेटर' भी। यह एक विडंबना ही है कि पशुओं के लिए विख्यात मेले को इन थिएटरों के नाम से भी जाना जाता है, जहां मनोरंजक नाच की आड़ में भी अश्लीलता परोसने के आरोप भी लगे हैं और यहां रात्रि में नृत्य के नाम पर कुछ और ही दिखाया जाता है। इन आरोपों की वजह से एक बड़ा वर्ग सोनपुर मेले को ही अश्लील मानने लगा है और इस तरफ रुख करने से बचने लगा है।

–ए-56/ए, प्रथम तल,
लाजपत नगर-2, नई दिल्ली-24

मानवता के मसीहा आचार्य तुलसी सिर्फ एक व्यक्तित्व नहीं, वे धर्म, दर्शन, कला, साहित्य और संस्कृति के प्रतिनिधि ऋषिपुरुष थे। उनका दर्शन, चिंतन, साधना, संकल्प, साहित्य, संवाद, शैली अर्थात् संपूर्ण कर्तृत्व सभी कुछ मानवीय मूल्यों के कल्याण से जुड़े थे। मानव जाति को आचार्य तुलसी के अनेकों अवदान हैं। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, समण श्रेणी, जैन विश्वभारती– ये ऐसे अनमोल रत्न हैं, जिनसे समाज एवं राष्ट्र को नई रोशनी, नया मार्गदर्शन मिला है और सदियों तक मिलता रहेगा।

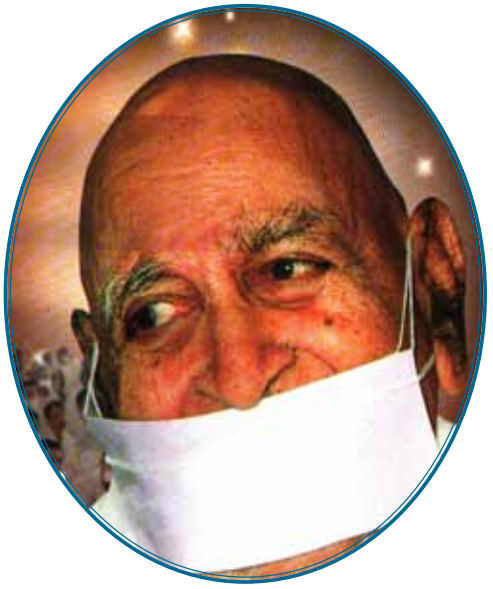

आचार्य तुलसी की ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी और यशस्वी
जीवन–गाथा लाखों करोड़ों के लिए प्रेरणास्रोत बन गई।
कालजयी व्यक्तित्व, राष्ट्रसंत, युगप्रधान

आचार्य श्री तुलसी की जन्म शताब्दी

के पावन अवसर पर सादर श्रद्धाभरा नमन।

–: श्रद्धानत :–

मोहनलाल सुंदरदेवी सेठिया

● पुखराज–सरोज ● सुखराज–प्रेम ● कमल–कल्पना

राजीव–मधु, कपिल–श्वेता, विकाश–नेहा, सुनील–सुरुचि, पलक,
समृद्धि, कृति, विधि, प्रेक्षा, परिधि, विधान सेठिया

मोमासर–दिल्ली

दान से शुद्ध होता है धन

आचार्य विजय नित्यानंद सूरि

योगीराज बोले–हां, भाई अब तुमने ठीक बात पूछी है। और यही बात मैं तुझे कहने जा रहा हूं कि जैसे पारे को शौधकर शंखिये को शुद्ध करके रसायन बनाया जाता है वैसे ही धन को अगर किसी को मदद करने में, सहायता करने में लगाया जाए तो उस धन का जहरीला प्रभाव खत्म हो जाता है और आदमी के पापी हाथ पवित्र हो सकते हैं।

कहा जाता है–दान से हाथ पवित्र हो जाते हैं। जैसे तालाब में पानी इकट्ठा होने पर वह सड़ने लग जाता है। पेट में खाया हुआ भोजन जमा होने पर गंदगी बढ़ती है और गैस बनकर पेट में तकलीफें पैदा करने लगता है। किन्तु तालाब का पानी यदि खेतों में सिंचाई के लिए छोड़ दिया जाता है तो वह सड़ा पानी भी सोना, मोती उगलने लग जाता है। पेट की गंदगी मल-मूत्र भी यदि खेत में पड़ती है तो खाद बनकर फसल को नई ताकत देती है। धान्य की पैदावार बढ़ा देती है। इसी तरह घर की तिजोरी में बंद पड़ा धन, अगर किसी की सेवा में, सहायता में, मंदिर निर्माण में, स्कूल व हॉस्पिटल बनाने में, किसी भूखे को भोजन देने में खर्च कर दिया जाए तो उससे धन का जहर समाप्त हो जाता है और उससे उस पापी के हाथ भी पवित्र हो जाते हैं। उसकी आत्मा को भी बहुत चैन मिलता है।

आपने सुना होगा–अमेरिका में एक बहुत बड़ा धनाढय धनकुबेर हुआ है जान. डी. रॉक फेलर। उसने बड़ी क्रूरता व कठोरता से व्यापार में अनाप-शनाप धन कमाया। नौकरों को बहुत सताता था। उनसे कसकर कड़ी मेहनत लेता और तनख्वाह कम देता। कोई बीमार हो जाता तो उसकी तनख्वाह काट लेता, किसी के हाथ से कोई नुकसान हो गया तो उसकी भरपाई भी तनख्वाह से काटकर करता था। गरीबों की तरफ देखना तो दूर उनसे बड़ी चिढ़ थी। वह इतना हृदयहीन था कि किसी दुःखी को, विपत्ति में फंसे को देखकर दया करुणा तो दूर, सहानुभूति की दो बात भी नहीं बोलता, उल्टा उसे डांटता, गालियां देता। वह अपनी क्रूरता, कठोरता और कृपणता के लिए मशहूर था।

एक बार रॉक फेलर बीमार पड़ा। बड़े से बड़े डॉक्टरों ने इलाज किया। पानी की तरह पैसा बहाया, मगर ज्यों-ज्यों दवा की मर्ज बढ़ता ही गया। रोग सारे शरीर में फैल गया। दिन रात अशांत, बेचैन तड़फता रहता। उसके माता-पिता ने घोषणा की जो कोई इसकी बीमारी मिटा देगा उसे अपनी सारी संपत्ति का मालिक बना देंगे। रॉक फेलर ने अखबारों में छपाया-कोई चाहे जितना जितना धन ले ले, मेरी बीमारी मिटा दे। परन्तु सब कुछ बेकार।

एक दिन रॉक फेलर दुःख और दर्द से कराह रहा था। सोये-सोये उसके मन में अपने किये कर्मों के प्रति ग्लानि पैदा हुई। उसने जो-जो अनैतिक कार्य किये, दूसरों के साथ जो क्रूर और संवेदनहीन व्यवहार किया उसके प्रति पश्चात्ताप की भावना जगी। मैंने अपने जीवन में पैसे के लिए कितने पापकर्म किये। एक-एक दिन में लाखों डॉलर कमाये परन्तु कभी किसी को एक डॉलर का दान नहीं किया। जिस धन के लिए मेरे मन में अहंकार था वह आज झूठा साबित हुआ। धन से मुझे आज कुछ भी राहत नहीं मिल रही है। मैंने जब दूसरों के जीवन में कांटे बोये तो फूल कैसे मिल सकते हैं। इस प्रकार वह रात भर पश्चात्ताप के आंसू बहाता रहा और मन में संकल्प किया- ''अगर मैं इस रोग से मुक्त हो जाऊं तो अपनी सारी संपत्ति दान में दे दूंगा–यह मेरा दृढ़ निश्चय है।'' सोचते-सोचते रॉक फेलर को नींद लग गई। सुबह जब वह जगा तो स्वस्थता और स्फूर्ति महसूस करने लगा। उसकी पत्नी ने कहा–''आज तो आपको इतने दिनों बाद गहरी नींद आई। लगता है अब डॉक्टर की दवा काम करने लगी है।''

रॉक फेलर बोला–यह किसी डॉक्टर की दवा का असर नहीं है, किन्तु मैंने खुद ही अपनी चिकित्सा कर ली है। उसने बताया अपना संकल्प और कहा–अब मैं इस धन को गरीबों में बांट दूंगा।

एक ही रात में रॉक फेलर का जीवन बदल गया। क्रूर, पापी, कंजूस रॉक फेलर मर गया और एक नया इंसान उसके अंदर पैदा हुआ। उसने अपने मैनेजर को बुलाया और कहा–यहां जितनी भी सेवा करने वाली संस्थाएं हैं उन सबकी लिस्ट बनाओ। मैं उनको थोड़ा-थोड़ा दान देना चाहता हूं। मैनेजर ने लिस्ट बनाई और उन सभी संस्थाओं के नाम चैक लिख लिखकर भिजवाए। अपने मैनेजर से उसने कहा–मैंने जीवन में आज तक जो आनंद प्राप्त नहीं किया वह आज महसूस कर रहा हूं। ऐसा लगता है मेरा सारा पाप धुल गया है। मैनेजर को आश्चर्य हुआ–मालिक को क्या हो गया है? एक-एक पैसे के लिए मरने वाला रॉक फेलर आज लाखों डॉलर के चैक साइन कर रहा है। इतना परिवर्तन कैसे आया इसमें?

परन्तु अफसोस! रॉक फेलर ने जिन सेवा करने वाली संस्थाओं को चैक भेजे, उन्होंने उसके चैक लौटा दिये कि अन्याय और अनीति से कमाया हुआ पैसा हम नहीं लेना चाहते।

रॉक फेलर ने उन संस्थाओं को पत्र लिख-''आप जिस रॉक फेलर की बात कर रहे हैं वह मर चुका है। अब तो मैं उस पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए ही यह दान कर रहा हूं। मुझे नाम और यश नहीं चाहिए। कहीं भी मुझे विज्ञापन नहीं चाहिए... आप इसे मेरी विनम्र सेवा समझकर स्वीकार कीजिए।'' इतने पर भी कुछ संस्थाएं उसका पाप का पैसा लेने को तैयार नहीं हुईं तो उसने अपने एक मित्र को बुलाया और उसे समझाकर कहा–मुझे अपने पापों का प्रायश्चित्त करना है। इसलिए यह पैसा मुझे दान करना है, परन्तु संस्थाएं इसे स्वीकार नहीं कर रही हैं। इसलिए अब तुम अमुक-अमुक संस्थाओं को यह पैसा अपने नाम से दे दो। रॉक फेलर को इस दान से बड़ी शांति मिली और अब उसका जीवन ही बदल गया।

तो इस प्रकार जहर से पैदा धन भी अमृत बन जाता है। जब आदमी के मन में अपने पापों के प्रति पश्चात्ताप होता है, ग्लानि होती है और उसके प्रायश्चित्त स्वरूप उस धन को लोक सेवा में लगा देता है।

आज भी हम देखते हैं कि जो लोग शराब के ठकों में, बूचड़खानों में, चमड़े के कारखानों में व ऐसे ही अनेक पाप कर्मों में हिंसा और क्रूरता से, भ्रष्टाचार और धोखाखड़ी से पैसा कमाते हैं। उनका जीवन इसी प्रकार दुःखी होता है और वह पाप का पैसा कोई भी लेना नहीं चाहता, परन्तु यदि वे सच्चे मन से प्रायश्चित्त करना चाहे तो भगवान उनको भी सद्बुद्धि देता है और वह पाप का धन, सेवा की खेती में लगाकर पुण्य की फसल पैदा कर देता है। ●

दीपावली की
शुभकामनाओं के साथ!

G. M. Jain
09350446332, 09953627228

Gourav Verma
09650308127

AARJAY COMMERCIAL PVT. LTD.

Authorised Dealer for Value Refrigerent Pvt. Ltd.

Dealers in:

- R-134 A • R 404 A • R 407 C • R-22
- Other Refrigerent Gases
- Copper Pipes
- All Kinds of Refrigeration Spares
- Washing Machine Spares

A-56, Ground Floor, Anarkali Garden, Jagatpuri, Delhi-110051
E-mail: gmdudheria@gmail.com, aarjay@hotmail.com

आंतरिक साज-सज्जा संबंधी वास्तु टिप्स

डिम्पल

● चहारदीवारी के बाद घर का जो मुख्यद्वार होता है, उसका दरवाजा अन्य कक्ष के दरवाजों की अपेक्षा बड़ा होना चाहिए।

● मुख्यद्वार दो पल्लों का होना चाहिए। दो पल्लों का द्वार शुभ माना जाता है। यदि घर के सभी द्वार भी दो पल्लों के हों तो अति उत्तम होगा।

● यदि आपका घर दो मंजिला है, तो इस बात का ध्यान रखें कि द्वार के ठीक ऊपर द्वार नहीं होना चाहिए।

● भवन के मुख्यद्वार के सामने कोई वृक्ष, खंभा, मंदिर इत्यादि का वेध नहीं होना चाहिए।

● घर के मुख्यद्वार के ऊपर सिंदूर में रंगे हुए अथवा श्वेतार्क से निर्मित गणपति की स्थापना अवश्य करवानी चाहिए।

● ड्राइंग रूम में टीवी हमेशा पूर्वी आग्नेय कोण में रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त दक्षिणी आग्नेय और दक्षिण में भी रखा जा सकता है।

● ड्राइंग रूम में यदि हीटर रखा जाए तो उसकी दिशा आग्नेय कोण में होनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त दक्षिण अथवा नैर्ऋत्य में भी हीटर रखा जा सकता है।

● रसोईघर में गैस चूल्हा आग्नेय-पूर्व में रखा जाना चाहिए। चिमनी में भी गैस चूल्हे के ऊपर इसी दिशा में होनी चाहिए।

● शयनकक्ष में आलमारियों का स्थान दक्षिण, नैर्ऋत्य अथवा पश्चिम दिशा की ओर होना चाहिए।

● बच्चों की पुस्तकें, कपड़े इत्यादि रखने के लिए आलमारियों को दक्षिण, नैर्ऋत्य और दक्षिण दिशा की ओर रखना चाहिए।

● घर में सीढ़ियों के नीचे वाले स्थान पर शौचालय एवं स्नानागार नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त इस स्थान पर किसी भी प्रकार का कबाड़ भी रखा जाना शुभ नहीं है।

● सीढ़ियां इस प्रकार होनी चाहिए कि उसकी कुल संख्या में 3 का भाग देने पर 2 शेष बचें। घड़ी की सुइयों की दिशा के अनुसार सीढ़ियां घुमाव लिए होनी चाहिए।

● शौचालय, पूजाघर, रसोईघर के ऊपर, नीचे, दायें अथवा बायें भाग में होना चाहिए, हालांकि शयनकक्ष के साथ भी शौचालय का निर्माण गलत होता है, परन्तु वर्तमान समय में यह परम्परा चल निकली है।

● घर का कबाड़ कदापि ब्रह्मस्थान और उत्तर-पूर्व के मध्य स्थान पर नहीं रखना चाहिए। इससे घर में दरिद्रता का निवास होता है।

● घर के विभिन्न कक्षों में प्रयोग होने वाले परदों का रंग कक्ष की दीवारों के रंग के अनुसार ही होना चाहिए। परदे गहरे रंग के हो सकते हैं, परन्तु ड्राइंग रूम में हल्के रंग के परदों का प्रयोग करना चाहिए।

● घर में बिजली के मीटर, जनरेटर, इन्वर्टर इत्यादि बिजली के सभी उपकरण आग्नेय कोण अर्थात पूर्व-दक्षिण दिशा के कोण में रखने चाहिए।

-बड़े काम के छोटे-छोटे टिप्स पुस्तक से

वैदिक चिंतन में समग्र चेतना के भाव

स्वामी चक्रपाणि

मानव के सर्वतोन्मुखी उन्नयन के उच्चतर आदर्शों और संकल्पों को लक्षित कर सुविचारित एवं सुव्यवस्थित दिशा का सृजन वैदिक चिंतन का मुख्य उद्देश्य है। सत्यान्वेषण को आत्मानुभूति का माध्यम बनाया गया। ऋषियों को जिस अखंड सत्य का साक्षात्कार हुआ वही वैदिक चिंतन की भूमिका में ग्रंथ तैयार करता चला गया। इसीलिए वेदों को अपौरुषेय कहा गया। मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने इनका प्रणयन ही नहीं, अपितु साक्षात्कार किया।

'विश्वदेवा:' की वैदिक उद्घोषणा अध्यात्म की धारा को एकांगी स्वीकार नहीं करती, अपितु उसे कर्म के सिद्धांत से जोड़कर सार्वभौमिक, सार्वदेशिक एवं सार्वकालिक बनाती है। गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मनुष्य एक क्षण के लिए भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता। वह प्रकृति के गुणों से विवश होकर कर्म करता है। यही कर्म व्यक्ति के वर्तमान और भविष्य की सार्थकता और उपादेयता सिद्ध करता है। यह निश्चित माना गया कि जीवन स्थिर सरोवर न होकर प्रवाहमान सलिला है। कर्म जीवन को गतिशीलता प्रदान करते हैं और ऊर्जावान बनाते हैं। वैदिक चिंतन कर्म और जीवन के अद्वैत संबंधों की व्याख्या है जो कर्म और अकर्म का भेद बताती है।

प्रत्येक जीवन की अपनी वैयक्तिकता होती है। लेकिन यह वैयक्तिकता समष्टि से विभक्त नहीं हो सकती। यम, नियम और मर्यादाएं केवल सामूहिक दायित्वों के निर्वहन की आध्यात्मिकता कला ही नहीं, अपितु व्यक्तित्व को गौरवान्वित करने की उदात्त शैली भी है। इसलिए ऋग्वेद में ऋषि कामना करते हैं कि हे देवो, हम न कभी नियमों को भंग करते हैं और न कभी हम नियमों को नष्ट होने देते हैं। हम तो वेद मंत्रों के अनुसार आचरण करते हैं।

वैदिक मंत्रों की भक्ति साधक को समग्रता से जोड़ती है। उसे उस स्थिति में ले जाती है

जहां प्राणी मात्र से अपनत्व एवं रागात्मक संबंध स्थापित हो जाता है। महाभारत में वेदव्यास वैदिक चिंतन की शुचिता एवं समग्रता को स्वीकृति देते हुए कहते हैं कि जैसे तेज हवा बादलों को उड़ाकर छिन्न-भिन्न कर देती है, उसी प्रकार वेद शास्त्रजनित ज्ञान काम, क्रोध, भय, दर्प और अज्ञान को शीघ्र ही दूर कर देता है।

प्रत्येक कर्म उस समय तक सद्कर्म नहीं हो सकता, जब तक उचित-अनुचित के मध्य भेद को मानव स्वीकार नहीं करता। गीता में श्रीकृष्ण बहुत उपयोगी बात कहते हैं। उनका कहना है कि बुद्धि के योग से किया गया कर्म ही यथार्थ में कर्म है। वह इस उपदेश के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि परोक्ष सत्ता मानव को कर्म के लिए स्व-विवेकता देती है, लेकिन विवेक इसलिए प्रदान करती है ताकि वह कर्म के सुफल या कुफल का अनुमान लगाया जा सके।

यजुर्वेद में 'विश्वानिदेवा:' की प्रार्थना उचित-अनुचित के प्रति मानवीय बुद्धि की सक्रियता को प्रकट करती है। संपूर्ण वैदिक दर्शन का अध्ययन करने के पश्चात आप यह अनुभव करेंगे कि साधक ईश्वर से किसी चमत्कार की आशा नहीं करता, वह भौतिक उपलब्धियों के प्रति लालायित भी नहीं है। वह आत्म परिमार्जन और आत्म परिष्कार हेतु ईश्वर की शरण में जाता है। साथ ही यजुर्वेद में यह प्रार्थना कर समग्रता से स्वयं को जोड़ता भी है- हमारे माता-पिता का कल्याण हो। संसार भर के मनुष्यों और पशुओं का कल्याण हो।

जीवन और जीव को पापी या तुच्छ समझना वैदिक चिंतन का अंग नहीं रहा है। प्रत्येक प्राणी और वस्तु पवित्र है। प्रत्येक में सम स्वरता है। इस नाते गैर और वैर के भाव उदित नहीं हो सकते। यह जीवन आनंद की अभिव्यक्ति है। यह विराट से जुड़कर और सुखद होता है। आत्मोपलब्धि से ईश्वरोपलब्धि की आध्यात्मिक यात्रा विराट जगत से मानव को जोड़ती है। वैदिक साधक 'विश्वदानीं सुमन स: स्याम' कहकर सभी प्राणियों के निरन्तर-चिरन्तर प्रसन्न चित्त रहने की कामना करता है। ●

किस मंत्र के जाप से शिवजी होंगे प्रसन्न

महादेव के विशेष मंत्रों के जाप से उनकी कृपा शीघ्र प्राप्त होती है, जिससे साधक अपनी कामना की पूर्ति करके जीवन में सफलता, सुख-शांति-प्राप्त करता है। कुछ ऐसे विशेष मंत्र जिनका शिवरात्रि से लेकर प्रतिदिन रुद्राक्ष की माला से जप करने से सुख, अपार धन संपदा, अखंड सौभाग्य और प्रसन्नता में वृद्धि होती है। मंत्रों का जाप पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए। जप के पूर्व शिवजी को बिल्वपत्र अर्पित करना चाहिए। उनके ऊपर जलधारा अर्पित करना चाहिए। निम्न मंत्र जाप करके आप शिव कृपा को पात्र कर सकते हैं-

- **ऊँ नम: शिवाय।**
- **प्रों ह्रीं ठ:।**
- **ऊर्ध्वं भू फट्।**
- **इं क्षं मं औं अं।**
- **नमो नीलकण्ठाय।**
- **ऊँ पार्वतीपतये नम:।**
- **ऊँ ह्रीं ह्रौं नम: शिवाय।**
- **ऊँ नमो भगवते दक्षिणामूर्त्तये मह्यं मेधा प्रयच्छ स्वाहा।**

-मुरली कांठेड़, दिल्ली

ब्लैक-टी से सेहत

अशोक जैन 'पोरवाल'

अपने अलग-अलग टेस्ट एवं फ्लेवर्स के कारण चाय कई प्रकार की होती है। कुछ चाय अपने अरोमा के कारण पसंद की जाती है। हेल्दी ड्रिंक के अंतर्गत निम्न चाय शामिल की जा सकती है। जैसे- ब्लैक-टी, ग्रीन-टी, हर्बल-टी, व्हाइट-टी, सीटीसी-टी एवं केमॉइल-टी आदि।

ब्लैक-टी से आशय जैसाकि हम जानते हैं बिना दूध और शक्कर वाली चाय से है। इसके सेवन करने से हम अपने दांतों को सड़ने से बचा सकते हैं, क्योंकि दांतों में सड़न दूध एवं शक्कर वाली चाय से होती है। इतना ही नहीं काली चाय दांतों में होने वाले पायरिया के उपचार में लाभदायक होती है। ऐसी चाय के सेवन से कैंसर के असर एवं कैंसर के मौजूद सेल्स को अतिशीघ्र नष्ट किया जा सकता है।

फरमेटेड पत्तियों से बनी ये चाय शरीर के इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है। फेफड़ों को धुएं के नुकसान से बचाती है। इतना ही नहीं या कोलेस्ट्रॉल को भी नियंत्रित रखती है। जिससे दिल की बीमारियों के साथ-साथ न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर की संभावना भी कम हो जाती है।

ब्लैक-टी के हैल्दी फैक्ट्स

- हमारे देश में पैदा होने वाली चाय के कुल उत्पादन में से लगभग 70 प्रतिशत की खपत यहीं हो जाती है। शेष 30 प्रतिशत चाय निर्यात की जाती है। चाय उत्पादन में हमारे देश का नंबर दूसरा है, जबकि पहले नंबर पर चीन है।
- केन्या और श्रीलंका अपने कुल चाय के उत्पादन का लगभग 95 प्रतिशत निर्यात करते हैं।
- एक कप चाय में कॉफी से आधे से भी कम मात्रा में कैफीन होता है।
- चार कप चाय से कैल्शियम की एक दिन की 21 प्रतिशत के लगभग आवश्यकता की पूर्ति की जा सकती है।
- चाय मिनरल, मैग्नीज का अच्छा स्रोत होती है जो कि हमारे शरीर के लिए आवश्यक होते हैं।
- प्रतिदिन छह कप चाय पीने से मैग्नीशियम की 45 प्रतिशत जरूरत पूरी हो जाती है।
- चाय में मौजूद 'केटाचिन्स' हमारे शरीर की क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की मरम्मत करने में विटामिन-सी और विटामिन-ई से ज्यादा प्रभावशील होते हैं।
- चाय में पाया जाने वाला पॉलोफेनाल्स नामक एंटीऑक्सीडेंट्स हमारे स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद होता है।
- ब्रिटिश वैज्ञानिकों के अनुसार चाय से डिहाईड्रट नहीं होता है, बल्कि कैफीन की अधिक मात्रा से हमारे शरीर में डिहाइड्रेट होता है। चाय कितनी भी स्ट्रांग क्यों न हो हमारे शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुंचाती है।
- पब्लिक हैल्थ न्यूट्रीशनिस्ट रक्स्टन के अनुसार चाय हमारे शरीर में तरलता की पूर्ति करती है। क्योंकि चाय में मौजूद फ्लेवनाइड्स हमारे शरीर में मौजूद टॉक्सीन को हैल्दी बनाती है।
- नीदरलैंड में 78 प्रतिशत लोग काली चाय पीते हैं। सउदी अरब में ग्रीन-टी के स्थान पर ब्लैट-टी पीना अधिक पसंद करते हैं। इसी प्रकार चीन और जापान में काली चाय का सेवन किया जाता है।
- विवेकानंद इंस्टीट्यूट कोलकाता के अनुसार काली चाय पीने से हार्ट अटैक की दोबारा संभावना 1 से 8 प्रतिशत ही होती है। जबकि चाय न पीने वालों में 40 से 80 फीसदी तक हो सकती है।

ब्लैक-टी के फायदे

- चाय के सेवन से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सर्दी जुकाम जैसी आम बीमारियों के संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है।
- चाय में मौजूद फ्लोराइड हड्डियों को मजबूत बनाता है। चाय में मौजूद फ्लोराइड दांतों में कीड़ा लगने से भी बचाता है। जिससे दांत मजबूत रहते हैं।
- चाय में पॉलिफिनॉल और एंटीऑक्सीडेंट भी मौजूद रहता है जो कि कैंसर जैसी बीमारियों से लड़ने के लिए शरीर की मदद करता है।
- चूंकि चाय के सेवन से विशेषकर ग्रीन-टी पीने से शरीर का मेटाबॉलिज्म बढ़ जाता है, इसलिए 70 से 80 कैलोरी को आसानी से बर्न किया जा सकता है।
- स्वभाव से ब्लैक-टी कैलोरी फ्री होती है किन्तु जब हम उसमें दूध, शक्कर आदि का मिश्रण करते हैं तब वो कैलोरी सहित बन जाती है।
- चाय में सीमित मात्रा मे कैफिन एवं 'टैनिन' भी मौजूद रहता है, जिससे शरीर को स्फूर्ति (ताजगी) मिलती है। एक कप चाय में लगभग 30 से 40 मिली ग्राम तक कैफीन हो सकता है।
- चाय में मौजूद एंटी-एजिंग गुणों के परिणामस्वरूप हमारा शरीर बुढ़ापे की ओर धीमी रफ्तार से आगे बढ़ता है। क्योंकि चाय बुढ़ापे के कारण होने वाले शरीर के नुकसान को कम करके बचाती है।
- चाय त्वचा में मेलानिन की पूर्ति करता है, जिससे त्वचा का रंग निखरता है। अतः यह कहना गलत है कि चाय से शरीर की त्वचा का रंग काला हो जाता है।
- चाय के सेवन से मस्तिष्क की कोशिकाओं में एक तरह से उत्तेजना पैदा होती है, जिससे हमारी सोचने समझने एवं निर्णय लेने की शक्ति भी बढ़ती है।
- चूंकि चाय हाइडेट्रेड रहने में मदद करती है, इसलिए शरीर में पानी कमी न होने पाती है।
- बोस्टन बॉयोमेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट एवं पेनसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी के शोधानुसार चाय में एक ऐसा तत्व है जो ब्रेन सेल्स तक ऑक्सीजन पहुंचने की बाधाओं को दूर करता है। जिससे उनकी कार्यक्षमता आसान हो जाती है जो कि याद्दाश्त बढ़ाने में सहायक होती है।

-ई-8/298, आश्रय अपार्टमेंट
त्रिलोचन सिंह नगर, त्रिलंगा/शाहपुरा
भोपाल-462039 (म.प्र.)

कर्म करने का सबसे श्रेष्ठ माध्यम क्या है

आचार्य शिवेन्द्र नागर

सांसारिक परिचर्चाओं में यह कथन अक्सर सुना जाता है कि वह व्यक्ति तो आलसी है या अमुक व्यक्ति तो बहुत लालची है। कभी कोई व्यक्ति कार्य आलस्य के कारण नहीं करता तो कभी लालच के कारण। सारा दिन कोल्हू के बैल की तरह जुता रहता है। अब प्रश्न यह उठता है कि कर्म करने का सबसे श्रेष्ठ माध्यम क्या है?

हम सबका शरीर एक कार की भांति है। कार का बाहरी हिस्सा हमारे तन की तरह है। इस तन रूपी कार में दो इंजन हैं। एक है मन, दूसरा है बुद्धि। परमात्मा हर कार में पेट्रोल या ईंधन की भांति है। पेट्रोल अथवा ईंधन के बिना कोई कार नहीं चलती परन्तु पेट्रोल का कार की गतिविधि से कोई सरोकार नहीं है। वस्तुत: कार्य के दो प्रेरणा स्रोत हैं- एक है मन, दूसरा है बुद्धि।

मन तो बच्चा है जी। थोड़ा कच्चा है जी। मन का स्वभाव कभी भी स्थिर नहीं है। मन तो चंचल है, प्रमादी है, बलवान है, जिद्दी है इत्यादि। मन के द्वारा प्रेरित कार्य आरंभ में तो अत्यधिक मधुर लगते हैं, परन्तु कार्य कर लेने के उपरांत एक तरह का पछतावा होता है। मन भावुक हो जाता है। विवेक से कोसों दूर रहता है। उदाहरण के लिए एक डायबिटीज के मरीज का मन तो प्राय: मीठा खाने को करता ही है परन्तु उसकी बुद्धि उसे रोक लेती है। यदि वह व्यक्ति मनचला हो जाता है तो प्रारंभ में तो सुखद अनुभव होता है परन्तु अंत में बहुत ग्लानि होती है।

कार्य करने का दूसरा माध्यम है बुद्धि। जो व्यक्ति कार्य में बुद्धि का प्रयोग करे वह है बुद्ध और जो बुद्धि के प्रयोग से कोसों दूर रहे वह है बुद्धू। बुद्धि तर्क-वितर्क, सोच-समझकर और विचार-विमर्श कर कार्य करती है। बुद्धि द्वारा आरंभ में तो कार्य कठिन लगते हैं परन्तु अंततोगत्वा एक तरह की तृप्ति का आभास होता है।

परन्तु कार्य करने का सही तरीका शब्दों में ही निहित है। हिन्दी भाषा में कार्य के कई पर्यायवाची हैं जैसे- क्रिया, काम और कर्म। क्रिया अर्थात यंत्रवत् होकर किया गया कार्य। वह कार्य जो बस किसी तरह हो रहा है। कोई जोश नहीं, कोई होश नहीं। इस तरह के आलसी कार्य को तामसी कार्य कहा जाता है। जैसे खाना तो हम खा रहे हैं पर मन बराबर टीवी पर लगा हुआ है। क्या खाया कुछ पता ही नहीं चला। यह कार्य कर्म नहीं मात्र क्रिया होता है। तामसिक कार्य करने वाला खुद तो मस्त हुआ रहता है परन्तु उसके आसपास के लोग अक्सर बहुत दुखी रहने पर मजबूर हो जाते हैं।

कुछ कार्य बड़ी काम भावना से किए जाते हैं जिसमें अत्यधिक इच्छा और कामना का तड़का लगा होता है। इस तरह के कार्य करने के बाद सफलता मिले तो सुख अन्यथा दुख का ही अनुभव होता है। इस तरह के कार्य को राजसिक कार्य कहा जाता है। राजसिक कार्य करने वाले व्यक्ति खुद तो अस्त, व्यस्त और पस्त रहते हैं परन्तु उनके आसपास के लोग खूब मस्त रहते हैं।

कार्य की पराकाष्ठा में व्यक्ति क्रिया और काम से ऊपर उठ कर वास्तविक कर्म की तरफ अग्रसर हो जाता है। शास्त्र उसे सात्विक कर्म के नाम से प्रतिपादित करते हैं। भगवान कृष्ण ने भगवद्गीता में कहा है- ''जिसे करना ही है। चाहे पसंद हो या ना हो।'' वह कार्य जिसे बुद्धि और मन का सहयोग मिले, वह उत्साह सहित व ग्लानि रहित होता है। सात्विक कार्य करने वाला व्यक्ति खुद भी सुखी रहता है और उसके आसपास के लोग भी सुखी रहते हैं।

किसी विद्वान ने कहा है मन की कामनाओं के तीर को बुद्धि की कमान में कसकर जरा एक दिशा तो दीजिए, आपकी दशा ही बदल जाएगी। परन्तु मन की कामनाओं के तीर को जरा भी बुद्धि की कमान में ढीला और दिशाहीन किया तो सच कहता हूं, दुर्दशा हो जाएगी।

जरा आजमाकर देखिएगा, बताए गए उपाय। आप पायेंगे कि न सिर्फ काम करने में मन लग रहा है अपितु जीवन में रस पहले की अपेक्षा बढ़ गया है। ●

'सहजो' सब कुछ ब्रह्म है

डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

भारत की संत महिलाओं में सहजोबाई का स्थान अद्वितीय है। सहजोबाई संत चरणदास की प्रमुख शिष्या थीं। उन्होंने संत चरणदास के संत मत, ज्ञान, भक्ति और वैराग्य से संबंधित सिद्धांतों की सरल व्याख्या कर, जन-जन तक पहुंचाया।

सहजोबाई का जन्म मेवात (राजस्थान) के डेहरा नामक स्थान में, एक ढूंसर वैश्य कुल में हुआ था। सहजोबाई आजीवन ब्रह्मचारिणी रहीं। उन दिनों संत चरणदास दिल्ली में निवास कर रहे थे। सहजोबाई को लगता था कि जैसे कोई अदृश्य शक्ति उन्हें दिल्ली जाकर चरणदास को सर्वस्व समर्पित करने को कह रही है और एक दिन वह उनसे मिलने चल पड़ीं। सहजोबाई ने चरणदास के सामने सिर झुका कर कहा- 'मुझे भवसागर से पार उतारिए, मेरा इस संसार में आपके सिवा कोई नहीं है।' और संत चरणदास ने सहजोबाई की भक्ति देखकर उन्हें कान में मंत्र देकर दीक्षित किया। सहजोबाई ने कहा है कि शिष्या बनकर, कान में मंत्र पड़ते ही अज्ञान मिट गया। सहजोबाई गुरु कृपा पाकर धन्य हो गई थी। वह गुरु आश्रम में रहकर साधना करने लगीं। उनकी साधना सफल हुई। उन्हें आत्मज्ञान हो गया। उन्होंने कहा कि यह शरीर पानी के बुलबुले के समान है, इसलिए प्रियतम परमात्मा से मिलने का उपाय कर लेने में ही जीवन की सार्थकता निहित है। ईश्वर के भजन में ही परम सुख है क्योंकि वह एक है और सर्वत्र व्याप्त है:

सब घट व्यापक राम हैं, देही नाना भेष।
राव रंग चंडाल घर, सहजो दीपक एक।

राम-नाम जपने में ही वह जीवन की सार्थकता मानती थी। सहजोबाई ब्रह्मज्ञानी एवं ज्ञान-योगिकी थी। उन्होंने भगवत चिंतन का स्वरूप प्रेममय स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि आत्मज्ञान अथवा आत्मसाक्षात्कार से भगवत्प्रेम की उपलब्धि संभव है। सहजोबाई ने निर्गुण और सगुण दोनों विचारों को समान रूप से माना। उन्होंने कहा-

नाम नहीं, औ नाम सब, रूप नहीं, सब रूप।
सहजो सब कुछ ब्रह्म है, हरि परगट हरि गूप।

सहजोबाई ने अपनी भक्ति, वैराग्य, ज्ञान योग और उपासना के द्वारा संत साहित्य की श्रीवृद्धि में अमूल्य योगदान दिया है।

सहजोबाई अपने गुरु की अनन्य भक्त थी। उन्होंने यहां तक कह दिया था कि यदि मुझे हरि को छोड़ना पड़े तो मैं बड़ी प्रसन्नता से छोड़ सकती हूं, पर गुरु का त्याग मेरे लिए किसी भी स्थिति में संभव नहीं है। हरि तो जन्म देते हैं, पर गुरु जन्म-मरण से मुक्ति देते हैं। गुरु ने मुझे आत्म दीपक दिया और मैंने उस दीपक के प्रकाश में आत्मसाक्षात्कार किया सहजोबाई ने कहा-

परमेसुर सों गुरु बड़े,
गावत वेद पुरान।
'सहजो' हरि के मुकति है,
गुरु के घर भगवान॥
चिंउटी जहां व चढ़ि सकै,
सरसों न ठहराय।
सहजो कूं वा देस में,
सतगुरु दई बयाय॥

सहजोबाई ने अपने ग्रंथ 'सहज प्रकाश' में अत्यंत मौलिक ढंग से गुरु तत्व की व्याख्या और गुरु के प्रति निष्ठा व्यक्त की है। उनकी यह रचना संत साहित्य को एक बहुत बड़ी देन मानी गई है। सहजोबाई ने अपनी भक्ति, वैराग्य, ज्ञान योग और उपासना के द्वारा संत साहित्य की श्रीवृद्धि में अमूल्य योगदान दिया है। उनकी भक्ति में किसी प्रकार का भेदभाव न था-

सहजो मैल कुचैल जल, मिलै सु गंगा होय।
साध असंगी संग तजै, आतम ही को संग।

बुद्धि है वरदान

लाजपत राय सभरवाल

महाभारत के उद्योग पर्व में प्रश्न पूछा गया है कि जब सर्वशक्तिमान ईश्वर किसी की रक्षा करना चाहता है या उसे नष्ट करना चाहता है, तो वह क्या करता है? उत्तर में कहा गया है कि ईश्वर जिनकी रक्षा करना चाहता है, उसे उत्तम बुद्धियुक्त कर देता है। पर जब वह किसी को नष्ट करना चाहता है तो इसके लिए विष या कोई तेज धार शस्त्र का उपयोग नहीं करता। केवल उस मनुष्य की बुद्धि भ्रष्ट कर देता है ताकि वह स्वयं ही कुमार्ग पर अग्रसर होकर अपना सर्वस्व मिटा दे। जब बुद्धि का हरण हो जाता है तो ऐसे व्यक्ति की दृष्टि नीच कर्मों की ओर झुक जाती है। बुद्धि का पतन होने पर सत्य के मार्ग से भटक कर अज्ञान और अविद्या की ओर झुक जाता है। मनुष्य की बुद्धि का अव्यवस्थित या दोषपूर्ण होना ही सभी दुखों का

मूल कारण है।

वैदिक विचारधारा यह कहती है कि बुद्धि ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ वरदान है। बुद्धि के द्वारा व्यक्ति अपना समाज और राष्ट्र का कल्याण कर सकता है। कल्याणकारी कर्मों द्वारा व्यक्ति लौकिक संपदा का स्वामी तो बनता ही है, वह ईश्वर के आनंद का उत्तराधिकारी भी बन जाता है। मेधा बुद्धि प्राप्त व्यक्ति कठिन से कठिन और सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय सरलता से समझ पाता है। यजुर्वेद का एक मंत्र है।

यां मेधा देवगणः पितरश्चोपासते
तया मामद्य मेधाविनं कुरु

अर्थात् हे ईश्वर! हम मेधा बुद्धि को इसी जन्म में प्राप्त करें। ईश्वर हमारी बुद्धियों को दुर्गुणों और व्यसनों से हटा कर सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें। तीव्र इच्छा शक्ति और निरंतर स्वाध्याय और प्रयास से बुद्धि का विकास और शुद्धि संभव होती है।

मनुष्य और पशु के बीच की लक्ष्मण रेखा बुद्धि है। मनुष्य को बुद्धित्व ही पशुत्व से निकालकर मनुष्यत्व प्रदान करता है। ज्ञान की प्राप्ति के लिए बुद्धि और आनंद की प्राप्ति के लिए ज्ञान का होना जरूरी है। परोपकार और शुभकर्म की भावना केवल सद्बुद्धि से ही आती है और यही इसका लक्षण है।

परमात्मा से मिलन के लिए आत्मिक सुधार जरूरी

आचार्य सुदर्शन

परमात्मा के संपूर्ण गुणों से युक्त उनका अंश 'आत्मा' हमारे अंदर है, हम अपनी आत्मा के संपर्क में रहकर परमात्मा से जुड़ने का प्रयास करें, बड़े ही आश्चर्य की बात है कि आज हर व्यक्ति परमात्मा को प्राप्त करना चाहता है। दिन-रात वह इसी प्रयास में लगा रहता है कि वह परमात्मा को प्राप्त कर ले। वह इसके लिए पूजा-अर्चना, हवन, पाठ, आदि माध्यमों का सहारा लेता है, लेकिन सही मायने में वह परमात्मा को पाने का प्रयास करता ही नहीं है। ये तमाम चीजें तो एक परम्परा के तहत चली आ रही हैं। सभी लोग, उन्हीं बातों में लगे हुए हैं, लेकिन वे कोई सकारात्मक प्रयास नहीं करते।

अगर किसी व्यक्ति को परमात्मा को प्राप्त करना है तो उसे स्वयं ही प्रयास करना होगा। दुनिया में आज तक कोई ऐसा गुरु नहीं हुआ है, जो हमारे बदले में तपस्या कर ले और उसका फल हमें प्राप्त हो जाए। तमाम गुरु तो हमें मार्ग बताने वाले हैं, वे हमारे बदले में कार्य करने में समर्थ नहीं हैं। कोई व्यक्ति किसी महापुरुष को जिस भाव से आमंत्रित करता है, उसे उसका फल भी उसी भावरूप में ही मिलता है, जो लोग हृदय से आमंत्रित करते हैं, तो दोनों लोगों के हृदयों का मिलन होता है और इसके बाद जो फल मिलता है वह भी सकारात्मक होता है। जब उनके हृदय से दुआ या आशीर्वाद निकलता है तो वह बहुत ही प्रभावकारी होता है। जब आप दीपावली के अवसर पर अपने घर में लक्ष्मी के आगमन पर उनके स्वागत के लिए अपने घर की साफ-सफाई करते हैं, दीवारों पर रंग-रोगन करते हैं और फिर दीप जलाकर माता लक्ष्मी के आगमन की प्रतीक्षा करते हैं। आप सोचते हैं कि माता लक्ष्मी के आगमन पर उन्हें कोई कठिनाई न हो, वे सुगमता से आपके घर आ सकें और आपकी तैयारी देखकर प्रसन्न हो जाएं, आप दीवाली पर इतनी साफ-सफाई कर लेते हैं, लेकिन परमात्मा को तो आप चौबीसों घंटे अपने घर पर बुलाना चाहते हैं, तो क्या आपने इसके लिए अपने घर की सफाई कर ली? क्या अपने-अपने घर का कूड़ा-करकट बाहर फेंक दिया? जिस दिन आपके शरीर रूपी घर से कूड़ा-करकट निकल जाएगा, आपको परमात्मा के स्वरूप का प्रकाश धीरे-धीरे प्राप्त होने लगेगा। इसके बाद आपके शरीर का रूपान्तरण हो जाएगा।

हमारे यहां जितने भी गुरु महात्मा हुए हैं, वे कोई परमात्मा नहीं हैं, उन्होंने तो अपनी साधना के बल पर परमात्मा से सीधा संपर्क स्थापित कर लिया है और उसके विद्युत प्रवाह से उनकी ऊर्जा चार्ज हो जाती है। आप में और उस गुरु के शरीर में कोई अंतर नहीं है, वे भी भोजन करते हैं, आप भी भोजन करते हैं लेकिन उनका शरीर चार्ज हो चुका है और आपका शरीर अभी चार्ज नहीं हुआ है। चुम्बक और सामान्य लोहे में जो अन्तर होता है, वही अंतर आपके शरीर और गुरुओं के शरीर में होता है। चुम्बक एक चार्ज लोहा है, लेकिन सामान्य लोहा चार्ज नहीं किया जाता। इसलिए जिस दिन आपकी वृत्ति जाग जाएगी और आपके शरीर की ऊर्जा चार्ज करने के लिए किसी मेन लाइन से जुड़ जायेंगी, उस दिन से आपको संतत्व और बुद्धत्व की प्राप्ति हो जाएगी, आपको परमात्मा के क्षेत्र में प्रवेश की अनुमति मिल जाएगी, अत: आप परमात्मा की चिंता छोड़ दें। सबसे पहले अपने आत्मिक सुधार की बात करें।

जिस दिन आपका शरीर चार्ज हो जाएगा, उस दिन से आपके शरीर का एक-एक क्षण महोत्सव हो जाएगा, एक-एक पल प्रसन्नता से भर जाएगा। इसके लिए आपको केवल रूपांतरित होने की आवश्यकता है। जिस क्षण आप रूपांतरित हो जायेंगे, उसी क्षण परमात्मा आपको एक पात्र समझकर उसमें प्रवेश कर जायेंगे। सभी जानते हैं कि लोहे और लकड़ी में से लोहे के द्वारा तो विद्युत प्रवाह हो जाता है, लेकिन लकड़ी के माध्यम से यह असंभव है। लकड़ी तो ऊष्मा या विद्युत का कुचालक होता है, जबकि लोहा इनके लिए सुचालक का रूप धारण कर ले, ताकि जैसे ही परमात्मा की धारा छूटे, वह सीधे आपके शरीर में प्रवेश कर जाए, उस समय आप भी अपने को इस संसार से ऊपर उठा हुआ महसूस करेंगे। वे संत लोहे ही होते हैं, जो अपने को चार्ज कर चुके हैं और उसके बाद उनके जीवन में दु:ख-सुख का कोई स्थान नहीं रहता। आपने उन्हें पुण्य-माला पहना दी, उन्होंने पहन ली, उन्हें कोई चिंता नहीं, कोई रोग-द्वेष नहीं रहता।

जो दु:ख और सुख से ऊपर उठ जाए वही तो परमात्मा का सच्चा भक्त है। कृष्ण ने अर्जुन से कहा था-"तुम सुख और दु:ख से ऊपर उठ जाओ। इनसे ऊपर उठने की कला का नाम है-परमात्मा को पाने का एक प्रयास।" आप किसी मंदिर या धार्मिक स्थल पर जाकर रामचरितमानस या किसी अन्य पुस्तक का पाठ करते हैं। कभी आप अपने शरीर पर भी रामचरितमानस का पाठ कर लें। आप गंगा स्नान से केवल अपने शरीर को धोते हैं। शरीर को धोने से कुछ नहीं होगा, आप अपने शरीर के अंदर के विकारों को धोने का प्रयास करें। आप अपने अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मद एवं मोह को गंगा में विसर्जित कर दें। गंगा स्नान का अर्थ ही होता है कि गंगा में प्रवेश के उपरांत अपनी बुराइयों का विसर्जन कर देना। लोग हवन कुंड बनवाते हैं और आत्मकल्याण यज्ञ भी करवाते हैं, जिसे महाराज परीक्षित ने भी करवाया था। आत्मकल्याण यज्ञ अर्थात जिस यज्ञ की आप अपनी भलाई के लिए करते हैं। कुछ लोग विश्व कल्याण के लिए भी यज्ञ करवाते हैं, कुछ यज्ञ देश कल्याण के लिए भी होते हैं। लेकिन सबसे पहले आप अपने कल्याण के लिए हवन करें और उस हवन कुण्ड में अपने शरीर की तमाम दुष्प्रवृत्तियों और बुराइयों को भस्म कर दें। इसके बाद आप निष्पाप, निष्कलंक, सरल, सुगम और बोधमय हो जायेंगे और तभी आप परमात्मा को अपने अंदर बुलाकर बैठा सकेंगे। ●

तुलसी में दियना जलाए हो माय

प्रो. अश्विनी केशरवानी

दीपावली आज केवल हिन्दुओं का ही त्योहार ही नहीं है बल्कि सभी वर्गों और सम्प्रदायों के द्वारा मनाया जाने वाला एक राष्ट्रीय त्योहार है। राष्ट्रीय एकता के प्रतीक यह त्योहार लोगों में आपसी सौहार्द बनाये रखने में सहयोग करता है। दीपों का यह पर्व खुशियों का प्रतीक है। भगवान श्रीरामचंद्र जी 14 वर्ष वनवास के दौरान अनेक राक्षसों और रावण जैसे शूरवीरों को मारकर जब अयोध्या लौटे तो न केवल अयोध्या में बल्कि पूरे ब्रह्मांड में दीप जलाकर खुशियां मनायी गयी थी और उनका स्वागत किया गया था। तब से दीप जलाकर इस पर्व को मनाने की परंपरा प्रचलित हुई। बुंदेलखंडी लोकगीतों में इस बात का उल्लेख मिलता है कि रामायण काल में दीवाली जेठ मास में मनायी जाती थी जिसे द्वापर युग में श्रीकृष्ण के जन्म के बाद कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष में मनायी जाने लगी।

दीपावली की तैयारी एक महीने पूर्व से शुरू हो जाती है। ऐसा लगता है जैसे इसका ही हमें इंतजार था। दीपों के इस पर्व के साथ घरों और दुकानों की साफ-सफाई और रंग-रोगन भी हो जाता है। साफ-सफाई से जहां साल भर से जमते आ रहे कचरा और गंदगी की सफाई हो जाती है और ख्याल से उतरे कुछ जरूरी सामान और कागजात की छंटाई सफाई हो जाती है। व्यापारी वर्ग के लिए तो यह नये वर्ष की शुरुआत होती है। पुराने हिसाब-किताब बराबर करना और नये खाता बही की शुरुआत जैसे लक्ष्मी आगमन का प्रतीक है। रंग-रोगन से जहां मकानों और दुकानों की शोभा बढ़ जाती है, वहीं टूटे-फूटे मकानों, दीवारों और सामानों की मरम्मत आदि हो जाती है।

मान्यता भी यही है कि साफ-सुथरे जगहों में लक्ष्मीजी का वास होता है और संभवत: लोगों का यह प्रयास लक्ष्मीजी को बहलाने फुसलाने का माध्यम भी होता है। इससे एक ओर तो धन्ना सेठों के घर चमकने लगते हैं वहीं दाने-दाने को मोहताज लोग एक दीप भी नहीं जला पाते।

कार्तिक अमावस्या को मनाये जाने वाले इस त्योहार के प्रति पुराने जमाने में जो खुशी और उत्साह होता था उसका आज पूर्णत: अभाव देखा जा सकता है। आज दीवाली के प्रति लोगों की खुशियां कृत्रिम और क्षणिक होती है। जबकि पुराने समय में दीवाली के आगमन की तैयारी एक माह पहले से शुरू हो जाती थी। इस दिन सबके चेहरे पर रौनक होती थी। सभी आपसी भेद-भाव को भूलकर एकता के सूत्र में बंध जाया करते थे। ऊंच-नीच, अमीर-गरीब, छूत-अछूत जैसा भेद नहीं होता था बल्कि आपसी समझ-बूझ से लोग यह त्योहार मनाया करते थे। पर्व और त्योहारों का संबंध आजकल मन से कम और धन से ज्यादा होता है। संपन्नता विशेष आयोजनों और त्योहारों को विभाजित कर देती है, विपन्नता तो महज जीवन को जिंदा रखती है और मरने भी नहीं देती।

छत्तीसगढ़ में कार्तिक मास को धरम महीना कहा जाता है और इस मास में तुलसी चौरा में दीया जलाना बड़ा शुभ माना जाता है। कवि भी यही कहते हैं-

कातिक महिना धरम के रे माय।
तुलसी में दियना जलाए हो माय॥

दीपों का यह त्योहार खुशी, आनंद और भाईचारा का प्रतीक माना जाता है पर बदलते परिवेश में इसकी परिभाषा फिजूलखर्ची और दिखावे ने ले लिया है। इससे मध्यमवर्गीय परिवारों का आर्थिक ढांचा बहुत हद तक चरमरा जाता है। हमारे समाज में उच्च-मध्यम और निम्नवर्गीय लोग रहते हैं। उच्चवर्ग का फिजुलखर्ची और भोंडा प्रदर्शन मध्यम और निम्नवर्गीय लोगों को बरगलाने के लिये काफी होता है। कुछ लोग तो इन्हें हेय समझने लगे हैं। निम्नवर्ग तो हमेशा यही समझता है कि अमीरों के लिये ही सभी त्योहार होते हैं। सबसे ज्यादा आर्थिक और सामाजिक बोझ मध्यम वर्गीय परिवारों के उपर ही पड़ता है। उनकी स्थिति सांप और छुछंदर जैसी होती है। मेरा अपना अनुभव है कि कुछ लोग इस कोशिश में रहते हैं कि अपनी दीवाली सबसे ज्यादा रंगीन और आकर्षक हो। सामाजिक जुड़ाव के लिये आर्थिक संपन्नता का भोंडा प्रदर्शन के बजाय व्यावहारिक होकर सादगी से इस पर्व को मनाना उचित होगा।

-राघव डागा कालोनी
चांपा-495671 (छत्तीसगढ़)

तेजपत्ते से घरेलू उपचार

● पेट में कीड़े या मरोड़ पड़ने पर तेजपत्ते का काढ़ा पीने से आराम मिलता है। काढ़ा बनाने के लिए 2 कप पानी में 2 तेजपत्ते और एक चुटकी हींग डाल कर उसे तब तक उबालें, जब तक कि आधा न रह जाए। फिर उसे छानकर पी लें।

● सिर दर्द में भी तेजपत्ता अपना जादू दिखाता है। इसके चूर्ण को पानी में मिला कर माथे पर लगाने से आराम मिलता है।

● अगर आप दांतों में कीड़े या दांतों के पीलेपन की समस्या से परेशान हैं तो तेजपत्ते के औषधीय गुण आपको इन समस्याओं से राहत दिला सकते हैं। इसके चूर्ण का मंजन की तरह दिनों में दो बार दो मिनट के लिए इस्तेमाल करें।

● तेजपत्ते का तेल प्रभावित जगह पर लगाने से राहत मिलती है।

● तेजपत्ते के तेल से रात में मालिश करने से जोड़ों के दर्द से राहत मिलती है।

● भोजन में तेजपत्ते के नियमित सेवन से पाचन शक्ति मजबूत होती है।

-वृति महाजन

DELICIOUS FOOD FOR THE SOUL

Sri Sri Ravishankar

Meditation is the journey from movement to stillness, from sound to silence. The need is present in you to meditate because it is your natural tendency to look for undiminished joy and love that doesn't distort or turn negative.

Is meditation alien to us? That's not true because you have been in meditation even before your birth. In the womb you were doing nothing. You didn't even have to chew food; you were fed directly and you were happily floating in fluid, turning and kicking. That is meditation or absolute comfort. You did nothing, everything was done for you. Isn't it natural for us to crave for that state of absolute comfort? And getting back to that state which you have had a taste of, just before entering the hustle and bustle of the world is very natural because everything in the universe is cyclic, and wants to go back to its source.

The natural tendency is to recycle all that we've collected in life as impressions, getting rid of them and getting back to the original state we were at birth is what meditation is all about. Becoming fresh again, alive, is what it is. Getting back to that serenity, your original nature, is meditation. It is absolute joy and happiness; pleasure minus excitement. A thrill without anxiety is meditation. It is love without hatred or any of its opposite values.

Meditation is food for the soul. When you are hungry, spontaneously you eat something. If you are thirsty you drink water. Similarly, the soul yearns for meditation and this tendency is in everyone. Hence, there is not a single individual who is not a seeker. It's just that they don't recognise it. The problem is that we try to look for that food where it is not available. It is like going to a grocery shop when you want to fill fuel in your car. You keep going around the grocery store saying, 'I want fuel for my car.' It won't work because you need to go to the petrol station. So, find the right direction. Meditation happens in transition. Actually meditation happens, you can't do it. You can only create a congenial atmosphere for it to happen.

Meditation is uplifting energy and mind and spreading it out. When you're happy, you associate it with a sense of expansion. And whenever you have felt miserable, you associate it with a sense of shrinking or contraction. There is something in you which expands when you're happy and contracts when you're unhappy. But we never pay attention to what is contracting and expanding. We only keep our attention outside; we have not paid attention to the reason.

Sage Gaudapadacharya said, "There is something in you that is expanding that is worth knowing." Even a glimpse of this consciousness, this energy inside you, can make the smile on your face so strong that nothing whatsoever can take it away from you. Nobody can make you miserable or take away the joy from your life. Life assumes another dimension suddenly once you glimpse something inside that is expanding. You don't have to leave things here and go. Just being amidst all the noise and still recognising that beauty is so wonderful, so fascinating, right here and now and that is meditation, which is supreme prayer. All powers are hidden within the Self and everything will manifest when you connect to your consciousness. ●

A PHILOSOPHY OF NON-DUALITY

Swami Ranganathananda

Vedanta as a philosophy of non-duality has no place for an extra-cosmic God or for anything supernatural. Close your eyes, you see Brahmn; open your eyes, you see the same Brahmn in names and forms around you. The Upanishads offer this as the highest truth. Nothing higher than that can be, when you come to unity. That universal unity is what the Indian sages discovered, by investigating the depth dimension of the human being and discovering the infinite, imperishable, and non-dual dimension of what we experience as our Self. Viewed by the senses, it is finite; on penetrating deeper, it reveals its infinite dimension; above the water level, we see the tip of a rock; but below, we realise its immense dimension. That is what you find in the Upanishads as a momentous search and discovery, conveyed in a few crisp and great utterances, known as mahavakyas.

Now, this truth about the One behind the many, the One in the many, is not the product of intellectual speculation, but of actual realisation by sages, both during the time of the Upanishads and in subsequent centuries. These truths have also been verified by a luminous succession of sages who had the capacity to rise to that level.

About a thousand years after the Upanishads, we had Gautama, who realised this truth. He became Buddha, the enlightened. He achieved jnana or bodhi, the highest jnana the non-dual or advaita jnana. A little over a 1000 years later, he was followed by Sankara. More recently, we had Ramakrishna, Vivekananda, and few others attaining realisation of Atman as the non-dual Brahmn.

Brahmn is of the nature of not only Sat, Being, and Cit,

GOOD PLANET, GOOD LIFE

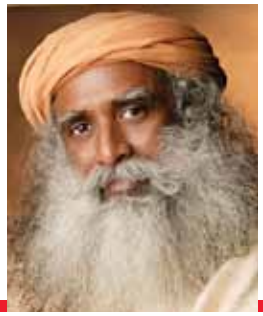

Sadhguru Jaggi Vasudev

Right now, we have the necessary technology, resource and capability to address every issue on the planet. Never before in the history of humanity have human beings been as capable as we are today. The only thing that is missing is inclusive consciousness.

We are living in a time when we have to think of protecting all that has nurtured us. For the first time we have to talk about protecting the planet. Never before did anyone have such an insane idea to protect the planet; it was the planet that always took care of us.

The preservation and nurturing of this planet is no different from aspiring for a good life for ourselves, because there is no good life without a good planet. We are looking at ecological concerns as some kind of an obligation that we have to fulfill. However, it is not an obligation, it is our life. The very breath that we inhale and exhale is just that.

Unless we feel this and experience it, I don't believe we're going to truly act in a big way. If people don't take care of the land, they will ruin the whole country. Our economic concerns are many, for sure, but we must always keep ecological concerns a part of our economic development. Otherwise, we will have to pay a big price for it. Policy-makers, industry and the public should constantly be aware of this.

Raising the consciousness of the whole world may be a long-term project in terms of work, but if the leadership experiences and truly feels this within, a huge change can be brought about in everything that we do. If the consciousness of a few key people on the planet – the way they think, feel and experience life – can be altered even a little, and if the necessary focus and investment of resources is made in the right direction, I think Mother Earth will bounce back.

If we just give her a chance, Mother Earth will turn everything back into absolute abundance and beauty. We don't have to do anything great; if we reduce the meddling to whatever extent we can, without making ourselves suffer, if we just reduce the damage that we are doing, the rest will happen by itself.

Scientific studies say that if all the insects disappear tomorrow morning from the planet, then life here will lsat only another twenty-five years. No life form will be able to survive. Including bacterial life, everything will die if the insects go away. But if human beings disappear tomorrow morning, in twenty-five years' time, earth will be flourishing. Though everything that we do is not biodegradable, fortunately, our bodies are biodegradable and so the world can do fine.

Spiritual process without concern for life around you is not a spiritual process, because anybody who looks into himself, anybody who turns inward, naturally realises that his existence and the outside existence are no different. Spirituality essentially means an all-inclusive experience when being concerned and being caring about everything around you is very natural.

It is my wish that we as a generation do not become a disaster in every sense. In our lives, if we do not do what we cannot do, there is no problem. But if we do not do what we can do, we are a disaster. ●

Consciousness, but also of Ananda, Bliss. Sensual joys are only trickles of this infinite bliss of Brahmn, proclaims Vedanta. Says the Brihadarnyaka Upanishad, This is its supreme Bliss. On a particle of this very bliss alone other beings live.

This truth is verified in the life of Sri Ramakrishna in a unique experience of his. When he witnessed in the Dakshineswar temple compound the joy being experienced by a couple of dogs who were together, he saw the bliss of Brahmn through it.

The Self in every one of us is also the Self of the universe. There cannot be two Selves, because it is of the nature of consciousness, which cannot be divided. It is akhanda, says Vedanta. Consciousness is like space, an indivisible whole; by putting up four walls, we do not really divide space. What else can divide consciousness? Consciousness can divide other things, but it remains undivided. As the Gita puts it: "In all these separate divided things of the world, Pure Consciousness is undivided but looks apparently divided. In its fullness, it is there in everything. Vedanta refers to it as Akhanda Sachidananda, undivided Existence, Consciousness, and Bliss.

This truth is corroborated by nuclear physicist Erwin Schrodinger, in an epilogue to What is Life: Consciousness is never experienced in the plural, only in the singular. Consciousness is a singular of which the plural is unknown; that there is only one thing and what seems to be a plurality is merely a series of different aspects of this one thing, produced by a deception, which in India is called Maya. ●

प्रभु की देन को बांटना सीखो

सुधांशुजी महाराज

मनुष्य बहुत कलाएं जानता है, मगर जीवन जीने की कला नहीं जानता। आज जरूरत है ऐसी आध्यात्मिक क्रान्ति की, जिससे मनुष्य की सोयी हुई शक्तियां जागृत हो जाएं। वह स्वयं को पहचाने। यह चोला नाशवान है। यह चोला आप हैं या फिर चोला आपका है? आप चैतन्य हैं और इस शरीर से भिन्न हैं। आत्मा का स्वभाव है आनंद, शान्ति, पवित्रता। हे मनुष्य! यही तेरा वास्तविक स्वरूप है, तू इसे पहचान। पवित्र मन के अन्दर परमात्मा का वास होता है। जीवन ऐसी घाटी है यहां जैसी आवाज देंगे, वही आवाज दस गुणा बढ़कर तुम्हारे कानों में वापिस आयेगी। इसलिये हम जीवन में फूल खिलाने वाले बनें, ताकि हमारी राह में फूल बिखरते जाएं, तुम कांटे मत बिखराओ जिन पर चलने में तुम्हें कठिनाई सहनी पड़े। जो व्यक्ति सुबह से शाम तक दुष्चर्चाओं में ही शामिल हो, वह एक ऐसी दलदल में फंसा हुआ है जिससे कभी निकल नहीं सकता। दुनिया के साधन कितने भी इकट्ठे कर लेना, अंत में सब कुछ यहीं छूट जाएगा।

जीवन में हर समय सतर्क रहने की जरूरत है। सावधान व्यक्ति ही सफल हो सकता है। समय की कद्र कर रहे हो तो मानो जीवन की कद्र कर रहे हो। जीवन की यात्रा कभी भी सरल नहीं होगी। विघ्न डालने के लिये हर समय, हर जगह राक्षस भी पहले मौजूद होंगे। राम के साथ रावण, कृष्ण के साथ कंस भी मौजूद था। जन्म लिया है तो सुख-दुःख आयेंगे जरूर। इस चक्र को तोड़ने के लिये दुनिया में आये हो। इसलिये कहा गया कि समय को संभाल, सामर्थ्य को पहचानने के लिये जाग, समय, सुरक्षा, स्वास्थ्य, सामर्थ्य के प्रति जाग। कोई शब्द हृदय की गहराइयों को छू जाय तो व्यक्ति में जागृति आती है। क्या करने के लिये आया था दुनिया में? तू दुनिया में फंसने नहीं, दुनिया से ऊपर उठने के लिये आया था। अपना सामर्थ्य जगा।

हे मानव तू जाग! तू परम तत्व से मिलने के लिये आया है। संसार भड़कायेगा, मोह में बांधेगा, मगर तू इन सबके लिये नहीं आया। तू जागृत हो सत्कर्म करने के लिए संसार में आया है। एक उद्बोधन व्यक्ति के लिये ज्ञान बन जाता है। जब बार-बार चोट लगाओगे कि किसके लिए भटकते-फिरते हो, दुनिया के जंजाल में क्यों फंसे हुए हो? तो जागृति आयेगी। इतने पदार्थों की जरूरत नहीं, जितना संग्रह करके दिखावा करते हो। अपने को जगाइये, जिस दिन यह जागृति आयेगी तो होश आते ही संसार को देखने का नजरिया बदल जायेगा। प्रसन्नता से भरा हुआ आदमी हो तो उसे हर जगह हंसने की बात नजर आयेगी। तमाशा देखना ठीक है, तमाशा बनना ठीक नहीं। परिचय ठीक है, अति-परिचय ठीक नहीं क्योंकि फिर कलह-क्लेश शुरू हो जाने का भय है। कोई भी व्यवहार करते समय बात में मधुरता-शान्ति बरतें, ऐसी स्थिति मत आने देना कि जाल बन जाय। होश में आ गये तो मतलब जाग गये। आपके अन्दर सुन्दरता-प्रेम भरा है तो सारी दुनिया सुन्दर और प्रेम भरी नजर आयेगी। हम अपने सामर्थ्य को जगाकर ही इस संसार में सुखी होंगे। जागृति आ गयी तो आनन्द का वह खजाना लूट सकते हो जो वह परम दयालु दोनों हाथों से लुटाने को तत्पर बैठा है। वेदों में कहा, जो जागता है उसे ही ज्ञान लाभ देगा। अंतर में परमात्मा का वास हो गया, होश आ गया तो जिधर भी जायेंगे लगेगा सब परमात्मा की पूजा कर रहे हैं। पूजा कर्म नहीं बनना चाहिये, कर्म ही पूजा बन जाये, आराधना बन जाय, कर्म ही भक्ति बन जाय तभी कल्याण सम्भव है।

यह जीवन की सच्चाई है कि जब तक जिन्दगी रहेगी, दुःख तो रहेंगे ही। दुःख शक्ल बदलकर रोज आयेगा। कभी अभाव का दुःख, कभी अज्ञान का दुःख, कभी अन्याय का और कभी शारीरिक दुःख-इनसे बचा नहीं जा सकता। दुःख न हो तो सुख की अनुभूति नहीं होगी। सुख के साथ दुःख अनिवार्य है। दुःख पुरुषार्थ द्वारा कम किया जा सकता है पर कितना कम कर लोगे? एक दुःख समाप्त होगा, दूसरा दुःख सामने होगा। समाज में रह रहे हो तो यह भी होगा कि पाप कोई करे दण्ड तुम्हें भोगना पड़े। गलती कोई करे, दण्ड समाज को भोगना पड़े। न जाने कितनी-कितनी चीजें तूफान की तरह हमारे अन्दर भरी पड़ी हैं। वेध की अचानक अग्नि प्रकट हो जाय तो यह ऐसी आग है जो दूसरों को तो जलाती ही है, मगर पहला नुकसान तो स्वयं का करेगी। लोग अपने दुःख के लिये, दुर्भाग्य के लिये दूसरे को दोषी ठहराते हैं। दुःख में व्यक्ति के सगे-संबंधी भी साथ छोड़ देते हैं, कोई सहयोग के लिये आगे नहीं आता। याद रखिये! सुख में सागर बहा दिया हो सहयोग का उसकी कीमत नहीं, दुःख में दो बूंद बहा दे सहयोग की उसकी बहुत बड़ी कीमत होती है।

देखा जाय तो सुख-दुःख जीवन में कुछ नहीं हैं, जो अच्छा नहीं लगता-वह दुःख है। अनुकूल पड़ने वाली चीज है तो सुख लग रहा है, जहां तुम बेबस हो वहां दुःखी हो। परतंत्रता दुःख देती है और स्वाधीनता सुख देती है। भगवान ने न नरक बनाया, न स्वर्ग बनाया। संसार में स्वर्ग-नरक आपके देखने के, जीने के अंदाज पर निर्भर करते हैं।

इंसान ने चांद पर जाना सीख लिया मगर धरती पर रहना नहीं सीखा। जीवन जीना सीखो-यह कला महान पुरुष सिखाते हैं। हर आदमी के अन्दर सुख-शान्ति का सागर है। कोई जीवन जीने की कला सिखा दे। जीवन में सुख आयेगा। जिस दिन होश में आ गये तो वही जीवन सुख देगा। वह जागृति गुरु देता है। पहला गुरु माता है, दूसरा पिता है जो संरक्षण करता है। इनके माध्यम से मिला जन्म अपने आप में महत्वपूर्ण माना गया है, मगर उससे भी अधिक महत्वपूर्ण माना गया है, दूसरा जन्म-द्विज होना अर्थात् इसी शरीर में होश संभालते हुए पशुता से मिटाकर, स्वेच्छारिता को छोड़कर, होश में जीना। दूसरा जन्म जिसके माध्यम से मिलता है, उसको सद्गुरु कहा गया। अंदर की दिव्यता जगाने के लिए सद्गुरु की आवश्यकता है। महान पुरुष अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीते हैं। जो हमारे हिस्से में है वह अवश्य मिलेगा, उसे कोई ले नहीं सकता, उससे ज्यादा कोई दे नहीं सकता। इसलिए प्रभु की देन को बांटना सीखो। प्रभु की देन पाकर वाह-वाह करना सीखो, हाय-हाय नहीं।

-प्रस्तुतिः जयशंकर मिश्र
संपादकः जीवन संचेतना
सी.पी.आर.ओ./मीडिया प्रभारी
विश्व जागृति मिशन,
आनंदधाम आश्रम
नांगलोई-नजफगढ़ रोड
बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-41

VALUE

The Ozone Friendly Refrigerants

AGENT IN INDIA FOR :
Daikin Arkema Refrigerants Asia Ltd.
(For 4 Series)

R134a, 404A, 407C, 410A R134a, 404A, 407C, 410A

R-134a *Butane* HYDROCARBON

Value Refrigerants Pvt. Ltd.

www.valuerefrigerants.com

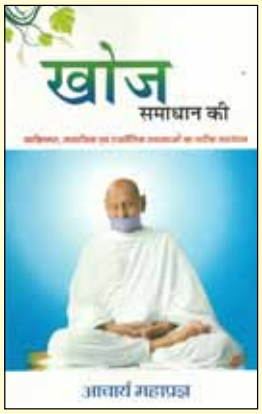

खोज समाधान की

:: ललित गर्ग ::

आज के भागदौड़ के जीवन में, रोजमर्रा की आपाधापी में अक्सर जीवन के सूत्र खोजने के लिए प्रयासरत रहते हैं। सत्य की खोज एवं समाधान की खोज हर व्यक्ति को अभीष्ट है पर उसके लिए कुशल मार्गदर्शन, सही राह एवं सही चाह की आवश्यकता रहती है। हमारे आस-पास ऐसी अनेक महान विभूतियों के अमृतकण उपस्थित हैं जिनसे हम जीवन-दर्शन का गूढ़ रहस्य सरल शब्दों में जानकर अपने जीवन को तनावों और उलझनों से दूर कर सकता है। ऐसे ही एक महान संतपुरुष एवं दार्शनिक हैं आचार्य महाप्रज्ञ। उनकी एक महत्वपूर्ण पुस्तक 'खोज समाधान की' मुनि जयंतकुमार के संपादन में प्रकाशित होकर सामने आई है जो जो समचुच व्यक्तिगत सामाजिक एवं एवं राजनैतिक समस्याओं का सटीक समाधान है। यह पुस्तक सत्य की खोज का मार्ग तो प्रशस्त करती है साथ ही साथ समस्याओं के समाधान की दृष्टि से विवेक जागृत कराने में मार्गदर्शक का काम करती है। यह पुस्तक आपैचारिक नहीं, अपितु अनुभव की गहराइयां लिए हुए है। इसलिए इसके विचार एक सामान्य व्यक्ति से लेकर सर्वोच्च व्यक्ति तक सभी के लिए बोधगम्य है। इन्हें पढ़कर सामान्य व्यक्ति जितना आनंद विभोर होता है उतना ही एक विद्वान भी। युवा यदि प्रसन्न होते हैं तो वृद्ध भी भाव विभोर हो उठते हैं। समाज, धर्म, नीति, राजनीति, अर्थ आदि विविध विषयों से संबंधित आलेख इसमें समाविष्ट हैं। यह पुस्तक धर्म और अध्यात्म की तो नई दिशाएं उद्घाटित करती ही हैं साथ ही साथ व्यक्तित्व निर्माण एवं नैतिक उत्थान की ओर भी अग्रसर करती है।

'खोज' विज्ञान व अध्यात्म-जगत् का बहुत महत्वपूर्ण शब्द है। दोनों ही क्षेत्रों में खोज आवश्यक है। बिना खोज न अध्यात्म प्राणवान रह सकता है और न ही विज्ञान नवीन आविष्कार कर सकता है।

प्रत्येक अध्याय के में प्रारंभ में अध्याय शीर्षक के अनुसार चित्र दिया गया है और समापन पर 'आपकी खोज' शीर्षक से संपूर्ण अध्याय का सार संक्षेप कुछ बिंदुओं में प्रस्तुत कर पाठक को अध्याय का मानसिक पुनरावर्तन कराने का प्रयास किया है। उसके पश्चात 'परिवर्तन की प्रक्रिया' शीर्षक से अध्याय में जिन समस्याओं का उल्लेख हुआ है उनके बदलाव का प्रयोगात्मक पक्ष मंत्र, ध्यान, संकल्प के प्रयोग प्रस्तुत किये हैं। अध्याय के बीच-बीच में कहानियों एवं कुछ वाक्यों को अलग फोंट या बोल्ड में दर्शाया गया है। जिससे पाठक एक नजर में अपने काम की समाधायक शब्दावली पाकर पूरा अध्याय पढ़ने को मजबूर हो जाए। मेरी दृष्टि में यह पुस्तक आधुनिक जीवन की गीता है, जो हमेशा अपने पास रखने योग्य है। जाने कब मन निराशा की खाई में गोता लगाने लगे और हमारा जीवन मार्ग अवरुद्ध हो जाए। इस पुस्तक को पढ़कर और इसमें सुझाव गये जीवन सूत्रों को अपनाकर आप अपने जीवन में आने वाली समस्याओं के प्रति न केवल सजग बनेंगे बल्कि व्यक्तित्व रूपान्तरण एवं विधायक दृष्टिकोण का निर्माण करने में भी हो सकेंगे। इस दृष्टि से यह कृति दीपशिखा का कार्य करेगी।

पुस्तक : खोज समाधान की
लेखक : आचार्य महाप्रज्ञ
प्रकाशक : जैन विश्वभारती
पो. लाडनूं-341306, जिला-नागौर (राजस्थान)
मूल्य : 100 रुपये, पृष्ठ : 198

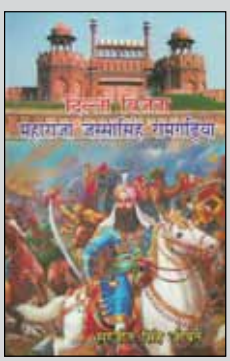

दिल्ली विजेता महाराजा जस्सासिंह रामगढ़िया

:: बरुण कुमार सिंह ::

महाराजा जस्सासिंह रामगढ़िया ने जिन विषम परिस्थितियों में अपने आपको जीवित रखा, अपने सिद्धांत नहीं छोड़े और अपने को दूसरी भूमि में आकर स्थापित किया वह महाराजा की दक्षता, कार्यशैली और व्यक्तित्व का अद्भुत उदाहरण ही माना जाएगा। पटियाला में राजा अमरसिंह पर आक्रमण करने आई मुगल सेना की कमजोरियां भांप ली तब उन्होंने दिल्ली विजय का विचार बनाया।

महाराजा के नेतृत्व में सिखों ने कश्मीरी दरवाजे से शहर में प्रवेश किया। फिर मीना बाजार हो या नक्कारखाना हो या दीवानेआम हो सभी सिखों के जयघोष से गूंज उठे। लालकिले के लाहौरी दरवाजे पर सिखों का केसरी निशान बड़ी शान से फहरा रहा था और भीतर महाराज तथा अन्य सरदार दिल्ली में गुरु साहबान से संबंधि पवित्र स्थानों के लिए मुगल बादशाह से समझौता कर रहे थे।

महाराजा रामगढ़िया ने उत्तर भारत के कई शहरों को विजित किया।

लेखक सुरजीत सिंह जोबन ने महाराजा जस्सासिंह रामगढ़िया के जीवन एवं उनकी विजय पताका से जुड़ी घटनाओं को एक जगह समेटकर प्रस्तुत किया जिससे पाठकगण अतीत रूपी इतिहास से रू-ब-रू हो सकेंगे।

पुस्तक : दिल्ली विजेता महाराजा जस्सासिंह रामगढ़िया
लेखक : सुरजीत सिंह जोबन
प्रकाशक : गौरव बुक्स
के-4/19, गली नं. 5, वेस्ट घौंडा, दिल्ली-53
मूल्य : 300 रुपये, पृष्ठ : 160

शब्द सागर

:: बरुण कुमार सिंह ::

कवि की कल्पना के साथ विवेक का तालमेल होता है, तब कविता जन्म लेती है और मानस से कंठ और कंठ से पत्र तक बहती हुई सरिता बन जाती है और ऐसी कई सरिताएं एकत्रित हो जाए तो सागर का स्वरूप धारण कर लेती है। संसार के पदार्थों और घटनाओं को सभी देखते हैं, परन्तु जिन आंखों से उन्हें कवि देखता है, वे निराली ही होती है। 'शब्द सागर' बीस काव्य सरिताओं (कवियों) का संग्रह है। काव्य के विविध रूप, विविध रस इसमें समाहित है, इसलिए यह बात स्वीकारने में हमें कोई संकोच नहीं कि इस शब्द सागर का जल कुछ खारा है तो कुछ कसैला और मीठा भी।

प्रस्तुत पुस्तक 'शब्द सागर' ऐसे ही बीस विभिन्न स्थान, परिवेश से निकलने वाली शाब्दिक दरियाओं का विलय प्रमाण है जिसमें मालवा की स्थानीय परम्पराओं संस्कारों की सोंधी महक के साथ-साथ पूरे देश में अलग-अलग प्रांतों लोक जीवन का जल समाहित है। शब्द सागर में स्थापित साहित्यकारों के साथ-साथ कुछ कम चर्चित लेकिन अच्छा लिखने का सतत प्रयास करते रचनाकारों के साथ नवोदित रचनाकार भी हैं। बीस कवियों की रचनाओं को एक ही पुस्तक में संग्रहित कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास संपादक कमलेश व्यास 'कमल' का सरहानीय है।

पुस्तक : शब्द सागर
संपादक : कमल व्यास 'कमल'
प्रकाशक : शब्द प्रवाह साहित्य मंच
ए/99, व्ही. डी. मार्केट, उज्जैन-456006 (म.प्र.)
मूल्य : 400 रुपये, पृष्ठ : 248

पचमढ़ी

सतपुड़ा पहाड़ियों के बीच प्रकृति का सौन्दर्य

पुखराज सेठिया

सतपुड़ा की पहाड़ियों के बीच स्थित पचमढ़ी को मध्य प्रदेश का कश्मीर भी कहा जाता है। चारों तरफ हरियाली, ऊंचे-ऊंचे पर्वत, दूध की धार जैसे सफेद झरने, चांदी बरसाते जल प्रपात, पहाड़ियों की गोद में बसे मंदिर, गुफाएं-इन सबका अद्भुत सौंदर्य समेटे यदि कोई पर्यटन स्थल है तो वह है पचमढ़ी। नव विवाहित जोड़ों को रोमांस की सुहानी वादियों में आकर जीवनसाथी के साथ कुछ समय गुजारना हो या प्रकृति प्रेमी पर्यटकों को किसी शांत माहौल की तलाश हो, सभी के लिए पचमढ़ी बेहद खूबसूरत जगह है। पचमढ़ी के प्रमुख प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं:

प्रकृति की अद्भुत संरचना है-जटाशंकर। मूलत: यह एक गुफा है, जिसके भीतर सीढ़ियों से गुजर कर जाना पड़ता है। बीचोंबीच तो सीढ़ियां इतनी संकरी हैं कि झुक कर लगभग घिसटते हुए चलना पड़ता है। चार भागों में बंटी इस गुफा में निरंतर बहता जलाशय इस गुफा की विशेषता है। पहाड़ों से झरते शीतल जल का सुखद अनुभव जटाशंकर पहुंच कर ही होता है। यहां दो चट्टानों के बीच कुंड के ऊपर अधर से लटकती चट्टान को देखकर कोई भी रोमांचित हुए बिना नहीं रह सकता।

पचमढ़ी से लगभग 3 किलोमीटर दूर आधा किलोमीटर नीचे उतरकर बी फाल है। पचमढ़ी की विशेष पहचान लिए लगभग 150 फीट की ऊंचाई से गिरते इस झरने के नीचे खड़े होने पर ऐसा लगता है कि जैसे प्रकृति सफेद ठंडे दूध की धारा को लगातार बरसा रही हो। चांदी सी उजली सफेद पानी की कलकल करती आवाज मन को अद्भुत अहसास से रोमांचित कर देती है। बहते झरने के पानी में नहाने का आनंद लेने से पर्यटक अपने आप को रोक नहीं सकते।

चौरागढ़ पचमढ़ी का विशेष आकर्षण है, यह पचमढ़ी के दो अलग-अलग पहाड़िया हैं जिस पर पहुंचने के लिए लगभग 1100 सीढ़ियां चढ़नी होती हैं। यहां से पचमढ़ी की विहंगम दृश्य दिखाई देता है। यहां से सूर्योदय और सूर्यास्त के मनोहारी दृश्य देखे जा सकते हैं। धूपगढ़ से सूर्योदय का दृश्य देखकर अद्भुत रोमांच होता है।

सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान करीब 525 वर्ग किलोमीटर में फैला है। यहां बारहसिंघा, चीते, तेंदुए, नीलगाय, हिरण आदि विचरते हैं। बच्चों को खेलने के लिए यहां चिल्ड्रन पार्क भी बनाया गया है। पांडव गुफाओं के बारे में कहा जाता है कि अज्ञातवास के दौरान पांडव इन गुफाओं में रुके थे। इन गुफाओं में भी सीढ़ियां चढ़ कर जाना पड़ता है, जहां ध्वनि की आवृत्ति कई गुना बढ़ जाती है। गुफा की छत से पूरी पचमढ़ी की प्राकृतिक सौन्दर्य दिखाई देता हैं।

तामिया में जंगल व पहाड़ों का सौन्दर्य, पचमढ़ी से कहीं अधिक फैला हुआ है। पचमढ़ी से 50 किलोमीटर दूर तामिया पर्वतीय स्थल है। यहां सनसेट प्वाइंट से सूर्यास्त का विहंगम दृश्य देख सकते हैं। यहा ठहरने की पर्याप्त सुविधाएं हैं।

पातालकोट पचमढ़ी से लगभग 35 किलोमीटर दूर है। पाताल में बसी बस्ती के रूप में यह पातालकोट के नाम से सुर्खियों में है। जमीन से दो किलोमीटर नीचे बसे पातालकोट के आदिवासियों के जन-जीवन को देखते समय ऐसा लगता है जैसे हमारी दुनिया से भी अलग एक दुनिया है। इसके अलावा पचमढ़ी में देखने व घूमने को बहुत स्थान व अन्य दर्शनीय स्थल भी हैं।

-एम-25, लाजपत नगर-2
नई दिल्ली-110024

चारों तरफ हरियाली, ऊंचे-ऊंचे पर्वत, दूध की धार जैसे सफेद झरने, चांदी बरसाते जल प्रपात, पहाड़ियों की गोद में बसे मंदिर, गुफाएं-इन सबका अद्भुत सौंदर्य समेटे यदि कोई पर्यटन स्थल है तो वह है पचमढ़ी।

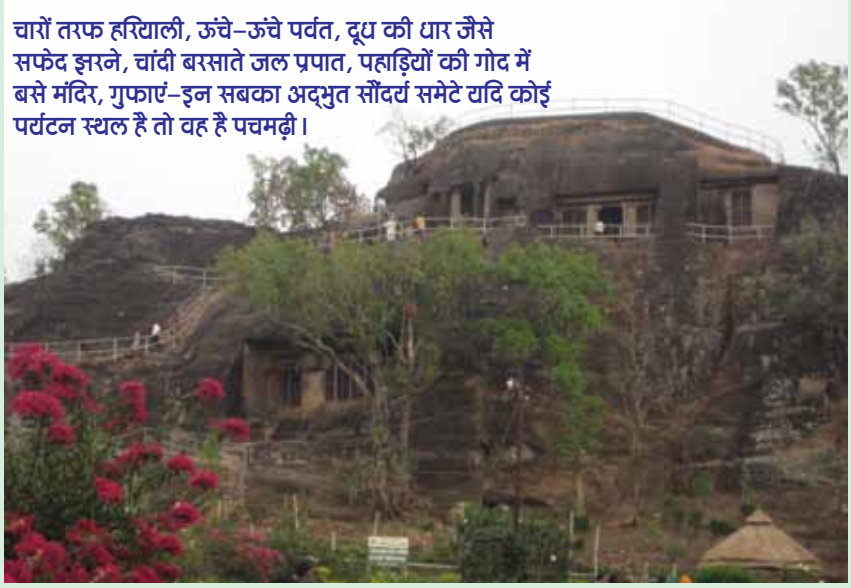

कषायों का उपशम कैसे ?

गणि राजेन्द्र विजय

प्रसिद्ध विद्वान अब्राहम ओसलो ने मानव चेतना के जिन छह स्तरों का विवेचन किया है उसकी अंतिम स्थिति आत्म साक्षात्कार में है। आत्म साक्षात्कार की यह भूमिका मनुष्य के सामाजिक आचार और मूल्यों पर आधारित है।

क्रोध, मान, माया, लोभ- ये चार कषाय हैं। तप के माध्यम से इन कषायों का उपशम करना ही साधक का प्रमुख कर्तव्य है। 'कषति इति कषाय:' जो आत्मा को कसे और उसके गुणों का घात करे वह कषाय है। 'कर्षति इति कषाय:' जो संसार रूपी कृषि को बढ़ाएं/ जन्म-मरण नाना दु:खों का वर्धन करें-जो आत्मा को बंधनों में जकड़ कर रखे, वही कषाय है। वस्तुत: कषाय आत्मा का आंतरिक कालुष्य है।

कर्म के उदय से होने वाली कलुषता कषाय कहलाती है क्योंकि वह आत्मा के स्वभाविक स्वरूप को कस देती है। क्रोध, मान, माया, लोभ के पथ में धंस कर जीव अपने स्वभाव से विस्मृत होकर त्रि-भाव (त्रिकृत भाव) में लिप्त हो जाता है जहां केवल ऐषणाएं हैं- अनवरत अतृप्ति, स्पर्धा और भोग प्रवृत्ति के साथ अधिकार लिप्सा और आत्म प्रवंचना है। जीवन एक भूलभुलैया बन जाता है, जिसमें प्रवेश के द्वार तो अनेक हैं पर बाहर आने के मार्ग अत्यंत दुष्कर हैं।

जैनधर्म में कषायों का विशद वर्णन आगमों में उपलब्ध है। दशवैकालिक निर्युक्ति (189) में कहा गया है- विश्व का मूल कर्म है और कर्म का मूल कषाय। निशीथ भाष्य (2763) में कहा गया है- सारी साधना और तपस्या को कषाय क्षणभर में नष्ट कर देते हैं।

उत्तराध्ययन (25-53) में कहा गया है- कषायरूपी अग्नि को ज्ञान, शील और तप के शीतल जल से बुझाया जा सकता है। क्रोध प्रेम का नाश कर घृणा, द्वेष और वैर का कारण है, मान विनय का, माया मैत्री का और लोभ सर्वनाशक है।

कषाय त्याग के लिए साधना, तप और एकाग्रता आवश्यक है। प्रमाद में मनुष्य विवेकहीन हो जाता है- करणीय, अकरणीय का ध्यान नहीं रहता और आत्मा के स्वरूप की हिंसा करता है। जिस प्रकार नाव के छिद्र को रोक देने से नाव डूब नहीं सकती, उसी प्रकार कषायों के अवरुद्ध होने से सभी आश्रव अवरुद्ध हो जाते हैं।

प्रेक्षाध्यान साधना एक ऐसी सिद्ध पद्धति और प्रक्रिया है जो मनुष्य की आंतरिक शक्ति का विवेकीकरण व उदात्तीकरण कर उसे आत्म साक्षात्कार व आत्मदर्शन कराती है। प्रज्ञा के जागरण का सर्वाधिक शक्तिशाली साधन है- समता और अनेकांत दृष्टि, प्रभा का सतत चैतन्य। इन्द्रियातीत चैतन्य, उसका विकास, जिसका सुखद परिणाम है- संयम, समता और शांति।

आज विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि मानव जीवन में संस्कारों का बड़ा महत्व है। ये संस्कार कम से कम पांच पीढ़ी तक चलते हैं, हेय संस्कारों का शुद्धिकरण जीवन को उच्च भाव और ऊर्ध्व मार्ग पर अग्रसर करता है। संस्कार की शुद्धि वस्तुत: आत्मशुद्धि है। जिस क्षण मन में राग, द्वेष, घृणा, जुगुप्सा, क्रोधादि कषाय उत्पन्न हो, तब अप्रमत्त भाव से उनका निषेध और निराकरण आत्मशुद्धि का हेतु बनता है।

प्रसिद्ध विद्वान अब्राहम ओसलो ने मानव चेतना के जिन छह स्तरों का विवेचन किया है उसकी अंतिम स्थिति आत्म साक्षात्कार में है। आत्म साक्षात्कार की यह भूमिका मनुष्य के सामाजिक आचार और मूल्यों पर आधारित है। इन मूल्यों के लिए भी संस्कारों का शुद्धिकरण अनिवार्य है।

आज व्यक्ति और समाज भय और चिंता से आक्रांत है। प्रसिद्ध मनोशास्त्री कर्ट राइडर का मानना है कि संपूर्ण विश्व एक सार्वभौम नियम व व्यवस्था से बंधा है। इस नियम और व्यवस्था का अतिक्रमण करके व्यक्ति और समाज दोनों भय, आतंक व चिंता से ग्रस्त होते हैं। यह अतिक्रमण ज्ञात और अज्ञात दोनों कारणों से होता है। यदि वह इस सार्वभौम व्यवस्था का पालन करें तो अभय है और निरांतक होकर चिंता से मुक्त हो जाएगा। जैन साधना पद्धति में आभ्यन्तर तप के अंतर्गत प्रायश्चित, स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग का विवेचन कषाय विजय का अमोघ अस्त्र है। निशीथ चूर्णि में आत्मालोचन और प्रायश्चित से चारित्र शुद्धि, आत्म शुद्धि, संयम, ऋजुता, मृदुता आदि का विकास माना गया है। उत्तराध्ययन सूत्र के अनुसार प्रायश्चित से व्यक्ति सभी संवेगों से मुक्त होता है। जैनधर्म में कायोत्सर्ग का भी अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। क्रोध की स्थिति में जो मानसिक और शारीरिक उग्रता व तनाव होता है उसका उपचार है- कायोत्सर्ग। जिससे स्थिरता और जागरूकता के साथ-साथ शुद्ध चैतन्य की अनुभूति होती है। भाव विशुद्धि, मानसिक एकाग्रता, अन्तर्दर्शन व विवेक-विचार, उचित-अनुचित का ज्ञान सदाचार के लिए अनिवार्य है। आचारांग में महावीर बार-बार विवेक सहित संयम में रत हो, जीवन पथ पर चलने का उपदेश देते हैं। ●

SHREE AADINATH TRADING COMPANY

BLACK DIAMOND MOVERS

COAL CONSULTANTS, COAL CO ORDINATORS, COAL MERCHANTS ,COAL HANDLING AGENTS

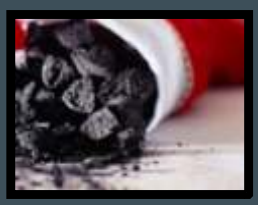

HIGHLIGHTS

- **Leading Coal Handling Agents and Coordinators since 45 years.**
- **Complete Coal Solutions under one Roof.**
- **Handling bulk Coal requirements of Power Plants, Iron and Steel Plants and Paper Mills from the various subsidiaries of Coal India Ltd.**
- **Expertise in Coal Linkage from Ministry of Coal and Coal India Ltd.**
- **Expertise in Rake Loading/Unloading and Liasioning.**

JAIN GROUP

Branches: **Assam, Madhya Pradesh Maharashtra, Uttar Pradesh Uttarakhand, West Bengal Jharkhand**

CONTACT DETAILS
Black Diamond Movers
Flat 3A, Block 11,
Space Town Housing Society,
V.I.P. Road, Raghunathpur,
Kolkata- 700052
Contact Person:
Amit Jain- +91 9412702749
Ankit Jain- +91 9830773397
blackdiamondmovers@gmail.com

Delhi Postal Regd No. DL(E)-20/5333/2013-2015
Date of Posting: 5 - 6 Every month

RNI No. DELBIL/2010/32807
November 2013

Indian
Charity & Welfare Exchange

The mission of ICWE in to achieve Global Excellence in philanthropic services and to dedicate ourselves for worldwide Donor-Donee Exchange, keeping in the view the needs and interests of the society.

ICWE is committed to :-

- The society by making a sustainable difference in the life of the less privileged children, women, aged, disabled and of those who are living in poverty & injustice.
- Work as an Exchange between Donor and Donee to facilitate their objective and to support them identifying the potential donor or donee and the opportunities that each side offers to the other side.
- Provide philanthropic advisory services to donors and NGOs to help them in their aims & objects and to perform their work properly so that they can achieve their ultimate goal to serve the under privileged sections of the society.
- Maintain a worldwide accessible data bank of NGOs, Donors and Donees to make this field more collaborative.

Advisory Services :
ICWE with its highly qualified and focused team of professionals provides specialized and valuable advisory services to NGOs, Trusts, Corporate and other philanthropic organizations on following area:

- Legal
- Financial
- Management
- Project
- Fund Raising
- Event Management

ICWE Care for All :
ICWE is committed to serving various social causes. It launched various program for underprivileged sections of the society. Main areas are:

- Children
- Women
- Aged People
- Disabled
- Education
- HIV

Register with us :

Donor: ICWE provides a global platform to Donors to identify a cause that is appropriate for their support.

Done: ICWE provides financial assistance to Individual and Institutions. It also provide a platform to searching and approaching potential donors for their cause.

Please register on website and explore the world of philanthropy.

Indian Charity & Welfare Exchange
A-56/A First Floor, Lajpat Nagar-II
New Delhi-110024, India
Phone: +91-11-41720778
Fax: +91-11-29847741

www.indiancharityexchange.com
info@indiancharityexchange.com

If undelivered please return to:
Editor, Samridha Sukhi Pariwar, E-253, Saraswati Kunj Appartment, 25 I. P. Extension, Patparganj, Delhi-110092